ओ३म्

सार्वदेशिक

अ० भा० आर्य

स म्मे ल ना ङ्क ६

पञ्चम अ० भा० आर्यसम्मेलन के प्रधान
डा० श्यामा प्रसाद मुकर्जी

मार्च
१९४४ ई०
चैत्र
२०००

सम्पादकः—
श्री पं० धर्मदेव जी सिद्धान्तालङ्कार
विद्यावाचस्पति साहित्यभूषण

वार्षिक मूल्य
स्वदेश ३)
विदेश ७ शि०
एकप्रतिका ।)

अ० भा० आर्य सम्मेलनाङ्क

विषय-सूची

सार्वदेशिक का यह पत्र मँगाने के लिये ।||) का टिकट भेजना जरूरी है ।

॥ ओ३म् ॥
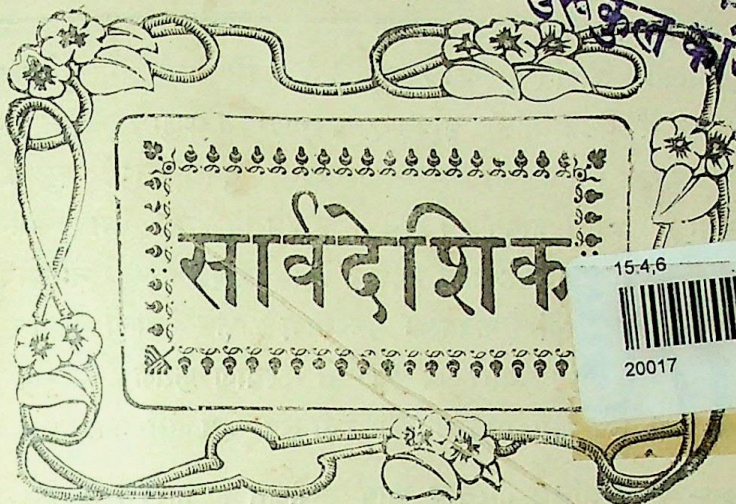
सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष २० } मार्च, १९४४ ई०] फाल्गुन २००० [दयानन्दाब्द १२१ { अङ्क १

* वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना

ओ३म् आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ यजु २२ । १२

शब्दार्थः—(ब्रह्मन्) हे परमात्मन् (राष्ट्रे) हमारे राज्य में (ब्राह्मणः) वेद और ईश्वर के जानने वाले ब्राह्मण (ब्रह्मवर्चसी जायताम्) ब्रह्मतेज से युक्त होवें (राजन्यः) क्षत्रिय (शूरः) शूरवीर (इषव्यः) बाणविद्या में निपुण (अतिव्याधी) अस्त्रशस्त्रों को दूर तक फैंकने वाला, (महारथः) महारथी-चतुर योद्धा (आ जायताम्) अच्छी प्रकार से बने (धेनुः) गायें (दोग्ध्री) बहुत दूध देने वाली हों (अनड्वान्) बैल (वोढा) भार ढोने वाले-बल-शाली हों (सप्तिः) घोडे (आशुः) तेज चलने

वाले हों (योषाः) स्त्रियां (पुरन्धिः) बहुत कर्म करने वाली और बुद्धिमती हों (रथेष्ठाः) रथ में बैठने वाला क्षत्रिय वीर गण (जिष्णुः) जीतने वाला हो (अस्य यजमानस्य) इस यज्ञ करने वाले का (युवा वीरः) युवक वीर पुत्र (सभेयः) सभ्य (जायताम्) बने (निकामे निकामे) समय समय पर आवश्यकतानुसार (नः पर्जन्यः वर्षतु) हमारे देश में बादल बरसे (नः ओषधयः) हमारी ओषधि-वनस्पतियां (फलवत्यः पच्यन्ताम्) फल वाली होकर पकें (नः योगक्षेमः कल्पताम्) हमारा सब प्रकार से कल्याण कुशल हो अप्राप्त उत्तम वस्तुओं की प्राप्ति रूप योग तथा प्राप्त की रक्षा रूप क्षेम हमें प्राप्त हो ॥

[२०-२-४४ को अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन के प्रारम्भ में इस उपर्युक्त मन्त्र द्वारा राष्ट्रीय प्रार्थना की गई]

मन्त्र का पद्यानुवाद

राष्ट्र हमारे में ब्राह्मण हों, ब्रह्म तेज से भरे हुए।
महारथी योद्धा हों क्षत्रिय, शूरवीरता भरे हुए ॥
गायें दूध बहुत देती हों, बैल बली ढोने वाले।
घोड़े तेज़, रथों में बैठे, वीर विजय पाने वाले ॥
महिलाएँ अति बुद्धिमती हों, बहु विध कार्यों में कुशल।
यह जवान यजमान पुत्र हों, वीर सभ्य प्रतिभा वाला ॥
बादल बरसें ठीक समय पर, फल वाली ओषधियां हों।
हो कल्याण सदा हम सब का, शुद्ध कार्य शुभ मतियां हों ॥

वेदोपदेश

आत्मविश्वास

[लेखक—पूज्यपाद महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन के प्रारम्भ में प्रातः २०-२-४४ के यज्ञ के पश्चात् दिये प्रवचन का सारांश]

ओं कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः ।
गोजिद् भूयासमश्वजिद् धनञ्जयो हिरण्यजित् ॥ अथर्व ७।५०।२

प्रत्येक शुभ कार्य के प्रारम्भ में भगवान् का स्मरण करना चाहिये उससे बल की प्रार्थना करनी चाहिये तथा साथ ही आत्मविश्वास की भावना को धारण करने और बढ़ाने का सदा प्रयत्न करना चाहिये। इस उपर्युक्त मन्त्र में इस आत्म विश्वास की भावना को निम्न प्रकार के शब्दों में बताया गया है :—

(मे दक्षिणे हस्ते) मेरे दाहिने हाथ में (कृतम्) किया हुआ कर्म वा पुरुषार्थ है (मे सव्ये) मेरे बांये हाथ में (जयः आहितः) विजय वा जीत रखी हुई है। मैं ईश्वर की कृपा और अपने पुरुषार्थ से (गो जित्) ज्ञानेन्द्रियों को जीतने वाला (अश्वजित्) कर्मेन्द्रिय वा राष्ट्र का विजेता (धनजित्) सब प्रकार के ज्ञानादि ऐश्वर्य का जीतने वाला और (हिरण्यजित्) वीर्य प्राण तेज ज्योति वा यश का जीतने वाला [रेतो हिरण्यम् तै० ३।१८।२।४ प्राणोवै हिरण्यम् शत: ७।५।२।८ तेजो हिरण्यम् तै० ३।१२।१५।१२ ज्योति-र्वै शुक्रं हिरण्यम् ऐ० ७।१२ यशो वै हिरण्यम् ऐ० ७।१८] (भूयासम्) बन जाऊं।

इस मन्त्र में जिस आत्मविश्वास की भावना का प्रतिपादन है उसकी बड़ी भारी आवश्यकता है। हमें मङ्गलमय ईश्वर पर विश्वास रखते हुए यह भी विश्वास रखना चाहिये कि उसकी कृपा से हमारे शुभ सङ्कल्पों की पूर्ति होगी यदि हम सदा शुभ कार्य करने में तत्पर रहेंगे। विजय हमें अवश्य ही प्राप्त होगा। अपनी ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों पर हमें विजय प्राप्त करना चाहिये। तभी हमें सच्चे ऐश्वर्य की प्राप्ति हो सकती है, हम राष्ट्र पर विजय प्राप्त करके यशस्वी और तेजस्वी बन सकते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी महाराज ने इसी आत्मविश्वास का आदर्श अपने जीवन द्वारा हमारे सामने रखा था। यदि

श्री रामचन्द्र जी चाहते तो वे भरतजी को लिखकर रावणादि राक्षसों पर आक्रमण करने के लिये अयोध्या से बड़ी भारी सेना मँगवा सकते थे; किन्तु तब उनका इतना महत्त्व हमारे मन में न रहता, उनका रामचन्द्रत्व एक प्रकार से नष्ट हो जाता। अपने पुरुषार्थ से बड़ी भारी सेना को तय्यार करके वानरों, (अर्ध शिक्षित पुरुषों) को सभ्य बना कर उनकी सहायता से राक्षसों पर विजय प्राप्त करना यही श्री रामचन्द्र जी की बड़ी विशेषता थी जिसे आज तक हम सब बड़े आदर से याद करते हैं। आज भी हमें उन लोगों का मुकाबिला करना है जो मतान्ध होकर हमारे पवित्र धर्म ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को सरकार की सहायता से ज़ब्त करने का स्वप्न ले रहे हैं। हमें पुरुषार्थ करते हुए यह दृढ़ आत्मविश्वास रखना चाहिये कि हम इस निन्दनीय प्रयत्न को निष्फल बनाने और अपने पवित्र धर्म ग्रन्थ की रक्षा करने में अवश्य ही सफल होंगे। हमें पुरुषार्थी, जितेन्द्रिय, यशस्वी और तेजस्वी बनने का सदा प्रयत्न करते रहना चाहिये और सब उत्तम गुणों और दिव्य शक्ति की प्राप्ति का पूर्ण विश्वास रखना चाहिये। ऐसा करने से हमारी शक्ति दिन प्रति दिन बढ़ती जाएगी।

अखिल भारतीय आर्य्य सम्मेलन पंचम अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष

श्री ला० नारायणदत्त जी का भाषण

देवियो और भद्र पुरुषो !

सबसे पूर्व मैं स्वागत समिति की ओर से आप सब नर-नारियों का जो इस महादेश के दूर-दूर स्थित नगरों से आकर इस सम्मेलन में भाग लेने उपस्थित हुए हैं और जिन्होंने सम्मेलन की सफलता के सन्मुख यात्रा की कठिनाइयों की भी कुछ परवाह नहीं की, उन सबका मैं हृदय से स्वागत करता हूँ और ऐसा करते हुए मैं केवल अध्यक्षप्रथा का ही अनुसरण नहीं कर रहा अपितु, अपने हृदय के सच्चे उद्गार प्रकट कर रहा हूँ। स्वागत समिति की ओर से यह निवेदन करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि वैसे तो इतने बड़े यज्ञ को रचाने के लिये पर्याप्त समय की आवश्यकता थी, परन्तु समय और परिस्थिति की गम्भीरता ने हमें विवश किया कि हम शीघ्र ही सम्मेलन बुलायें। इसलिए यदि स्वागत आदि में हमारी ओर से कोई त्रुटि रह गई हो तो पूरा विश्वास है कि आप अपने उदार हृदयों से उधर ध्यान न देते हुए इस सम्मेलन को सफल बनाने में हमें सहयोग प्रदान करेंगे।

यह बात निर्विवाद है कि यद्यपि आर्यसमाज एक धार्मिक संस्था है और इसने सामुहिक रूप से संस्था के रूप में कभी भी, किसी भी राजनीतिक आन्दोलन में भाग नहीं लिया तथापि, समय-समय पर, सरकार और विशेषतः अन्य धर्मावलम्बियों की ओर से हमारे जन्म सिद्ध सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक अधिकारों पर कुठाराघात होता रहता है। इसलिए आर्यसमाज की सार्वदेशिक प्रगति को चालू रखने तथा समाज के संगठन को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये पारस्परिक परामर्श की आवश्यकता होती है। इस दिशा में सबसे प्रथम प्रयास १६२७ में किया गया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी के अमर बलिदान से उत्पन्न हुई परिस्थिति पर विचार करने के लिये स्व० महात्मा हंसराज जी के प्रधानत्व में प्रथम सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन इसी देहली नगर में बुलाया गया था। तदुपरान्त हैदराबाद राज्य में आर्य व हिन्दुओं के धार्मिक और नागरिक अधिकारों की रक्षा का प्रश्न आने पर सन् १६३८ में शोलापुर में लोकनायक अणे जी के सभापतित्व में दूसरा सम्मेलन बुलाया गया। प्रथम सम्मेलन में आर्य समाज के आन्तरिक

संगठन के विषय में निश्चय किये गये, दूसरे सम्मेलन में धार्मिक अधिकारों की की प्राप्ति के लिये धर्मयुद्ध की घोषणा की गई और यह तीसरा सम्मेलन नागरिक अधिकारों और धर्मग्रन्थों की अक्षुण्णता की आवाज़ पर आमन्त्रित किया गया है। यदि मैं इन तीनों सम्मेलनों की तुलना बौद्धधर्म के इतिहास में बुलाई गई महासभाओं से करूं तो मैं विश्वास पूर्वक यह घोषणा कर सकता हूँ कि जिस प्रकार सम्राट् अशोक के समय बुलाई गई तृतीय संगीति (सभा) ने बौद्ध धर्म को अमर बना दिया, उसी प्रकार डा० श्यामा प्रसाद मुकर्जी के नेतृत्व में बुलाया गया यह तृतीय सम्मेलन आर्य समाज और हिन्दुस्थान के इतिहास में ज्योति-स्तम्भ बन कर मार्ग प्रदर्शन करता रहेगा।

आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने जब आर्यसमाज का कार्य अपने हाथों में लिया तो जहां तक मैं सोच सका हूँ, उनका उद्देश्य समस्त संसार का सुधार करना था। इसीलिए उन्होंने आर्य्य समाज का छठा नियम बनाया कि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। आर्य समाज कोई सम्प्रदाय विशेष नहीं, अपितु, यह एक सार्वभौम और सार्वकालिक धर्म की प्रचारक संस्था है। मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि आर्य समाज अपने आचार-व्यवहार से इतना ऊंचा उठे कि अन्य धर्म वाले इसे सच्चे अर्थों में संसार की उपकारक संस्था समझें, इसके सदस्यों का जीवन इतना पवित्र हो कि वे दूसरों को अपनी ओर आकृष्ट कर सकें, और इसका संगठन इतना सुदृढ़ हो कि प्रत्येक मनुष्य ऐसी बलवती संस्था का सहयोग प्राप्त करने के लिए लालायित हो उठे। आर्य समाज ने अपने सिद्धान्तों के प्रचार में तो बहुत सफलता प्राप्त की है, मैं चाहता हूँ कि हम अपने व्यवहार में भी इतनेसफल हों कि लोग हमारी ओर आप से आप खिंचे चले आवें। जहां तक मैंने महर्षि के ग्रन्थों का अनुशीलन किया है मेरी यह दृढ़ सम्मति है कि जहां-जहां सच्चाई, प्रेम, सद्व्यवहार शीलता आदि गुणों का निवास है, वहां-वहां आर्यत्व की निर्मल मन्दाकिनी प्रवाहित होती है। उपरोक्त गुण जिस व्यक्ति में पाये जाते हैं, वह किसी जाति में, किसी देश में, किसी धर्म में व किसी नस्ल में ही क्यों न पैदा हुआ हो, मेरी सम्मति में वह आर्य ही है और ऐसे भद्र पुरुष जिस समाज में प्रविष्ट हों, वह आर्य समाज कहला सकता है। यह ठीक है कि प्रत्येक संस्था के अपने नियम होते हैं और उसमें प्रविष्ट होने के लिये उसके

सिद्धान्तों को मानना आवश्यक होता है, फिर भी यदि कोई मनुष्य बहुत नेक है, उसका व्यवहार उत्तम है, उसका आचरण पवित्र है, उसका हृदय देशप्रेम और धर्मप्रेम से भरपूर है, ऐसा मनुष्य यदि हमारे आधारभूत सिद्धान्तों में आस्था रखता है और किन्हीं अन्य सिद्धान्तों पर तनिक सा मतभेद है, तो मैं उसे आर्य कहूँगा और उसका अधिकार समझूंगा कि वह आर्य समाज के संगठन में प्रविष्ट हो सके। जब तक आप अपने हृदयों को इतना विशाल न बनायेंगे कि आधारभूत सिद्धान्तों में परिवर्त्तन किये बिना प्रत्येक सज्जन पुरुष को आप अपने संगठन में हज़म कर सकें, तब तक बहुत पढ़े-लिखे, विचारशील मनुष्य हमारे समाज में प्रविष्ट होते हुए संकोच करते रहेंगे और इसीलिए हमारा संगठन उतना बलवान् नहीं बन पाता जितना हम चाहते हैं। सम्भव है कि मेरे विचार से कुछ लोग सहमत न हों और इसे तुरन्त कार्यान्वित भी न किया जा सके तथापि, आप लोगों के विचारार्थ मैंने अपनी सम्मति प्रस्तुत की है।

वैदिक राज्य पद्धति

आर्य समाज, वैदिकधर्म को मानता है और उसका यह दावा है कि वैदिक धर्म किसी देश व जाति विशेष के लिये नहीं अपितु, समस्त मानव समाज के कल्याण के लिये है। इसलिये हमारा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि हम वैदिक राजनीति को संसार के समक्ष प्रस्तुत करें। इसी लिये मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि आर्य्य समाज की ओर से एक ऐसी समिति बनाई जाये जो वर्त्तमान स्थिति को दृष्टि में रखकर साधारणतः संसार के लिये और विशेषतः भारत के लिए वैदिक राज्यपद्धति (विधान) का निर्वाण कर जनता के सन्मुख उपस्थित करे जिससे कि संसार को पता चल सके कि वैदिक राज्यपद्धति क्या है? मेरा विश्वास है कि एक समय ऐसा अवश्य आयेगा जब सब देशों के लोग उस राज्यपद्धति का अनुसरण करने को उद्यत होंगे। जिस दिन ऐसी पद्धति प्रचलित होगी उसी दिन सच्ची शान्ति स्थापित होगी।

अछूतोद्धार

वैदिकधर्म की दृष्टि में समस्त मानव समाज एक है। जन्म के कारण न कोई छोटा है और न कोई बड़ा। न कोई ऊँचा है और न कोई नीचा और सब परस्पर भाई-भाई हैं। वैदिक धर्मावलम्बी भली प्रकार जानते हैं कि अछूतपन की

नींव हमारे देश में किस प्रकार पड़ी ? इस थोड़े से समय में उन सब कारणों पर प्रकाश डालना असम्भव है। आर्य समाज ने देश के इस कलङ्क को मिटाने में जो भागीरथ प्रयत्न किया है और जो बलिदान और सेवा की है वह किसी से छिपी हुई नहीं है। केवल इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि अछूतोद्धार के निमित्त सबसे पहले और सबसे अधिक काम आर्य समाज ने ही किया है। महात्मा गांधी ने भी अछूतोद्धार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया और इसमें सन्देह नहीं कि उन्होंने इस निमित्त अथक कार्य भी किया, परन्तु उन्होंने 'हरिजन' का विशेष नाम देकर हिन्दुओं से पृथक् एक नवीन जाति की सृष्टि कर डाली। इसके विपरीत आर्य-समाज ने उन्हें आर्य बनाकर समाज में दूसरों के बराबर स्थान देने का अपूर्व कार्य किया है। इसके बावजूद भी मैं निःसंकोच यह कह सकता हूँ कि यद्यपि हिन्दुओं ने भी इस ओर सहायता दी तथापि, अछूतपन का रोग अभी तक दूर नहीं हुआ। जब तक अपने देश में यह रोग विद्यमान है, तब तक आर्य जाति के मस्तक पर से यह कलङ्क का टीका दूर न होगा।

हाल ही में डा० अम्बेडकर ने कानपुर में कहा कि हिन्दुस्थान में तीन जातियां हैं। हिन्दू, मुसलमान और अछूत। यही चाल हमारे शत्रु सदा से चले आ रहे हैं। यदि कहीं अम्बेडकर साहब का जादू चल गया तो पाकिस्तान के साथ अछूत-स्थान का प्रश्न भी हमारे सामने उपस्थित होगा। यदि सचमुच ही अछूत लोग अपनी स्थिति में सुधार चाहते हैं और वे अपने को हिन्दुओं का अङ्ग समझते हैं तो उन्हें डा० अम्बेडकर की योजना की तीव्र भर्त्सना करनी चाहिये। इसी सिल-सिले में मैं आर्य युवकों से अपील करना चाहता हूँ कि वे हिन्दुस्थान के सब हिस्सों पर छा जायें और इस रोग को देश से निकाल फेंके तथा जगह-जगह पर यह घोषणा कर देवें कि वैदिकधर्म में अछूतपन को कोई स्थान नहीं है। वे केवल घोषणा ही न करें, परन्तु अपने अमल से इस कलङ्क को सदा के लिए मिटा देवें। मैं सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों से अपील करता हूँ कि वे इसके लिये विशेष प्रकार का प्रोग्राम बनाकर कार्य्य करें।

साम्प्रदायिक निर्णय

वैदिक राज्यपद्धति में योग्यता को ही कसौटी माना गया है। यद्यपि हमारे देश में जाति और सम्प्रदाय पहले भी थे, पर देश के शासन पर उनका कोई

प्रभाव न था। हमारे दुर्भाग्य से ब्रिटिश शासन ने भेद नीति का आश्रय लेकर देश की अखण्डता पर कुठाराघात किया। इसकी सर्व प्रथम चोट सिक्खों पर की गई। उन्हें राजनीतिक दृष्टि से हिन्दुओं से पृथक् कर दिया गया। यद्यपि सिक्खों का धर्म संस्कृति, इतिहास, भाषा, रहन-सहन, सब हिन्दुओं का सा ही है। उनके गुरु हिन्दुत्व के लिये ही जिये और मरे, फिर भी आज सिक्ख अपने को हिन्दुओं से पृथक् करने को तुले हुये हैं। अभी तक तो पंजाब में ही सिक्ख एक पृथक् जाति करार दिये गये थे, किन्तु अब यह आवाज यू० पी० से भी सुनाई पड़ने लगी है। वहां भी ये अपने को एक पृथक् अधिकारों का दावा करने लगे हैं। सिक्खों को यह अधिकार तो प्राप्त है कि वे अपने धर्म का प्रचार कर सकें, परन्तु भोले-भाले लोगों को सब्ज़ा बाग़ दिखाकर अपने धर्म की संख्या बढ़ा कर, उसके आधार पर राजनीतिक अधिकारों का दावा न तो उचित ही है और न न्यायसंगत ही। इस प्रकार सिक्ख लोग देश में उस फूट के बीज को बो रहे हैं जिसके कारण हमारा देश परतन्त्रता की बेड़ियों से जकड़ा हुआ है। मैं चाहता हूँ कि साधारणतः हिन्दू और विशेषतः पंजाब और यू० पी० की आर्य प्रतिनिधि सभायें इस ओर विशेष ध्यान दें, और सरकार तथा सिक्खों की इस कुटिल नीति को कामयाब न होने दें। सार्वदेशिक सभा जो इस समय समस्त आर्य जाति की प्रतिनिधिसंस्था है, उसे भी इस ओर विशेष सतर्क होने की ज़रूरत है।

यद्यपि धार्मिक दृष्टि से मुसलमान लोग अपने को हिन्दुओं से पृथक् समझते थे, परन्तु राजनीतिक दृष्टि से उन्होंने भी कभी पृथक्ता का दावा न किया था, परन्तु सरकारी भेदनीति ने वहां भी अपने फल दिखाये। मुसलमान न केवल हिन्दुओं से पृथक् ही हुए वे पृथक् अधिकार और अब पृथक् देश तक का दावा करने लगे हैं। मैं इस विषय में साम्प्रदायिक निर्णय की विषाक्त योजना का उल्लेख कर आपका समय नष्ट करना नहीं चाहता, परन्तु इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि हम लोग ऐसा उग्र आन्दोलन करें कि युद्ध के बाद जो नये सुधार आयें उसमें इस निर्णय को सदा के लिये दफ़ना दिया जाये।

सिक्खों और मुसलमानों को पृथक् करने के बाद सरकार ने अछूतों को हिन्दुओं से जुदा कर हिन्दुसंगठन को गहरा आघात पहुंचाया। यद्यपि महात्मा गांधी ने अपने जीवन को खतरे में डाल कर उन्हें बिल्कुल अलहदा

होने से रोका तथापि, पिछली आधी सदी में आर्यसमाज ने अछूतों को समाज में बराबरी का स्थान देने के लिये जो प्रयत्न किया था उस पर पोता सा फिर गया, क्योंकि अब राजनीतिक अधिकारों की चर्चा चल पड़ने से छोटी जातियों के पढ़े-लिखे लोग भी अपने को परिगणित (Scheduled Classes) जातियों में लिखना गर्व समझने लगे हैं। मैं आर्यों से अपील करना चाहता हूं कि चाहे सरकार की दृष्टि कुछ ही क्यों न हो आप सब देशवासियों को अपना भाई समझें और साम्प्रदायिक निर्णय को हटाने के लिये आन्दोलन जारी रक्खें।

अखण्ड भारत

भारत को एक सुदृढ़ और सुसंगठित शासन के नीचे लाना ब्रिटिश साम्राज्य की सर्वोत्तम देन कही जाती है, परन्तु अब पिछले दो सौ वर्षों के किये पर पानी फिरा चाहता है। कुछ अदूरदर्शी लोग भारत के बँटवारे की आवाज़ बुलन्द करने लगे हैं। जहां तक आर्यसमाज का सम्बन्ध है हम चाहते हैं कि देश की विभिन्न प्रांतीय सरकारों को प्रांतीय शासन में पूरी सुविधा और स्वतंत्रता रहे, परन्तु उनके ऊपर एक सुदृढ़ और सुसंगठित केन्द्रीय सरकार की नितान्त आवश्यकता है, जिसके न रहने से सारा ढाँचा चकनाचूर हो जायेगा और देश न केवल दो टुकड़ों में अपितु दर्जनों भागों में बँट जायेगा, जिसका अन्तिम परिणाम गृहकलह होगा। इस विषय में दक्षिणीय और मध्य योरुप का इतिहास पढ़ लेना पर्याप्त है। इसलिये आवश्यक है कि सारे देश से सम्बन्ध रखने वाले विषय केन्द्रीय सरकार के आधीन रहें और शीघ्र ही केन्द्र में संघ शासन लागू कर दिया जाये। इसके साथ ही मैं यह भी कह देना उचित समझता हूं कि किसी भी अल्पमत के अधिकारों को दबाकर बलवान् से बलवान् सरकार भी चैन से हकूमत नहीं कर सकती है।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि आर्यसमाज, वैदिक सिद्धान्तों की एक प्रचारक संस्था है। यद्यपि आर्यसमाज सामूहिक रूप से राजनीतिक आन्दोलनों से सदा पृथक् रहता है तथापि, एक सार्वजनिक संस्था होने से यदि किसी संस्था की ओर से कोई देश-घातक योजना उपस्थित की जाये तो जनहित को दृष्टि में रखते हुए उसका विरोध कर देश को कल्याणमार्ग का पथिक बनाना अपना कर्त्तव्य समझता है।

कुछ वर्षों से मुस्लिमलीग की ओर से यह आन्दोलन शुरू हुआ है कि जहां-जहां मुसलमानों की संख्या अधिक है, वे सब भाग स्वतंत्र मुस्लिम शासन के

अधीन कर दिये जायें और अपनी भाषा में उस देश को वे 'पाकिस्तान' पुकारते हैं। अभी तक न तो मुस्लिमलीग ने ही और न इस स्कीम के समर्थकों ने ही पाकिस्तान की कोई व्याख्या की है, परन्तु सिद्धान्तरूप से यह प्रचार किया जाता है कि जहां-जहां मुसलमान अधिक हैं, वहां-वहां मुस्लिम राज्य हो जिसकी शासन प्रणाली वे अपनी मर्ज़ी से बनायेंगे। बाकी-हिस्सा हिन्दुस्थान होगा जहां हिन्दू अपनी इच्छानुसार शासन करेंगे। सुनने में यह बात बहुत उचित प्रतीत होती है, परन्तु देश-भक्त और दूरदर्शी लोग जब इसके परिणामों को सोचते हैं कि ऐसा हो जाने पर कितनी कठिनाइयां पैदा हो जायेंगी और हिन्दू मुसलमान जिनका सदियों से चोली-दामन का साथ रहा है, इस योजना से सदा के लिये एक-दूसरे के शत्रु बन जायेंगे। बंगाल के दुर्भिक्ष ने इस बात को प्रमाणित कर दिया है कि हिन्दुस्थान के एक सूत्र में पिरोये रहने से ही एक-दूसरे से सहायता मिल सकती है। इसके विस्तार में जाने से मेरा भाषण लम्बा हो जायेगा। मुझे तो यही प्रदर्शित करना है कि आर्य समाज पाकिस्तान आन्दोलन को किस दृष्टि से देखता है। मुस्लिमलीग के कराची अधिवेशन में एक "कौंसिल ऑफ ऐक्शन" बनाई गई है जिसका उद्देश्य है कि मुसलमानों को पाकिस्तान स्थापना के लिये तैयार किया जाये और मि० सैय्यद ने इसके लिये एक प्रोग्राम भी तैयार किया है। मैं नहीं कह सकता कि सरकार इस ओर क्या नीति बर्तेगी ? किन्तु आम पढ़े-लिखे लोग यह समझते हैं कि पाकिस्तान से ब्रिटिश सरकार का कोई हित होने वाला नहीं है। यह तो केवल अपनी स्थिति दृढ़ करने के लिये एक राजनीतिक स्टन्ट-मात्र है और सर्व साधारण लोग ऐसा समझते हैं कि मि० जिन्ना और उनकी लीग हिन्दुस्थान की आज़ादी में रोड़ा हैं। इसी से मि० चर्चिल और मि० एमरी को यह कहने का अवसर मिला हुआ है कि जब तक भारत के हिन्दू और मुसलमान अपनी सम्मिलित मांग पेश न करें तब तक ब्रिटिश सरकार के लिये कोई कदम उठाना सम्भव नहीं है। यहां यह भी स्पष्ट कर देना उचित है कि पाकिस्तान के मामले में सब मुसलमान एकमत नहीं हैं और नाहिं मुस्लिमलीग भारत के सब मुसलमानों का ही प्रतिनिधित्व करती है। यद्यपि मैं समझता हूँ कि पाकिस्तान एक ख्याली पुलाव है और यह कभी भी कार्यान्वित नहीं किया जा सकता तथापि एक प्रचारक संस्था के नाते हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम देश की जनता को ऐसी घातक योजना का विरोध करने तथा अखण्ड भारत के प्रति प्रेम उत्पन्न करने

के लिये सुशिक्षित करें और ज्योंही विरोधियों की ओर से कोई ऐसी योजना उपस्थित की जाये उस पर तुरन्त विचार करके उसे फैलने से रोका जाये।

आर्यसमाज, कांग्रेस और हिन्दुमहासभा

यह बात निर्विवाद है कि भारत की सब से बड़ी राजनीतिक संस्था कांग्रेस है और वह अपने को समूचे राष्ट्र की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था घोषित करती है। यद्यपि उसमें हिन्दुओं का बहुमत है और कांग्रेस के लिये हिन्दुओं द्वारा किये गये त्याग की भी कोई हद नहीं है, फिर भी कांग्रेस ने कभी भी अपने को केवल हिन्दुओं का प्रतिनिधि नहीं बताया। कांग्रेस का यह दावा उनके अपने विचार से उचित भी है, क्योंकि उसमें सनातनी, समाजी, जैनी, सिक्ख, पारसी, ईसाई, मुसलमान तथा परिगणित जातियां—सभी सम्मिलित हैं। वही संस्था राष्ट्र की प्रतिनिधि होने का दावा कर सकती है जो सब जातियों के अधिकारों का संरक्षण कर सके और इस बात का सदा ध्यान रक्खे कि किसी भी अल्पमत के अधिकार कुचले न जायें। पहले तो कांग्रेस केवल शिक्षित वर्ग का एक सालाना शुगल था, उस समय तक सर्व साधारण पर इसका कोई प्रभाव न था और सरकार की भी इस पर कोप दृष्टि न पड़ती थी, किन्तु जब कांग्रेस की बागडोर लोकमान्य तिलक के हाथ में गई और उन्होंने "स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" का नारा बुलन्द किया और बाद में महात्मा गांधी ने कांग्रेस का सूत्र संचालन कर सर्व साधारण जनता को अपनी ओर खींचा तथा आम जनता ने कांग्रेस को अपनाया, उस समय से कांग्रेस की शक्ति बढ़ गई और यह सरकारकी आँखों में खटकने लगी।

यह ठीक है कि प्रत्येक सरकार अल्पमत की रक्षा करने का यत्न करती है। यही कारण है कि जब कांग्रेस ने आठ प्रान्तों में शासन की बागडोर संभाली तो कांग्रेसी शासन में मुसलमानों को खुश रखने के लिये प्रत्येक कार्य में उनसे रियायत की गई। ज्यों-ज्यों कांग्रेस झुकती गई त्यों-त्यों मुसलमानों की मांगें बढ़ती गईं और कांग्रेस सदैव मुसलमानों के सन्मुख हिन्दू हितों की बली देती रही। परिणाम यह हुआ कि बहुत से राष्ट्रप्रेमी, किन्तु हिन्दुत्त्वाभिमानी हिन्दू कांग्रेस से निराश होकर दूसरी संस्थाओं में काम करने लगे।

अपने मौलिक सिद्धान्तों के आधार पर हिन्दुमहासभा इस बात की दावेदार है कि वह भी स्वतन्त्रता के लिये उतनी ही उत्सुक है जितनी कि कांग्रेस, प्रारम्भ

से लेकर आज तक हिन्दुमहासभा ने जो प्रस्ताव पास किये हैं उन्हें पढ़ कर कोई भी उनके इस दावे का खण्डन नहीं कर सकता। केवल भेद इतना ही है कि हिन्दुमहासभा इस देश को हिन्दुओं (आर्य्य जाति) का देश समझती है और और आर्य्य जाति के इस देश में बहुतमत में होने के कारण उनका दावा है कि भारतवर्ष आर्य्यजाति का ही देश है, जिस प्रकार अरबस्थान अरबों का तुर्कस्थान तुर्कों का तथा चीन, चीनियों का है। यह होते हुए भी हिन्दुमहासभा ने यह कभी नहीं कहा कि आर्य्य जाति के अतिरिक्त यहाँ कोई दूसरा रह नहीं सकता अथवा इस अल्पमत के अधिकारों की रक्षा न करेंगे। इसके विपरीत महासभा ने बार-बार यह घोषणा की है कि अल्मतों की संस्कृति, धर्म, भाषा और प्रथाओं की रक्षा की जायेगी। हां, हिंन्दुमहासभा यह कभी सहन नहीं कर सकती कि इस देश के असली निवासियों के अधिकारों को कुचल कर अल्पमतों से रियायत की जाये। यदि कांग्रेस सचमुच ही सारे राष्ट्र का प्रतिनिधित्त्व करती और हिन्दुओं द्वारा दूसरों पर अत्याचार होने पर हिन्दुओं की तथा मुसलमानों द्वारा दूसरों पर अत्याचार होने पर मुसलमानों की भर्त्सना करती तो मेरे विचार में हिन्दुमहासभा की पृथक् स्थापना की ज़रूरत न होती, किन्तु वर्त्तमान अवस्था में हिन्दुओं (आर्य्यों) की रक्षा के लिये हिन्दुमहासभा की नितान्त आवश्यकता है। सर्व साधारण मुसलमानों से हिन्दुमहासभा को कोई शिकायत नहीं किन्तु मुस्लिम लीगियों अथवा उन समान कट्टर साम्प्रदायिकता के हलाहल से भरे हुए लोगों को नियंत्रण में रखने के लिये भी हिन्दुमहासभा की सख्त ज़रूरत है।

क्योंकि आर्य्य समाज एक धार्मिक संस्था है, अतः इसमें सभी विचारों के लोग सम्मिलत हो सकते हैं। इसी लिये आर्य्यसमाज ने अपने सदस्यों को इस बात की पूरी स्वतंत्रता दे रक्खी है कि वे देश भर की राजनीतिक संस्थाओं में से जिसके साथ मिलकर काम करना पसन्द करें, स्वतंत्रता से करें। आर्य समाज को इस बात का गौरव है कि उनके सदस्य जिन संस्थाओं में काम करते हैं, पूरी लगन और कर्त्तव्य परायणता से करते हैं। कॉंग्रेस और हिन्दुमहासभा दोनों को यह बात स्वीकार करनी पड़ेगी कि आर्य्य समाज ने इनको हर प्रकार से सहयोग देकर अपने कर्त्तव्य का पालन किया है और इसके सदस्य भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम में किसी से पीछे नहीं रहे। इसमें संदेह नहीं कि कुछ

प्रख्यात आर्य्य कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस में जाकर अपनी मातृ संस्था आर्य्य समाज को भुला दिया है जिसका प्रभाव आम जनता पर अच्छा नहीं पड़ा, किन्तु मेरा विश्वास है कि जब वे अपनी अवस्था पर विचार करेंगे तो उन्हें फिर से आर्य्य समाज की शरण लेनी पड़ेगी।

सर्वसाधारण से सम्पर्क

अभी तक आर्यसमाज का काम शहरों और कस्बों तक ही सीमित है। देहात में रहने वाले किसानों और साधारण लोगों तक हमारा संदेश अभी पहुंचा ही नहीं है, परन्तु देश की वास्तविक जनता तो गाँवों में ही रहती है, जिन तक अपना संदेश पहुँचाये बिना कोई भी संस्था ताक़तवर नहीं बन सकती। जब तक कांग्रेस का काम शहरों और पढ़े-लिखों तक ही सीमित था उसकी कोई शक्ति न बन सकी, किन्तु किसान और मजदूरों में काम करने से उसे वह ताक़त मिली, कि आज वह संसार की सब से बड़ी ग़ैर सरकारी राजनीतिक संस्था कही जाती है। इसी प्रकार यदि आर्यसमाज वैदिक सिद्धान्तों और वैदिक राज्यपद्धति को देश भर में प्रचलित करना चाहता है तो उसे अपनी सारी शक्ति ग्रामों में लगानी चाहिए। जब ग्रामीण जनता वैदिक सिद्धान्तों को समझ लेगी तो देश की स्वतंत्रता को बल मिलेगा तथा सर्वत्र शांति स्थापित होगी। इसके साथ ही मैं आप सब लोगों से प्रार्थना करूंगा कि आप लोग आसाम के पर्वतीय लोगों, बिहार के संथालों, सी. पी. के गोंडों तथा मध्य भारत के भीलों को अपने दृष्टि पथ से ओझल न होने देवें, जिन्हें मुसलमान और इसाई पिछले कुछ वर्षों से अपने धर्म में लाकर अपनी संख्या बढ़ाने का जी तोड़ यत्न कर रहे हैं। यदि आर्यसमाज ने शीघ्र ही इस ओर ध्यान न दिया तो ये तीन करोड़ लोग जो वस्तुतः हमारी संस्कृति और धर्म के ही अंग हैं, विधर्मियों के हाथ चले जायेंगे।

आर्य्यसमाज और वर्त्तमान गतिरोध

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है आर्यसमाज एक धर्म प्रचारक संस्था होने के कारण इस बात का अधिकार रखता है कि वह राजा और प्रजा दोनों को आदेश देवे तथा दोनों के कर्त्तव्यों का निर्देश करे। मैं इस बात की गहराई में जाना उचित नहीं समझता कि सरकार ने देश के बहुत से देश-भक्तों को गिरफ़्तार कर, बिना किसी जांच-पड़ताल के तथा मुकद्दमा भी चलाये बिना

अनिश्चित काल के लिये जेलों में क्यों डाल रक्खा है ? मैं समझता हूँ कि आर्य्य-समाज का यह अधिकार है कि वह सरकार को यह परामर्श दे कि वर्त्तमान युद्ध में भारतीय राष्ट्र का ऐच्छिक और पूर्ण सहयोग प्राप्त करने के लिए सभी राजनीतिक बन्दियों को मुक्त कर दिया जावे।

महर्षि दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश और आर्य्यसमाज

महर्षि दयानन्द आर्य्यसमाज के प्रवर्त्तक थे और समस्त आर्य संसार उन्हें अपना सच्चा गुरु तथा मार्गदर्शक समझता है। उन्होंने किसी नवीन धर्म की स्थापना नहीं की अपितु, ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त और जैमिनी से लेकर आज तक चले आ रहे सार्वभौम वैदिक धर्म का यथार्थ रूप संसार के सन्मुख रक्खा है। उस सार्वभौम धर्म को समझाने के लिए जहां उन्होंने वेदों का भाष्य किया वहां सर्व साधारण तक वैदिक सन्देश पहुँचाने के लिए तात्कालिक जन साधारण की भाषा में सत्यासत्य का विवेचन करते हुए 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना भी की। इस में उन्होंने जहाँ समस्त ज्ञातव्य बातों का उल्लेख किया वहाँ उस समय भारत में प्रचलित सभी मत-मतान्तरों की तर्क और न्याय के आधार पर समालोचना कर सब धर्मों के आदि स्रोत तथा सर्वश्रेष्ठ वैदिक धर्म की उच्चता की स्थापना भी की। अन्य मतों की समालोचना करने में स्वामी जी का क्या उद्देश्य रहा सो सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में लिखे स्वामी जी के अपने शब्दों से स्पष्ट हो जायेगा। स्वामी जी लिखते हैं :—

"जो मत-मतान्तरों के परस्पर झगड़े हैं उनको मैं पसन्द नहीं करता, क्योंकि इन्हीं मतवादियों ने अपने मतों का प्रचार कर, मनुष्यों को फँसा कर परस्पर शत्रु बना दिया है। इस बात को काट कर, सर्व सत्य का प्रचार कर, सब को एक मत करा, द्वेष छुड़ा, परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त करा, सब से सबको सुखलाभ पहुंचाने के लिये मेरा यत्न और अभिप्राय है, क्योंकि एक मनुष्य जाति को बहका कर, विरोध बुद्धि करा कर, एक दूसरे को शत्रु बना कर लड़ा मारना विद्वानों के स्वभाव से बाहर है।"

स्वामी जी फिर लिखते हैं "जो-जो इसमें सत्य मत का मण्डन और असत्य का खण्डन लिखा है वह सब को जताना ही प्रयोजन समझा गया है। इस मेरे कर्म से यदि उपकार न मानें तो विरोध भी न करें, क्यों

कि मेरा तात्पर्य किसी की हानि व विरोध करने में नहीं, किन्तु सत्यासत्य के निर्णय की जांच करना है।"

(सत्यार्थ० ११ वें समुल्लास की अनुभूमिका)

स्वामी जी १३ वें समुल्लास की अनुभूमिका में फिर लिखते हैं "यह लेख केवल सत्य की वृद्धि और असत्य के ह्रास और झूठ के नाश होने के लिए है, न कि किसी को दुख देने व हानि करने अथवा मिथ्या दोष लगाने के लिये।"

सत्यार्थप्रकाश का सर्वप्रथम संस्करण १८७५ ई० में प्रकाशित हुआ था। तब से आज तक इसके कई दर्जनों संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। भारत की सभी भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है और योरुप की तीन प्रमुख भाषाओं— अंग्रेज़ी, फ्रैंच और जर्मन में भी यह अनूदित किया जा चुका है। सत्यार्थप्रकाश की इतनी प्रतिष्ठा का प्रधान कारण यह है कि इसमें वैदिक धर्म को उसके सच्चे रूप में प्रदर्शित किया गया है। यही कारण है कि लाखों लोग इसे पवित्र धर्मपुस्तक के रूप में पूजते हैं और हज़ारों इसका प्रतिदिन पाठ करते हैं। सत्यार्थप्रकाश की इतनी प्रसिद्धि से आर्यसमाज के विरोधियों ने समय-समय पर इस पुस्तक को ज़ब्त कराने का यत्न किया है। क्योंकि भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में आर्यसमाजी लोगों ने बहुत बड़ा भाग लिया और आर्यसमाज में दीक्षित हुए लोगों के विचार राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति से परिपूर्ण थे, अतः सब से पहले इस पुस्तक पर राजद्रोह फैलाने का अभियोग लगाया गया। आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि यह अभियोग सरकार की ओर से न लगाया जाकर १६०२ में एक हिन्दू सन्यासी-आला राम सागर ने लगाया था। सत्यार्थप्रकाश का तो इससे क्या ही बिगड़ना था उलटे आलाराम को ही इलाहाबाद के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट मि० पी० हरिसन ने दण्डित किया। धार्मिक दृष्टि से सत्यार्थप्रकाश की ज़ब्ती का सर्वप्रथम आन्दोलन १६२६ ई० में सत्यार्थप्रकाश के पृथक् प्रकाशन के लगभग आधी शताब्दी बाद कुछ पंजाबी मुसलमानों ने चलाया था। इस आन्दोलन का परिणाम जो स्वाभाविक था, सो हुआ। सार्वदेशिक सभा के नेतृत्त्व में समस्त आर्यसंसार ने इसकी रक्षा में सर्वस्व न्यौछावर करने की घोषणा कर दी। मुसलमानों का आन्दोलन तो अपनी मौत मर गया, परन्तु सत्यार्थप्रकाश का प्रचार और भी अधिक बढ़ गया। अब सत्यार्थ-प्रकाश के १४ वें समुल्लास को ज़ब्त कराने की आवाज़ फिर से उठाई गई है। सबसे पहले यह आवाज सिंध से उठी। मुस्लिमलीगियों द्वारा सिंध के शासन की

बागडोर हाथ में लेने पर कुछ शरारत पसन्द मुसलमानों ने सत्यार्थप्रकाश की ज़ब्ती का नारा बुलन्द किया। इसमें संदेह नहीं कि आन्दोलन की इस नींव में धार्मिकता की अपेक्षा राजनीतिक स्टन्ट अधिक था। ज्योंही यह प्रश्न सिन्ध सरकार के सम्मुख उपस्थित हुआ हिन्दुमहासभा के योग्य प्रधान वीर सावरकर ने गवर्नर तथा सिंध प्रान्तीय हिन्दु सभा को इस ओर तुरन्त कार्यवाही करने का आदेश दिया और हिन्दुमहासभा के मन्त्री पं० चन्द्रगुप्त वेदालंकार ने सिंध के दोनों हिन्दू मन्त्रियों और प्राँतीय सभा पर ज़ोर दिया कि वे मुसलमानों की इस मांग को किसी भी हालत में पूरा न होने दें। इधर सार्वदेशिक सभा की आज्ञा पर सारे भारत से हज़ारों प्रस्ताव पास होकर तारों और प्रस्तावों के गट्ठे सिंध और केन्द्रीय सरकार के पास पहुँचे। कुछ दिन बाद हमें सूचित किया गया कि सत्यार्थप्रकाश को ज़ब्त करने का सिंध सरकार का कोई इरादा नहीं है। इसके बाद सिंध के मंत्री मि० गज़दर ने लाहौर में भाषण देते हुए कहा कि हमने हिन्दू मंत्रियों के कहने पर अपनी सरकार में यह विषय पेश नहीं होने दिया, किन्तु केन्द्रीय सरकार के पास भेज दिया है। जांच करने पर पता चला कि यह केवल एक गीदड़ भभकी थी। जब लीगियों ने देखा कि उनके अब तक के किये गये सब वार खाली गये तो वे यह विषय अ. भा. मुस्लिम लीग कौंसिल में लाये और इसकी देहली में हुई बैठक में न केवल सत्यार्थप्रकाश की ज़ब्ती का ही प्रस्ताव पास हुआ अपितु, मुस्लिम लीग के प्रधानमंत्री नवाबजादा लियाक़त अलीख़ाँ को इस विषय में केन्द्रीय सरकार पर ज़ोर डालने का अधिकार भी दिया गया। इस के परिणाम स्वरूप अमृतसर में एकत्र हुए भारत भर के हिन्दुओं ने जिनमें सनातनी, समाजी, जैनी आदि सब सम्मिलित थे, एक स्वर से लीग की इस अनुचित और अन्यायपूर्ण मांग का विरोध कर धार्मिक ग्रन्थों की अक्षुण्णता की आवाज़ उठाई। इससे पता चलता है कि सम्पूर्ण हिन्दू जगत् आर्य समाज की माँग के साथ है। दुःख भरे हृदय से हम यह कहने को विवश हैं कि जहां एक ओर सारे हिन्दू, आर्यसमाज की आवाज़ में आवाज़ मिला रहे थे वहां कुछ अदूरदर्शी सिक्खों ने मुस्लिमलीग की पीठ ठोकने में शर्म अनुभव नहीं की।

आर्य्य पुरुषो! जिस १४ वें समुल्लास के विरुद्ध इस समय मुस्लिमलीग की ओर से ज़ब्ती का प्रश्न उठाया जा रहा है, उसके विषय में स्वामी जी की

अपनी सम्मति को यदि आप सुनें तो मेरा विश्वास है कि प्रत्येक न्यायप्रिय व्यक्ति उसी परिणाम पर पहुँचेगा जिस पर मैं पहुँचा हूँ। स्वामी जी १४ वें समुल्लास की अनुभूमिका में लिखते हैं "यह केवल मनुष्यों की उन्नति और सत्यासत्य के निर्णय की तहकीकात करने के लिये, सब मत के विषयों का थोड़ा-थोड़ा ज्ञान होवे, उससे मनुष्यों को परस्पर विचार करने का समय मिले और एक दूसरे के दोषों का खण्डन कर गुणों को ग्रहण करें। न किसी अन्य मत पर और न इस (इस्लाम) मत पर झूठ-मूठ बुराई लगाने का प्रयोजन है, क्योंकि यह लेख हठ, दुराग्रह, ईर्ष्या, द्वेष, वाद-विवाद घटाने के लिये किया गया है, न कि इनके बढ़ाने के लिये।" इससे स्पष्ट झलकता है कि ऋषि ने मत-मतान्तरों का खण्डन लोकहित की पवित्र भावना से ही किया है। अब देखना यह है कि क्या केवल महर्षि दयानन्द ने ही इस प्रकार की समालोचना की है अथवा भिन्न-भिन्न समयों के सभी सुधारकों और धर्मोपदेष्टाओं ने भी अन्य लोगों का खण्डन किया है। यदि आप बाईबल, बौद्धग्रन्थों अथवा अन्य सुधारकों के ग्रन्थों को पढ़ें तो आपको पता चलेगा कि हरेक सुधारक ने बुराइयों को दूर करने के लिये सख्ती से काम लिया है। मैं इस समय उन सब उद्धरणों को उपस्थित कर आपका समय लेना नहीं चाहता और नाहिं इस समय हज़रत ईसा और भगवान् बुद्ध के अनुयायियों की ओर से हम पर कोई आक्षेप ही किया गया है। वर्त्तमान आन्दोलन का सम्बन्ध मुसलमानों और मुस्लिम लीगियों से ही है। अतः आइये और इस विषय में कुरान की समीक्षा कीजिये। इस विषय में मैं अपने शब्दों में कुछ न कह कर मुसलमानों के एक बड़े नेता, प्रसिद्ध अहमदिया सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक तथा अन्तिम पैग़म्बर होने के दावेदार मिर्जा गुलाम अहमद साहब कादियानी के शब्दों में ही बताना चाहता हूँ। वे अपनी प्रख्यात पुस्तक 'अजाला अवहाम' के पृष्ट ६०० पर लिखते हैं **"तो फिर इकरार करना पड़ेगा कि कुरान शरीफ़ ग़ालियों से पुर है, क्योंकि जो कुछ बुतों की जिल्लत और बुतपरस्तों की हकारत और उन के बारे में इस्तेमाल किये गये हैं वे हरगिज़ ऐसे नहीं हैं जिनके सुनने से बुतपरस्तों के दिल खुश हुये हैं। बिना शुबह इन अलफ़ाज ने उनके गुस्से की बहुत तारीफ़ की होगी। क्या कुरान शरीफ़ में कफ्फ़ार को 'शर अल-बरीफ़' करार देना और तमाम रज़ील और पलीत मख़्लूकात से उन्हें बदतर ज़ाहिर करना मोहतरेज़ के ख्याल के रुह से दुश्नामदहि में दाखल न होगा?"**

इसी पुस्तक के पृष्ठ ६०४ से ६०७ तक के हाशिया में वे फिर लिखते हैं "कुरान शरीफ़ जिस आवाज़ बुलन्द से सख़्त जवानी के तरीके को इस्तेमाल कर रहा है एक ग़ायद दर्जा का ग़बि और सख़्त दर्जे का नादान भी इससे बेख़बर नहीं रह सकता। मसलन ज़माना हाल के मुहज्ज़बीन के नज़दीक किसी पर लानत भेजना एक सख़्त गाली है, लेकिन कुरान शरीफ़ कफ़्फ़ार को सुना-सुना कर उन पर लानत भेजता है। (देखो सूरत बकर)।" यह तो हुई मिर्ज़ा साहब की सम्मति। उन्होंने तो बहुत नरम-नरम सख़्तकलामी का परिचय दिया है। कुरान को पढ़ने वाले जानते हैं कि उसमें हज़रत मुहम्मद पर इमान न लाने वाले पर क्या-क्या सज़ा बताई गई है। कुरान का मसला क़त्ल-ए-मुरतद तो जगप्रसिद्ध ही है। यदि सत्यार्थप्रकाश की ज़ब्ती का प्रश्न मुसलमानों की ओर से उठाया जा सकता है तो कुरान शरीफ़, जिसमें अन्य धर्मों की सख़्त समालोचना की गई है, उसकी ज़ब्ती का प्रश्न क्यों न उठाया जाये? क्या मुसलमान इसे पसन्द करेंगे कि आर्यसमाज भी मुस्लिमलीग की तरह यह माँग पेश करदे? सचाई तो यह है कि यह माँग किसी धार्मिकता के आधार पर नहीं की जा रही है। यह तो एक राजनीतिक स्टन्ट है जिसे मुस्लिम लीगियों ने मुसलमानों को अपनी ओर खींचने का साधन बनाया हुआ है। हमारी समझ में नहीं आता कि जिस पुस्तक को छपते हुए ६० साल से ऊपर हो गये हैं और समूचे भारत में जिसके आधार पर हज़ारों शास्त्रार्थ हो चुके हैं तथा अभी, इसी मास में, इसी नगर में कई दिन तक लगातार मुसलमानों से शास्त्रार्थ होकर चुका है, परन्तु आजतक कहींभी, किसी प्रकार की, कोई दुर्घटना नहीं हुई। बात यह है कि आर्यसमाजी और मुसलमान भाई-भाई की तरह सत्य की खोज में शास्त्रार्थ करते रहते हैं। इस विषय में मैं आपका अधिक समय लेना नहीं चाहता। मुझे केन्द्रीय सरकार के अधिकारियों पर विश्वास है कि वे मुस्लिमलीग की बेहूदा माँग की ओर ध्यान न देंगे और ऐसे प्रस्ताव को रद्दी की टोकरी में फैंक कर अपनी समझदारी का सबूत देंगे। मैं केवल इतना संकेत कर देना ही पर्याप्त समझता हूं कि यदि सत्यार्थप्रकाश की रक्षा का प्रश्न उठा तो एक-एक आर्य बच्चा इसके लिए जान देगा। अन्त में मैं इस विषय को मुस्लिम विश्वविद्यालय देवबन्द के प्रसिद्ध मौलाना इब्न खलील के बयान का जो ३ दिसम्बर १९४३ के "प्रताप" में प्रकाशित हुआ है, कुछ उद्धरण देकर समाप्त करता हूं। वे लिखते हैं "हज़रत मौ० मुहम्मद कासिम बानि दार-ए-उलूम

देवबन्द उन नाम वर उलेमाओं में से हैं जिन्होंने कई वार स्वा० दयानन्द से बिल-मशाफ़ा मुनाजारा किया है। उनको इस्लाम और कुरान पर स्वामीजी के ख़यालात का बरायेरास्त इल्म था और जहां तक मुझे याद पड़ता है सत्यार्थप्रकाश हजरत मौलाना मरहूम के हयात में ही तबा हो गई थी। मुझे इस वक्त यह तो याद नहीं कि उन्होंने किताबी सूरत में इसका कोई जवाब दिया और नाहिं इस वक्त मैं इस पोजीशन में हूं कि उन तमाम कुतुब का हवाला दूं जो सत्यार्थप्रकाश के १४ वें बाब के जबाब में शाया होते रहे हैं। यहां सिर्फ इस कदर ज़ाहिर करना है कि यह किताब शुरू से ही मुसलमान उल्मा की इल्मी दिलचस्पी का मरक़ज रही है। लेकिन यह ख़याल किसी ज़मात ए उल्मा के जहन में पैदा नहीं हुआ कि दलील का ज़बाब नाराजगी और गुस्सा की शक्ल में दिया जाये कि किताब जब्त हो जाये। अब कुछ दिन से हमारे कुछ सयासी मस्लहतों के शिकार बुजुर्ग मुख्तलिफ़ प्लैटफार्मों से सत्यार्थप्रकाश के १४ वें बाब की जब्ती का मुतालबा कर रहे हैं। मैं उनसे यह अर्ज़ करूंगा कि खुदारा अपनी सयासी कलाबाजियों के लिये कोई और मैदान तलाश कीजिये और हम मौलानाओं के तबलीगी मैदान को खराब न कीजिये।" आगे चलकर वे फिर लिखते हैं "क्या आप दुनियां की अक्ल पर ताला लगा देना चाहते हैं? यह मज़हब है। इसे मि० जिन्ना के हाथों का खिलौना न बनाइये। आपकी सयासी मस्लहतों ने अगर इस्लाल और कुरान को छुई-मुई का पौधा बना दिया तो लोग क़ुरान को मशकूक निगाहों से देखने लगेंगे। इसलिए मैं यह अर्ज़ करूँगा कि सत्यार्थ प्रकाश के किसी हिस्से की जब्ती का मुताल्वा दानिशमन्दी पर मुब्नी नहीं है।" इस उद्धरण को देने से मेरा अभिप्राय इतना ही है कि सारे मुसलमान, मुस्लिमलीग के इस प्रस्ताव से सहमत नहीं हैं। सैकड़ों मुसलमानों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया है। उन सबके उद्धरण यहां देना कठिन है। कुछ भी हो आर्य समाज अपने नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिये कटिबद्ध है। अवसर आने पर आर्य समाज अपने बलिदानों के इतिहास की पुनरावृत्ति करेगा। अन्त में मैं आप सब महानुभावों का पुनः स्वागत करता हूँ।

अखिल भारतवर्षीय पंचम आर्य सम्मेलन के प्रारम्भ में पढ़ा गया

स्वागत-गान

[लेखक—पं० सिद्धगोपालजी 'कविरत्न, 'साहित्य वाचस्पति', देहली]

आर्यगण, स्वागत तुम्हारा !

आपका शुभ-आगमन यह जाति-जननी का सहारा !
आर्य-सम्मेलन सफलता अब न कैसे पा सकेगा ?
आप सब जब हैं उपस्थित क्यों न कुछ सिखला सकेगा ?
जाति में जीवन-प्रभा अपनी न क्यों प्रकटा सकेगा ?
क्यों न शुभ-सन्देश ऋषि का विश्व को पहुँचा सकेगा ?
आपके कर्मठ-करों में देश का दायित्व सारा,
आर्यगण, स्वागत तुम्हारा ॥१॥

यह सुखद स्वर्णिम सुअवसर लाभ कुछ हमको उठाना।
विश्व के मिथ्यार्थ-तम में सत्य की ज्वाला जगाना।
सत्य-अर्थ-प्रकाश के उन शत्रुओं को यह बताना।
जाति जीवन जब्त होगा अब नहीं है वह जमाना।
तर्क-युग में अन्ध-श्रद्धा का कहाँ होगा गुजारा ?
आर्यगण, स्वागत तुम्हारा ॥२॥

ऋषि दयानँद क्रान्तिदर्शी की सुकृति का मान रखना।
जान जाये किन्तु जगती जान जाये आन रखना।
भाव, भाषा, भेष, संस्कृति की निरन्तर शान रखना।
आर्य हैं पाखण्ड विध्वंसक सदा पहिचान रखना।
राष्ट्र रक्षा के लिए तन मन तथा धन है हमारा।
आर्यगण, स्वागत तुम्हारा ॥३॥

हिन्दु, हिन्दी हिन्द पर है घोर-तर आपत्ति आई।
आप पर ही जाति ने है आर्यगण आशा लगाई,
कार्य-क्रम जो भी रखें वह कर्ममय हो तब भलाई।
अन्यथा हो जायेगी सब अन्यथा इसकी बड़ाई।
कागजों के अश्व ने कब कौन सा मैदान मारा ?
आर्यगण, स्वागत तुम्हारा ॥४॥

मान्य नेता श्री मुकर्जी जब सभापति हो गये हैं,
तब स्वयं ही सिद्ध है इस जाति के दुख खो गये हैं।
जायँगे जग जल्द जग में भूल से जो सो गये हैं।
पायँगे फिर, सभ्यता से हाथ जो जन धो गये हैं,
क्यों मुकर्जी से न होगा जाति का ऊँचा सितारा।
आर्यगण, स्वागत तुम्हारा ॥५॥

प्रेम श्रद्धामय हृदय से हम सुस्वागत कर रहे हैं।
दर्श पाकर आपका आनन्द से मन भर रहे हैं।
आप समता दृष्टि से जन सृष्टि का मन हर रहे हैं।
वृष्टि कर करुणा कणों की वह नमूना धर रहे हैं।
देखकर 'गोपाल' कवि ने यह वचन मुँह से उचारा।
आर्यगण, स्वागत तुम्हारा ॥६॥

ALL-INDIA ARYAN CONGRESS FIFTH SESSION

PRESIDENTIAL SPEECH

By

Dr. SHYAMAPRASAD MOOKERJEE

Delivered on 20-2-44

I am deeply sensible of the honour which you have done me in asking me to preside over the 5th All-India Aryan Congress, Yours is not an annual conference that meets to take regular stock of your plans and activities but with the consent of the constituent members of the Arya Samaj, spread throughout India, you are summoned together on special occasions to deal with any emergent situation, formulate your common attitude towards some questions of paramount importance affecting the welfare of India and specially the rights of the Hindus. This conference has a great significance in as much as it meets in one of the most critical periods of Indian history. A devastating war is sapping the very foundation of human civilization just as much the internal conditions of India have been thrown into a state of confusion affecting the political and economic, social and religious rights of the people.

I welcome this opportunity of paying my tribute of admiration to the Arya Samaj for the great work done by it towards the rebuilding of the national life of India. Despite the onslaughts on Indian culture and civilization throughout the chequered history of our beloved Motherland, despite her political subjugation extending over centuries, sages, seers and savants have appeared from time to time on the Indian scene and by their marvellous power of thought and action have checked retrograde tendencies and infused new life and vigour into the Indian mind. Thus we have a long line of great and good men, heroes in thought and deed, Hindu,

Buddhist and Jain; princes, patrons and prophets; great Siddhas and Bhaktas, God-intoxicated saints and devotees; great Acharyyas with their profound learning who by dint of their intellect attempted to establish a Dharmarajya; Sanths Sadhus and Vairagis who flourished after the Turki conquest of India welcoming the Sufi mystics and saints of Islam who revealed the message of renunciation, service and devotion consistent with the mighty spirit of Indian civilization. The impact between the West and the East brought into existence a remarkable era of Indian Renaissance. The nineteenth century gave us great leaders of thought who sought to revolutionise the Indian mind in almost every sphere of activity, religious, cultural, social and political. With the advent of British rule in India and the introduction of Western education there was however a real danger of Indian life and outlook undergoing a steady process of denationalisation. There was an equal danger of an over-emphasis on orthodox conservatism and a blind adherence to forms and rites of religious observances, thus checking a correct and vigorous growth of our national life and character.

At this supreme crisis in the history of Indian progress some great men, of whom Maharshi Dayananda Saraswati was one of the foremost, appeared on the scene and gave a remarkable lead to their country. Dayananda Saraswati's mental and spiritual outlook was orthodox but his was not a blind faith in empty ritual observances or a meaningless adherence to forms and superstitions often masquerading in the name of religious truths. He appeared before the public in India with the Vedas in his hands and gave a new message to bewildered people torn between many sects and loyalties and offered to all an equal place in the social structure of the society, built according to the holiest Indian traditions. It is indeed a matter of congratulation that the members of the Arya Samaj who are the spiritual descendants of the great

Maharishi have not kept the light confined within the dark recess of a sectarian temple. By an astonishing abundance of books, of journals and tracts in almost all the languages in India, they have sought to share with their fellow-men the teaching which they have found to be of vital importance to themselves. The galaxy of martyrs, patriots, and workers who have steadfastly proceeded along the line laid down by their great master not only for social and spiritual but also for cultural and political uplift of India have indeed lived dedicated lives.

The greatest service of the Arya Samaj is that it has roused amongst the people a profound sense of individual and national self-respect, a virility of mind and a love of the country's culture and civilization, destroying the poisonous sense of inferiority complex which turns man into a coward. Thus we find the Arya Samaj rousing the people to activity not by mere lectures and discourses on our past heritage and present duties but by strengthening those essential spheres of human life on which depends our future stability. Education, consistent with Indian ideals and traditions and also with modern requirements, has received most commendable attention at the hands of the Arya Samaj. Removal of untouchability, so essential to the consolidation of the Hindu race, has been another sphere of work which stands to the credit of the Arya Samaj. To unite the Hindus, to instil in them both physical and spiritual strength, to raise their social status, to infuse in them an undying reverence for truth and religion, to call upon them to defend and to fight for their rights, constitute the vigorous planning of the Arya Samaj. In the sphere of religion, it has thrown the door wide open and by raising its catholic appeal it has not only effectively prevented onslaughts on Hindu religion by, others, but has also dared to receive back into the Hindu fold those who were lured into other faiths and religions.

The Arya Samaj has never actively participated in politics as an organisation. But many of its members have been veteran soldiers in the cause of our country's liberty. Its illustrious founder in his monumental work, the Satyarthaprakasha, dealing as he did, with all phases of individual and national life with special reference to India, recorded in the clearest possible language his views on the political condition of his country. Thus he observed :—

"At the present moment, let alone governing foreign countries, the Aryans through indolence, negligence and mutual discord do not possess a free, independent, uninterrupted and fearless rule even over their own country. Whatsoever rule is left to them is being crushed under the heels of the foreigners. When a country falls upon evil days, the natives have to bear untold misery and suffering. **Say what you will, the indigenous native rule is by far the best. A foreign government, perfectly free from religious prejudices, impartial towards all—the natives and the foreigners—kind beneficent and just to the natives like their parents though it may be, can never render the people perfectly happy.**"

(Chap. VIII)

Could there have been a clearer and bolder analysis of our political bondage ? Truly did the great French savant Roman Rolland say that Maharishi Dayananda transfused into the languid body of India his own formidable energy, his certainty, his lion's blood. He reminded the secular passivity of a people, too prone to bow to fate, that the soul is free, and that action is regenerator of destiny". "Here was a soldier of Light, a warrior in God's world, a sculptor of men and institutions, a bold and rugged victor of the difficulties which Matter presents to Spirit, the whole, summing itself up", said Shri Aurobindo, "in a powerful impression of Spiritual Practicality." The Satyarthaprakasha which he left as an imperishable legacy to his countrymen and to the world at large, was an embodiment

of the genius of the Master. Here we see him as a creative artist and also as a critic, as a destroyer and also as a builder. Unfalterable was his faith in the eternal doctrines of truth, equality and liberty promulgated by the Vedas and he carried on relentless attacks against all forms of ignorance, bigotry and superstition. He had to face opposition from influential sections of his countrymen who could not at first keep pace with his progressive ideas, but he never deviated from what he believed to be the right path. With transparent sincerity of purpose and undaunted courage of conviction he declared : the truth consists in expounding truth as truth, and error as error ; the exposition of error in place of truth and truth in place of error does not constitute the unfolding of truth. The Satyarthaprakasha, his magnum opus, gives us a picture of the reconstructed society which a free India can build for herself on the priceless traditions of her own culture and civilization, harmoniously adjusted to modern conditions and environments.

To-day a demand has come from the Moslem League that Satyarthaprakasha must be suppressed as some of its passages offend a section of Mussalmans. It will be for you to consider what effective steps you will take for preventing such an act of arrogant and mischievous intolerance. Indeed this agitation may itself serve to popularise more and more the great words of truth, courage and wisdom with which this famous book abounds which have already brought strength and solace to millions, thus serving further to carry into effect the great ideal of liberation of the Indian mind for which the master lived and died. Knowing as I do the solidarity of the followers of Arya Samaj, I make bold to say that any sordid attempt to interfere with our religious rights will be set at naught by their courageous and united resistance, no matter what the conseqnences may be. I would go still further and say that such an attack will be accepted

as a challenge by the entire Hindu race and indeed by all lovers of freedom of thought and of opinion, no matter what their religious persuation may be. Let us not forget, however, the main reasons which have emboldened the Moslem League to make such a preposterous demand. It is due on the one hand to disunity in our ranks, to a sense of indifference to our sacred literature ; and on the other to the pampering policy of our Rulers favouring one section of the people for perpetuating Indian slavery. Today the greatest problem before India is the realisation of her political freedom. Without this freedom it is impossible to give effect to any wide scheme of social and economic reconstruction based on our fundamental rights and traditions. I do not for a moment minimise the need for social consolidation amongst all classes and sections of Hindus which can only be achieved by arduous and systematic work among the masses so that their standard of living and outlook may be raised and all artificial barriers broken down. I would go further and assert that such unity amongst Hindus must be accompanied, wherever possible, by a just and honourable understanding among all communities inhabiting this country. There must however be certain fundamental conditions whieh must be fulfilled before a real and lasting understanding can be achieved. Today it has been proved beyond the shadow of doubt that whatever may be the theories propounded by the British rulers, they are not prepared to transfer real power to the Indian people and thus lose their brightest possession. It suits their purpose to encourage the growth of disruptive tendencies amongst different sections of the Indian people,to give importance to all vested interests, specially bolstered up, and to carry on at the same time a ruthless policy of repression, stifling legitimate opposition to the continuance of their arbitrary rule, India's unity and indivisibility must be a vital factor in the new

constitution. None knows better than the protagonists of the Pakisthan scheme that it is wholly inconsistent with logic and practicability. The League is not prepared to allow the Hindus who form about three-fourths of India's population to determine the constitution of India. It is not even prepared that Hindus and Mussalmans throughout India should jointly settle India's constitution, for in both cases, it asserts that it involves the tyrannical rule of a majority over a minority. It claims at the same time that Moslems in provinces where they are a majority will by themselves decide the fate of crores of Hindus who live as a minority and apparently can claim no right to self-determination. In that case it will not be a "tyrannical rule of a majority over a minority" but an exercise of what is called the fundamental right of Moslems for a seaprate Homeland. Politically, economically and culturally India is and must remain one single unit. It is satisfactory that Lord Wavell unequivocally recognises this, though he has no constructive plan to end the present deadlock. Any one who seeks to disturb India's unity or to foment disruption is guilty of the highest act of treachery and must be resisted at any cost. Moslem League, left to itself, cannot divide India against the united opposition of the majority of her patriotic children nor can Britain with her sword vivisect India, and guarantee peaceful possession to the disruptionists. But British policy today is encouraging Pakisthan regime in action in provinces where Hindus are in a minority and their rights and interests are being systematically sacrificed at the alter of sordid communal opportunism. To test the bonafides of the Muslim League as regards its anxiety for the welfare of the Indian people or even the Mussalmans, we have repeatedly offered proposals for closing our ranks, postponing all controversial points regarding the future constitution until after the war and of putting forward a united demand for

immediate transfer of power specially for a vigorous and systematic preparation of a national defence of India and utilisation of India's vast resources for her economic regeneration. That door of negotiation is still open though there is little chance of any such understanding being arrived at in view of the unconcealed manner in which all reactionary elements are ecouraged by our rulers to put forth their unpatriotic and selfish demands. Today the remedy lies in creating a national opposition throughout India which will include all parties and sections who are agreed on the fundamental demands of Indian liberty. Let us not try to run after, or cajole parties and persons who care not for Indian progress and freedom but act as subservient tools in the hands of their masters for perpetuating the slavery of their country. There are other groups and sections, small and negligible by themselves, but strong and powerful, if they combine, who may well constitute an all-India national opposition laying down the fundamental conditions of our struggle for liberty. It will be the duty of such a body to lay stress on the maximum points of agreement regarding national reconstruction, demand immediate settlement plead for toleration and better understanding amongst one another and fearlessly resist every encroachment on our civic, economic and political rights. Today our country suffers from an apparent frustration. It is not the rule of law that functions in India today. Taking the fullest andvantage of the war situation, the barbaric impulses of a foreign bureaucracy have forged their varied processes of both swift and slow strangulation of the national will. But can any country be governed for long by sheer force and against the will of her people? Famine and pestilence have removed in less than six months more than two to three millions of men who perished for want of food, medicine and shelter under the very nose of a civilised government. A similar catastrophe

may overtake my province in 1944 if the present bankrupt, corrupt and communal ministry is allowed to continue its administration during the coming months. Any other country would have blazed into an open rebellion if such shocking mal-administration had taken place. There is not the least doubt that never in the history of British India was there greater discontent amongst the people as is witnessed at the present time. Let me not end however with a note of pessimism. We have yet to unite many a disruptive tendency amongst Hindus themselves. We have to fight against a steady growth of fanatical zeal following the demand for India's vivisection and last, but not the least, we have to guard against the onslaughts of the ruling race itself which aims constantly at crippling of Hindu strength and nationalist elements in the public life of the country. The task before us is beset with difficulties and disappointments. Has history however at all recorded the achievement of freedom by a subject-race which merely adorns itself in the role of an abject beggar or surrenders on vital questions of principles for a temporary and doubtful gain? Indian history gives us ample evidence that though there were giants amongst men in every generation who could easily be compared to the greatest men in any country or clime, the masses of the Indian people were not always swayed by a strong and vigorous impulse for protecting their political liberty at any price. The great work that lies before political and other parties in India today, imbued with healthy ideas of national solidarity, is to spread far and wide this love for unity and liberty, this faith in India's inherent right to govern herself, this determination that unless freedom is achieved, life is not worth living at all. Our goal will be reached not by a mere appeal to the emotions of the people or by merely criticising our enemies but by carrying on an active programme of social and economic uplift and by making religion a true

unifying factor for the uplift of human civilisation. This alone will give us that solid base on which an enduring structure of Indian liberty can be safely built. Let us therefore carry on our work in a spirit of dauntlessness, gathering strength from the firm belief that in a world still dominated by power, possession and prestige, it will be given to India, consistent with her mighty past, to help evolve a higher and nobler civilization not only for the regeneration of an oppressed race but also as a definite step in advance towards that co-ordination of the mind, matter and spirit without which neither permanent peace can be established nor freedom stabilised in any part of the civilised world.

BANDE MATARAM

पांचवें अखिल भारतीय सम्मेलन आर्य सम्मेलन प्रधान

डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी का अभिभाषण

देवियो और सज्जनो,

आप लोगों ने मुझे अखिल भारतवर्षीय आर्य सम्मेलन के पांचवें अधिवेशन का सभापति निर्वाचित करके जो सम्मान दिया है, उसे मैं हृदय से अनुभव करता हूँ। आपका सम्मेलन कार्यक्रम तथा कार्यों पर विचार करने के लिये नियमित रूप से होने वाली सभाओं की भांति प्रतिवर्ष नहीं होता, प्रत्युत विशेष परिस्थितियों का सामना करने के लिये तथा भारतवर्ष के हित और विशेष रूप से हिन्दु जाति के अधिकारों से सम्बन्ध रखने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के विषय में आर्यजनों का मत निर्धारण करने के लिये, जगत् के आर्य मात्र की प्रतिनिधि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आमन्त्रित किया जाता है। यह अधिवेशन विशेष महत्व रखता है क्योंकि यह हमारे देश के जीवन की बहुत ही पेचीदा घड़ी में हो रहा है। एक ओर विनाशकारी युद्ध मानवी सभ्यता की जड़ों को खोखला कर रहा है; और दूसरी ओर भारतवर्ष की आन्तरिक दशा को ऐसी अव्यवस्था में डाल दिया गया है कि देश के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक अधिकार खतरे में पड़ गये हैं।

आज मुझे आर्यसमाज के राष्ट्र की जागृति के लिये किये गये महान् कार्यों के प्रति श्रद्धांजलि समर्पित करने का जो अवसर मिला है, उसका मैं स्वागत करता हूं। हमारी प्यारी मातृभूमि के घटनापूर्ण इतिहास में भारतीय संस्कृति और सभ्यता पर बारंबार आक्रमण होते रहे हैं। कई सदियों से हम राजनीतिक दृष्टिकोण से पराधीन हैं, तो भी समय समय पर देश में ऐसे महात्मा, ऋषि और आचार्य जन्म लेते रहे हैं जो अपने विचारों और कार्यों के प्रभाव से जाति को गिरावट से बचाते और उसके मन में नये जीवन और ओज का संचार करते रहे हैं। हमारी जाति में अनेक श्रेष्ठ महापुरुष जन्म लेते रहे हैं, जो विचार और कार्य की दृष्टि से वीर कहलाने के अधिकारी थे। हिन्दू, बौद्ध और जैन; राजा, संरक्षक और धर्मगुरु; महान् सिद्ध और भक्त; ईश्वरभक्ति के मद में मस्त सन्त और भक्त; ऐसे उद्भट विद्वान आचार्य जिन्होंने अपने बुद्धिबल से धर्मराज्य की

स्थापना का प्रयत्न किया; ऐसे सन्त साधु और वैरागी जिन्होंने मुसलमानों द्वारा भारत की विजय के पश्चात् उत्पन्न होकर मुसलमान सूफियों और फकीरों का स्वागत किया और जिन्होंने भारतीय सभ्यता की जबर्दस्त भावना के अनुरूप त्याग, सेवा और भक्ति का सन्देश संसार को सुनाया—ऐसे सब महापुरुष समय समय पर आकर जाति को नाश से बचाते और जीवन का मार्ग दिखाते रहे।

पूर्व और पश्चिम के सम्पर्क ने भारतीय जागृति का एक नया युग पैदा कर दिया। उन्नीसवीं सदी ने देश को कई ऐसे महान् नेता दिए, जिन्होंने अपने विचारों की शक्ति से देशवासियों के मन में धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक क्रान्ति उत्पन्न कर दी। परन्तु भारत पर अंग्रेजों के प्रभुत्व और पाश्चात्य शिक्षा के प्रवेश के कारण यह खतरा उत्पन्न हो गया कि एक दिन देश का जीवन और दृष्टिकोण राष्ट्रीयता से शून्य हो जायगा, यह भी भय हुआ कि प्रतिक्रिया के तौर पर पुरानी रूढ़ियों और पद्धतियों के प्रति उत्पन्न अन्धी श्रद्धा राष्ट्रीय-जीवन और चरित्र की उचित एवं सुदृढ़ उन्नति को रोकने का कारण न बन जाय। जाति के जीवन की ऐसी नाजुक घड़ी में अनेक महापुरुष कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण हुए जिन्होंने देश को आत्मरक्षा का मार्ग दिखलाया। महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्थान उन महापुरुषों में बहुत ऊँचा है। महर्षि का मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्राचीन था, परन्तु उस प्राचीनता में धर्म के रूप में प्रच्छन्नरूप से रहने वाले खोखले रूढ़िवाद अथवा कुसंस्कारों को कोई स्थान नहीं था। महर्षि देशवासियों के सामने वेदों को हाथ में लेकर प्रकट हुआ, और उसने मत-मतान्तरों में बिखरे हुए मनुष्यों को मनुष्य-मात्र की समानता के आधार पर बना हुआ वेदोक्त सामाजिक व्यवस्था का मार्ग दिखलाया।

निःसन्देह यह परम संतोष की बात है कि उस महर्षि के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी आर्यसमाजियों ने इस ज्योति को किसी साम्प्रदायिक मन्दिर की अन्धकारमय कोठरियों में ही बन्द नहीं रखा। जिस शिक्षा को उन्होंने अपने लिये इतना अधिक जीवन-जागृति-पूर्ण समझा, उसे उन्होंने भारत की सभी भाषाओं में और आश्चर्यजनक बड़ी संख्या में पत्र तथा पुस्तक-पुस्तिकायें प्रकाशित करके अपने अन्य देशवासियों तक भी पहुंचा दिया। जिन देशभक्त कार्य-कर्ताओं ने अपने महान् आचार्य की परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए भारत के सामाजिक,

राजनीतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अभ्युत्थान के लिये आत्म-बलिदान कर दिया, उन्होंने निःसन्देह एक समर्पित जीवन का यापन किया। आर्य समाज की सब से बड़ी सेवा यह है कि उसने जनता में वैयक्तिक तथा राष्ट्रीय आत्मसम्मान की गम्भीर भावना, मन की चेतनता और देश की संस्कृति तथा सभ्यता के लिये प्रेम उत्पन्न करके हीनता की उस विषमय भावना का विनाश कर दिया जोकि मनुष्य को कायर बना देती है। यही कारण है कि हम देखते हैं कि आर्य समाज जनता को कर्म में प्रवृत्त करने के लिये निरे अपने प्राचीन गौरव के उपाख्यानों और वर्तमान कर्तव्य के सम्बन्ध में कोरे व्याख्यानों से ही सन्तुष्ट नहीं हो जाता, वह मानव-जीवन के अंग-भूत उन क्षेत्रों को भी बल प्रदान करता है जिन पर कि हमारे भविष्य की स्थिरता अवलम्बित है।

आर्य समाज ने बालकों और युवकों की शिक्षा को ऐसा बनाने का अत्यन्त प्रशंसनीय प्रयत्न किया है जिससे वह भारतीय आदर्शों तथा परम्पराओं के अनुकूल होने के अतिरिक्त सामयिक आवश्यकताओं को भी भलीभांति पूर्ण कर सके। आर्य समाज का एक और प्रशंसनीय कार्य-क्षेत्र अस्पृश्यता-निवारण रहा है, जिसकी हिन्दूजाति के सङ्गठन के लिए उपेक्षा नहीं की जा सकती। हिन्दू मात्र में एकता की स्थापना, उनके शारीरिक तथा आध्यात्मिक बल की अभिवृद्धि, उनकी सामाजिक स्थिति की उन्नति, उनमें सत्य और धर्म के प्रति अमर श्रद्धा की जागृति, और उनको अपने अधिकारों की रक्षार्थ मर-मिटने के लिए प्रेरित करना आर्य समाज के कार्य-क्रम का मुख्य भाग रहे हैं। धर्म के क्षेत्र में आर्य समाज ने अपना दरवाजा सदा खुला रखा है और अपने धार्मिक दृष्टिकोण की उदारता की घोषणा करके उसने न केवल दूसरों के आक्रमणों से हिन्दू धर्म की रक्षा ही की है, अपितु जो लोग मतान्तरों अथवा धर्मान्तरों के फेर में पड़कर भटक गये थे उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में ले आने का साहस भी प्रकट किया है।

आर्य समाज ने सङ्गठित रूप से राजनीति में व्यावहारिक भाग कभी नहीं लिया, परन्तु उसके अनेक सदस्य देश की स्वतन्त्रता के सङ्घर्ष में अग्रणी सैनिक रहे हैं। उसके माननीय संस्थापक ने अपने स्मरणीय ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में, वैयक्तिक तथा राष्ट्रीय जीवन के सभी पहलुओं पर विशेषतः भारतीय दृष्टि से विचार करते हुए, अपने देश की राजनीतिक दशा पर भी स्पष्टतम भाषा में अपना अभिमत प्रकट किया है। उन्होंने लिखा है:—

"अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से, अन्य देशों पर राज्य करने की तो कथा ही क्या कहना, किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है।.....दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है। कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रह-रहित अपने और पराये का पक्षपात-शून्य, प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है।"

क्या हमारी राजनीतिक दासता का इससे अधिक विशद तथा साहसपूर्ण विश्लेषण संभव है? फ्रांस के महान् तत्त्वदर्शी रोमांरोलां का यह कथन सर्वथा सत्य है कि महर्षि दयानन्द ने भारत के शक्तिशून्य शरीर में अपनी दुर्धर्षशक्ति, अविचलता तथा सिंह-पराक्रम फूंक दिये हैं भाग्य के आगे सिर झुका देने वाली तथा निष्क्रिय जनता को उसने सावधान कर दिया कि आत्मा स्वाधीन है और कर्म ही भाग्य का निर्माता है। उत्कट आध्यात्मिक अनुभूति के प्रभाव में श्रीअरविन्द ने ऋषि दयानन्द के विषय में निम्न उद्‌गार प्रकट किये हैं:—

'संक्षेप में—वह ज्ञान का सच्चा सैनिक, विश्व को प्रभु की शरण में लाने वाला योद्धा, मनुष्य तथा संस्थाओं का शिल्पी और आत्मा के मार्ग से प्रकृति द्वारा खड़ी की गई विघ्न-बाधाओं को कुचल देने वाला एक सधा हुआ विजेता था।'

ऋषि ने अपने देश के निवासियों तथा समस्त विश्व को सत्यार्थप्रकाश के रूप में जो अविनश्वर वसीयत दी है वह उसकी प्रकाण्ड प्रतिभा का प्रतीक है। इस ग्रन्थ में वह हमारे सम्मुख एक उत्पादक कलाकार, समीक्षक, संहारक तथा निर्माता के रूप में प्रकट हुआ है। वेदों में प्रतिपादित स्वाधीनता, समानता तथा सत्य के शाश्वत सिद्धान्तों में उसकी अविचल निष्ठा थी। वे अज्ञान, हठधर्मिता और मिथ्या विश्वासों के दुर्ग पर अविश्रान्त प्रहार करते रहे। अपने प्रगतिशील विचारों का साथ देने में असमर्थ, अपने देशवासियों के प्रभावशाली वर्ग के विरोध का उन्हें सामना करना पड़ता था, परन्तु वे अपने विश्वासानुमोदित सत्यमार्ग पर सदा अविचलित रहे और उन्होंने लक्ष्य के प्रति अपनी विमल निष्ठा और विश्वास के प्रति अपने अप्रतिहत साहस के साथ घोषणा की:—

"सत्य को सत्य के रूप में और असत्य को असत्य के रूप में प्रतिपादित करना ही सत्य का यथार्थ रूप है। असत्य को सत्य के तथा सत्य को असत्य के रूप में प्रकट करना सत्य का प्रकाशन नहीं है।"

ऋषि ने अपने महान् दर्शन 'सत्यार्थप्रकाश' में एक ऐसे पुनर्गठित समाज का रूप उपस्थित किया है जिसे स्वतन्त्र भारत, बर्तमान परिस्थितियों तथा अवस्थाओं में स्वकीय संस्कृति तथा सभ्यता की अमूल्य परम्पराओं के साथ समस्वर करके ही निर्माण कर सकता है।

आज मुस्लिम लीग यह मांग कर रही है कि 'सत्यार्थप्रकाश' को जब्त कर लिया जाये क्योंकि इसके कुछ अंश कुछ मुसलमानों की दृष्टि में आपत्तिजनक हैं। अब यह सोचना आपका काम है कि ऐसी अनुचित और दुष्टतापूर्ण असहिष्णुता के प्रतीकार के लिए क्या उपाय किये जायें। वस्तुतः यह आन्दोलन ही स्वयं सत्य, साहस और विवेक के विचारों से परि-पूर्ण उस ग्रन्थ को अधिकाधिक लोकप्रिय बनाने में सहायक होगा, जिसने लाखों आत्माओं को शक्ति व मुक्ति प्रदान की है। और इस प्रकार इस ग्रन्थ ने जीवन-मुक्ति के उस भारतीय महालक्ष्य की सिद्धि में सहायता दी है जिसके लिए उनके प्रणेता ने अपना जीवन लगाया और प्राणों की भी आहुति दी।

आर्यसमाज के अनुयायियों के दृढ़ संगठन को जानते हुए ही मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि यदि हमारे धार्मिक अधिकारों में हस्तक्षेप करने का कोई भी दुष्प्रयत्न किया गया तो उसे परिणाम की चिन्ता किये बिना साहस और संगठित प्रतिरोध के बल पर छिन्न-भिन्न कर दिया जायेगा। मैं तो यहां तक कहने को तैयार हूं कि सम्पूर्ण हिन्दू जाति और उनके सम्प्रदाय—वस्तुतः धार्मिक मत-वादों के रहते हुए भी सभी विचार स्वातन्त्र्य प्रेमी—ऐसे हमले को चुनौती के रूप में स्वीकार करेंगे। हमें मुस्लिम लीग द्वारा की गयी ऐसी बेहूदी मांग के कारणों को नहीं भुला देना चाहिए। इसका कारण जहां एक ओर हमारे आपसी मतभेद और अपने पवित्र धर्म-ग्रन्थों आदि के प्रति उपेक्षा का भाव है, वहां दूसरी ओर भारतवर्ष को गुलाम बनाये रखने के लिए हमारे शासकों द्वारा प्रजा के एक भाग से पक्षपात करने की दुर्नीति भी है।

आज भारत के सामने सबसे बड़ा सवाल देश की राजनीतिक स्वतन्त्रता

प्राप्ति का है। इसके बिना हमारे सिद्धान्त-भूत अधिकारों और परम्पराओं पर आश्रित किसी भी सामाजिक और आर्थिक पुनर्निर्माण की व्यापक योजना को मूर्त रूप देना असम्भव है। मैं यहां क्षण-भर के लिए भी हिन्दू-जाति के सभी वर्गों और श्रेणियों में सामाजिक एकसूत्रता की आवश्यकता का महत्त्व कम नहीं करता। यह कार्य जनता का रहनसहन और दृष्टिकोण ऊँचा उठाने तथा सम्पूर्ण कृत्रिम बाधाओं का समूलच्छेद कर डालने के लिए बड़े कठोर व व्यवस्थित परिश्रम द्वारा ही हो सकता है। मैं यह भी कहूँगा कि हिन्दुओं में ऐसी एकता यथासम्भव इस देश में रहने वाली सब जातियों के साथ न्याय्य व सम्मानपूर्ण सौहार्द-भावना के साथ ही प्रकट होनी चाहिए। ऐसी वास्तविक और स्थायी सौहार्द-भावना होने से पहले कुछ सैद्धान्तिक शर्तें पूरी हो जानी आवश्यक हैं। आज यह निर्विवाद-रूपेण सिद्ध हो गया है कि ब्रिटिश शासकों द्वारा उद्घोषित सिद्धान्त चाहे कुछ भी हों वे वास्तविक शासनसत्ता को भारतीयों के हाथों सौंपने और इस प्रकार अपने साम्राज्य के सब से कीमती भाग को खोने के लिए तैयार नहीं हैं। इसीलिए उन्हें भारतीय जनता के विभिन्न दलों में फूट की प्रवृत्तियों को बढ़ाने और कृत्रिम रूप से ऊँचा उठाये हुए निहित स्वार्थों का महत्व जताने में अपना फ़ायदा दीखता है। इसके साथ ही उन्हें कठोर दमन नीति का अनुसरण करने और अपने निरंकुश स्वेच्छाचारितापूर्ण शासन का वैध विरोध भी कुचल डालने में अपना अभीष्ट सिद्ध होता दीखता है।

नये विधान में भारत की एकता और अखण्डता का कायम रहना बड़ी आवश्यक बात होगी। पाकिस्तान-योजना के आविष्कर्ता ही यह बात सब से अधिक अच्छी तरह समझते हैं कि उनकी योजना तर्क और व्यवहार से कोसों दूर है। हिन्दुओं को जो कि भारत की आबादी का तीन-चौथाई भाग है, मुस्लिम लीग देश का विधान तैयार करने का हक देने को तैयार नहीं। वह तो यह भी नहीं चाहती कि भारत भर के हिन्दू और मुसलमान देश के विधान का संयुक्त रूप से निश्चय करें। दोनों ही अवस्थाओं में उसका कहना है कि इस प्रकार अल्पसंख्यकों पर बहुसंख्यकों का अत्याचारपूर्ण शासन हो जायगा। इसके साथ ही उसका दावा है कि जिन प्रांतों में मुसलमानों का प्रबल बहुमत है वहां वे स्वयं करोड़ों अल्पसंख्यक हिन्दुओं के भाग्य-विधायक बन जायंगे और

वहां हिन्दू आत्म-निर्णय के अधिकार की मांग न करने पावेंगे। उस अवस्था में यह अल्पसंख्यकों पर बहुसंख्यकों का अन्यायपूर्ण शासन नहीं होगा, अपितु, यह मुसलमानों द्वारा पृथक् 'मातृ-भूमि' पाने के सिद्धान्तभूत अधिकार का प्रयोग होगा। भारतवर्ष राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टियों से एक है और वह अखण्ड रहेगा। यदि कोई इस एकता में बाधा डालना या भेद डालना चाहेगा तो वह देश-द्रोह के महा अपराध का दोषी होगा और उसका कितनी भी कीमत चुका कर मुकाबला किया जायेगा। मुस्लिम-लीग देशभक्त सन्तानों के बहुमत के संगठित प्रतिरोध के विरुद्ध अकेले ही भारत-भूमि को खण्ड-खण्ड करने में सफल नहीं हो सकती; ब्रिटेन भी अपनी तलवार से भारतमाता का अंग-भंग करके उसके टुकड़े देश का विभाजन करने के इच्छुकों के आगे, डालने की गारण्टी नहीं दे सकेगा।

किन्तु आज जिन प्रान्तों में हिन्दू अल्पसंख्या में हैं वहां ब्रिटिश नीति प्रत्यक्षत: पाकिस्तानी राज को बढ़ावा देने की है। उन प्रान्तों में हिन्दुओं के अधिकार और हित तुच्छ साम्प्रदायिक अवसर-वादिता की बलिवेदी पर चढ़ाये जा रहे हैं।

भारतीय जनता की, और मुसलमानों की ही, भलाई के प्रति मुस्लिम लीग की चिन्ता-विषयक संजीदगी और निष्कपटता की परख के लिए हमने बारबार अपने मतभेद भुला डालने, भावी विधान-सम्बन्धी सब विवादास्पद प्रश्नों को युद्ध के बाद तक स्थगित कर देने और भारतीय राष्ट्र की रक्षा तथा उसके पुनरुद्धार के लिये उसके अमित प्राकृतिक साधनों का उपयोग करने के हेतु तत्काल शासन-सत्ता के सौंपे जाने के लिए संयुक्त मांग करने के प्रस्ताव पेश किये। बातचीत का वह मार्ग अब भी खुला है, पर हमारे शासकों द्वारा प्रतिक्रियावादियों को अपनी राष्ट्र विघाती और स्वार्थपूर्ण मांगों को प्रस्तुत करने में प्रोत्साहन देने के निर्लज्जतापूर्ण रवैये को देखते हुए ऐसे किसी मेलमिलाप की आशा बालू में से तेल निकालने के समान ही है।

आज इसका इलाज यह है कि भारत की आज़ादी की मांग से सहमत सब दलों और वर्गों का देश-व्यापी प्रतिरोध सङ्गठित किया जाये। हमें उन लोगों या पार्टियों की ख़ुशामद करने या उनके आगे-पीछे फिरने से कोई फ़ायदा न होगा

जो कि भारत की प्रगति व स्वाधीनता की परवाह नहीं करते और देश को गुलाम बनाये रखने के लिए अपने शासकों के हाथों की कठपुतली बन रहे हैं। कुछ ऐसे भी दल और वर्ग हैं जो स्वतः छोटे व नगण्य होते हुए भी संयुक्त हो जाने पर मज़बूत और ताक़तवर हो सकेंगे। ये स्वतन्त्र भारत का विधान तैयार करने के आधारभूत सिद्धान्त के लिए देशव्यापी विरोधी मोर्चे में सम्मिलित होकर अच्छा काम कर सकेंगे। ऐसे सङ्गठन का कर्तव्य होगा कि वह राष्ट्र के पुनर्निर्माण विषयक अधिकतम सहमति के प्रश्नों को महत्त्व दिलाये, सहिष्णुता व पारस्परिक सौहार्द-भावना पर बल दे तथा हमारे नागरिक, आर्थिक व राजनीतिक अधिकारों के अपहरण करने के प्रयत्नों का निर्भीकतापूर्वक मुकाबला करे।

आज हमारे देश में अकर्मण्यता और निराशा का बोलबाला है। भारत में इस समय कानून का राज नहीं है। वर्तमान युद्ध-स्थिति का पूरा लाभ उठा कर विदेशी नौकर-शाही की पाशविक प्रवृत्तियों ने राष्ट्रीय भावना का गला घोंटने का काम विविध रूपों में किया है। दुर्भिक्ष और महामारियों ने ६ महीने से भी कम अरसे में २०-३० लाख से भी अधिक मनुष्य को परलोक पहुंचा दिया है। ये लोग एक सभ्य सरकार के ही राज में भोजन, दवा और आश्रय के अभाव में प्राणों से हाथ धो बैठे। यदि मौजूदा दिवालिया, रिश्वतखोर और साम्प्रदायिक मंत्रिमंडल को अगले महीनों में शासन चलाने दिया गया तो मेरे प्रान्त (बंगाल) में ऐसा ही संकट १९४४ में फिर देखने का अवसर आ सकता है। यदि किसी दूसरे देश में ऐसी बदइन्तज़ामी होती तो वहां की जनता खुली बग़ावत कर बैठती। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि ब्रिटिश भारत के इतिहास में इतना अधिक असन्तोष कभी नहीं हुआ जितना कि आज विद्यमान है।

मैं निराशा की बात कहकर समाप्त करना नहीं चाहता। हमें हिन्दुओं में ही अनेक भेद-प्रवृत्तियों का अन्त करना है। हमें भारत के विभाजन की मांग के बाद निरन्तर बढ़ते हुए मतान्धतापूर्ण उत्साह के विरुद्ध लड़ना होगा। हमें हिन्दू शक्ति और देश के सार्वजनिक जीवन के राष्ट्रीय अंश का निरन्तर ह्रास करने में तत्पर शासक-वर्ग के प्रत्याघातों से जाति की रक्षा करनी होगी।

हमारे सामने जो काम है वह कठिनाइयों और निराशाओं से परिपूर्ण है। क्या इतिहास में तुच्छ भिखमंगों की दशा में सुख माननेवाली और थोड़ी-सी

क्षणिक प्राप्ति के लोभ में अपनी मान-मर्यादा की बलि देने वाली किसी गुलाम जाति ने कभी आज़ादी हासिल की है? भारतीय इतिहास में हमें ऐसे यथेष्ट प्रमाण उपलब्ध होते हैं कि यहां की प्रत्येक सन्तति के मनुष्यों में ऐसे मानव हुए हैं जिनकी तुलना किसी भी देश और स्थान के महान् पुरुषों से सुगमतापूर्वक की जासके; पर भारतीय जनता किसी भी मूल्य पर अपनी राजनीतिक स्वाधीनता की रक्षा करने के लिये तीव्र भावना से अनुप्राणित नहीं हुई। इसलिये भारत के राजनीतिक और अन्य दलों के नेताओं के आगे, राष्ट्रीय संगठन की उदात्त भावना के साथ, यह प्रमुख कार्य है कि वे स्वाधीनता के प्रेम को कोने-कोने तक फैला दें। जनता जान जाये कि स्व-शासन भारत का पुरातन अधिकार है और यह दृढ़ निश्चय उसमें घर कर जाये कि यदि आज़ादी नसीब नहीं होती तो जिन्दगी मौत बराबर है।

हम जनता से मर्मस्पर्शी अपीलें करके या अपने विरोधियों को गालियां देकर अपने लक्ष्य पर नहीं पहुँच सकते; इसके लिए तो हमें सामाजिक व आर्थिक उत्थान का कार्यक्रम अमल में लाते हुए धर्म को मानवीय सभ्यता के उत्कर्ष के लिए सच्चा सङ्गठनात्मक तत्त्व बनाना होगा। इसी की मज़बूत नींव पर भारत की स्वतन्त्रता का निर्माण हो सकेगा। हमें इस दृढ़ विश्वास से बल पाकर उत्साहपूर्वक कार्य करना चाहिए कि शक्ति, अधिकार, साम्राज्य और प्रभाव से शासित संसार में, अपने प्राचीन गौरव के अनुरूप यह प्रतिष्ठा भारत को ही प्राप्त होगी कि वह न केवल एक पद-दलित और शोषित जाति के पुनरुद्धार के लिए एक उच्चतर और उत्कृष्टतर सभ्यता के विकास में हाथ बटाये बल्कि मन, शरीर, और आत्मा के सह-भाव की ओर प्रगति का भी बीड़ा उठाये। इसके बिना स्थायी शान्ति और स्वतन्त्रता सभ्य संसार के किसी भी कोने में स्थिर नहीं हो सकती॥ वन्देमातरम्

२०-२-४४

पञ्चम अखिल भारतीय आर्य महा सम्मेलन के अवसर पर आयोजित आर्य कुमार सम्मेलन देहली के सभापति पं० धर्मदेव जी सिद्धान्तालङ्कार, विद्यावाचस्पति, साहित्य भूषण, स० मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का

२१-२-४४ को मध्यान्ह दिया

अभिभाषण

ओं पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन । स्तोतारस्त इह स्मसि ॥
ओं सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते ।
त्वामभिप्रणोनुमो जेतारमपराजितम् ॥

प्रिय आर्य कुमार बन्धुओ !

मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ कि आज आपने इस आर्य-कुमार सम्मेलन के सभापतित्व का गौरव देकर मुझे अनुगृहीत किया है। कुमारों पर समाज, जाति और राष्ट्र का भविष्य निर्भर है। यदि वे सच्चा आर्य जीवन व्यतीत करने वाले हों तो निस्सन्देह समाज उन्नति की चरम सीमा को प्राप्त कर सकता है। भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् (जिसकी ओर से इस पवित्र यज्ञ के अवसर पर इस सम्मेलन को आयोजित किया गया है) का उद्देश्य "कुमारों तथा युवकों को ईश्वर, वैदिक धर्म और देश के सच्चे और क्रियाशील उपासक बनाना है" जो अत्यन्त अभिनन्दनीय है। मेरा यह विश्वास है कि 'आर्य' शब्द जो इस सम्मेलन के नाम के साथ 'कुमार' से पूर्व लगा हुआ है इतना स्फूर्तिदायक और उत्तम है कि यदि कुमार और युवक उसके यथार्थ तत्त्व को समझ लें तो उनका जीवन अत्यन्त पवित्र, आदर्श रूप और अनुकरणीय हो सकता है। वेदों में "आर्या व्रता विसृजन्तो अधिक्षमि" इत्यादि वाक्यों द्वारा पृथ्वी पर उत्तम व्रतों (शुभ सङ्कल्पों और कार्यों) को धारण करने वालों को आर्य और अव्रत अर्थात् अहिंसा, सत्य, परोपकारादि व्रतों से रहित व्यक्तियों को दस्यु के नाम से कहा गया है। प्राचीन संस्कृत साहित्य तथा शब्द कल्पद्रुमादि संस्कृत कोषों में आर्य शब्द के अर्थ "पूज्यः, श्रेष्ठः, धार्मिकः, धर्मशीलः, मान्यः, उदारचरितः, शान्त चित्तः, न्यायपथावलम्बी, सततं कर्तव्य कर्मानुष्ठाता" देते हुए वसिष्ठ स्मृति के निम्न श्लोक को उद्धृत किया गया है जो सुवर्णाक्षरों में लिखने योग्य है।

कर्तव्यमाचरन् कार्यम्, अकर्तव्यमनाचरन्।
तिष्ठति प्रकृताचारे, स तु आर्य इति स्मृतः ॥

अर्थात् आर्य वह कहलाता है जो कर्तव्य कर्म का सदा आचरण करता हो और अकर्तव्य कर्म अर्थात् पापादि से दूर रहता हो तथा जो पूर्ण सदाचारी हो।

महाभारत उद्योग पर्वान्तर्गत विदुर नीति में इस सम्बन्ध में निम्नलिखित दो महत्त्वपूर्ण तथा स्मरणीय श्लोक पाये जाते हैं:—

न वैरमुद्दीपयति प्रशान्तं, न दर्पमारोहति नास्तमेति।
न दुर्गतो ऽस्मीति करोत्यकार्यं, तमार्य शीलं परमाहुरार्याः ॥ ११७
न स्वे सुखे वै कुरुते प्रहर्षं, नान्यस्य दुःखे भवति प्रहृष्टः।
दत्वा न पश्चात् कुरुतेऽनुतापं, स कथ्यते सत्पुरुषार्य शीलः ११९
विदुर नीति

अर्थात् आर्य वह है जो शान्त हुए वैर को बढ़ाता नहीं, न अभिमान करता है और न निराश होता है। दुर्गति को प्राप्त होने पर भी जो पाप कार्य कभी नहीं करता। जो सुख प्राप्त होने पर बहुत अधिक प्रसन्नता नहीं दिखाता वा आपे से बाहर नहीं हो जाता, जो दूसरों के दुःख में कभी प्रसन्न नहीं होता, दान देकर जो पश्चात्ताप नहीं करता उसे आर्य कहा जाता है।

इस विषय में वर्त्तमान समय के जगद्विख्यात विचारक और योगी श्री अरविन्द ने 'Arya' नामक अंग्रेजी मासिक पत्र में निम्नलिखित अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शब्द वेदादि सत्य शास्त्रों के आधार पर लिखे थे:—

"The word Arya expresses a particular ethical and social ideal of well-governed life, candour, courtesy, nobility, straight dealing, courage, gentleness, purity, humanity, compassion, protection of the weak, liberality, observance of social duty, eagerness for knowledge, respect for the wise and the learned and the social accomplishments. There is no word in human speech that has a nobler history."

"The Arya is he who strives and overcomes all outside him and within him that stands opposed to human advance. Self conquest is the first law of his nature. He overcomes

mind and its habits and he does not live in a shell of ignorance, inherited prejudices, customary ideas, pleasant opinion, but knows how to seek and choose, to be large and flexible in intelligence, even as he is firm and strong in his will, for in everything he seeks truth, in everything right, in everything height and freedom. **The Arya is a worker and a warrior, Always he fights for the coming of the Kingdom of God within himself and the world."**

(Arya Vol I P. 63).

समय संकोच के कारण इस सारे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ का अनुवाद देना असम्भव है। भावार्थ यह है कि 'आर्य' शब्द के अन्दर उदारता, नम्रता, श्रेष्ठता, सरलता, साहस, पवित्रता, दया, निर्बलसंरक्षण, ज्ञान के लिए उत्सुकता, सामाजिक कर्तव्य पालन आदि सब उत्तम गुणों का समावेश हो जाता है। मानवीय भाषा में इससे उत्तम और कोई शब्द नहीं। आर्य आत्म संयमी और आन्तरिक तथा बाह्य स्वराज्य प्रेमी होता है। यह अज्ञान, बन्धन तथा किसी प्रकार की दासता में रहना पसन्द नहीं करता। उसकी इच्छा शक्ति दृढ़ होती है। प्रत्येक वस्तु में वह सत्य, उच्चता तथा स्वतंन्त्रता की खोज करता है। वह एक कार्यकर्ता और योद्धा होता है जो अपने अन्दर और जगत् में ईश्वर के राज्य को लाने के लिए अज्ञान अन्याय तथा अत्याचारादि के विरुद्ध युद्ध करता है।

प्रिय आर्यकुमारो! इससे बढ़कर मैं आपके सामने आर्यत्व का सुन्दर लक्षण क्या कर सकता हूँ जिसे अपने अन्दर धारण करते हुए ही आप समाज और राष्ट्र के सच्चे सेवक बन सकते हैं। आपमें से प्रत्येक को यह प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि वह कम से कम २५ वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्य के नियमों का अधिक से अधिक पालन करके अपनी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों का विकास करेगा और उसके पश्चात् ही गृहस्थाश्रम में प्रवेश करेगा। प्रत्येक आर्य कुमार को अपना जीवन अधिक से अधिक पवित्र और सर्वव्यसन रहित बनाने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिये। इसीलिए ब्रह्मयज्ञ सन्ध्या और धार्मिक ग्रन्थों के स्वाध्याय का दृढ़ नियम रखने की आवश्यकता है। वेदादि सत्य शास्त्रों के अध्ययन के अतिरिक्त वर्तमान युग के सबसे बड़े योगी और सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमर-

कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' का स्वाध्याय प्रत्येक आर्य कुमार को अवश्य ही करना चाहिये जिससे वैदिक धर्म के तत्त्वों को शुद्ध रूप में समझने के अतिरिक्त वे आर्य संस्कृति से भली भाँति परिचित हो जाएं। इस पवित्र धर्मग्रन्थ की सब आक्रमणों से रक्षा के लिये आर्यकुमारों को बड़े से बड़े त्याग तथा बलिदानार्थ उद्यत रहना चाहिये। गत लगभग २५ वर्षों से आर्यकुमार परिषद् की ओर से धार्मिक परीक्षाओं का जो क्रम चल रहा है वह स्वाध्याय की दृष्टि से अत्यंत प्रशंसनीय है और आर्य कुमारों तथा कुमारियों को अधिक से अधिक संख्या में उनमें सम्मिलित होकर लाभ उठाना चाहिये। जिस प्रकार उत्तम प्राकृतिक भोजन शारीरिक शक्ति के विकास के लिये आवश्यक है वैसे ही धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय मानसिक और आत्मिक शक्ति की वृद्धि के लिये अत्यंत आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य है इस बात को कभी न भूलना चाहिये। दहेज की कुप्रथा से कितने परिवारों का नाश हुआ और अब भी होरहा है इस बात को सब जानते ही हैं। इस प्रथा को दूर करने के लिये आर्य-कुमार परिषद् विशेष आन्दोलन करती रही है यह बड़ी प्रसन्नता की बात है उसे और भी अधिक प्रबल और देश व्यापी बनाने की आवश्यकता है जिसमें सब आर्य कुमारों और कुमारियों को पूर्ण सहयोग देना चाहिये। जाति भेद, अस्पृश्यता (अछूतपन) बाल, वृद्ध तथा विषम विवाह आदि की कुप्रथाएं जो समाज को घुन की तरह खा रही हैं उनके विरुद्ध निर्भयतापूर्वक प्रबल आन्दोलन करना और इस शुभ उद्देश्य की पूर्ति के लिये आने वाली विपत्तियों को सहर्ष झेलना आर्य कुमारों और कुमारियों का परम कर्तव्य है।

प्रिय आर्य कुमार बन्धुओ !

आप सेवा और त्याग की पवित्र भावना को रखते हुए आगे बढ़ते जाइये। आर्य वीर दलों में सम्मिलित होकर व्यायामादि द्वारा अपनी शारीरिक शक्ति को विकसित करते हुए समाज और राष्ट्र की सेवा और रक्षा के कार्य में अपने तन मन धन को समर्पित कर दीजिये। सर्वशक्तिमान् भगवान् आपके सहायक होंगे। महर्षि दयानन्द जी, अमर धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज डा० केशवदेवजी शास्त्री जैसे दिवं गत मान्य आर्य नेताओं का आशीर्वाद आपके साथ है। अन्त में उपनिषत्कार ऋषियों के स्फूर्तिदायक शब्दों में मैं आपसे इतना ही निवेदन करना चाहता हूँ कि—

"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत।" उठो जागो और श्रेष्ठ विद्वानों के पास जाकर उत्तम ज्ञान प्राप्त करो तथा उसे आचरण में लाकर जगत् के सामने एक उच्च आदर्श रखो। भगवान् हम सबको शक्ति दें कि हम अपने जीवनों को आदर्श आर्य जीवन बनाने में समर्थ हो सकें। मैं आप सबको इस गौरवास्पदपद के लिये पुनः हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।।

आर्य नगर
२१-२-४४

धर्मदेव विद्यावाचस्पति

आर्य कुमार सभा का "छठा वार्षिकोत्सव"

आर्य कुमार सभा डी. ए. वी. हायर सैकण्डरी स्कूल नई देहली का छठा वार्षिकोत्सव ता० १६, १७, १८ और १९ अप्रैल १९४४ को बड़े समारोह से मनाया जावेगा। उत्सव में बड़े २ सन्यासी, महात्मा, उपदेशकों व भजनीकों को पधारने के निमन्त्रण दिए गये हैं। इस अवसर पर कई महत्व पूर्ण सम्मेलन तथा महात्मा हंसराज टूर्नामैन्टस आदि भी होंगे।

देवव्रत धर्मेन्दु
संचालक—
आर्य कुमार सभा नई देहली

पंचम अखिल भारतीय आर्य्य महासम्मेलन देहली के अवसर पर आयोजित आर्यप्रचारक सम्मेलन के सभापति श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय प्रधान संयुक्तप्रान्तीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा तथा उपप्रधान आर्य्य सार्वदेशिक सभा का

२२-२-४४ की रात को दिया

अभिभाषण

प्रचार के प्रेमी बहनो और भाइयो !

अखिल भारतीय आर्य्य सम्मेलन के अवसर पर आपने इस आर्य प्रचारक सम्मेलन का पृथक् अधिवेशन करके वस्तुतः एक बहुत बड़ी कमी को पूरा किया है। प्रचार हमारी समस्त प्रगतियों का मूल है। हम अपनी संस्थाओं पर करोड़ों रुपये केवल इसीलिये व्यय करते हैं कि प्रचार हो। आर्य्य समाज, प्रतिनिधि सभायें, सार्वदेशिक सभा, परोपकारिणी सभा, अन्यान्य सम्मेलन और अनेकों विभाग जिनके कारण आर्य समाज ने ख्याति प्राप्त की है सभी प्रचार-मूलक हैं। अतः प्रचार की ओर हमको सबसे अधिक ध्यान देना चाहिये।

प्रचार नाक की सीध सरल मार्ग नहीं है। यह बड़ा कठिन और पेचदार कार्य है। हम किसी निर्दिष्ट प्रणाली को यह नहीं कह सकते कि प्रचार का यही अच्छा ढंग है। हम नहीं कह सकते कि जिस ढंग से ऋषि दयानन्द ने प्रचार किया उसी का हमको अवलम्बन करना चाहिये, अथवा जिस मार्ग के स्वामी श्रद्धानन्द या स्वामी दर्शनानन्द अनुगामी हुए वही हमारे लिये भी श्रेयस्कर होगा। क्योंकि प्रचार के लिए देश, काल और परि- स्थिति का परिज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। प्रचारकों के लिये अत्यन्त कठिन और अत्यन्त आवश्यक बात यही है कि जिस परिस्थिति में उनको प्रचार करना है उसका भली भांति अध्ययन कर सकें और उसी के अनुकूल अपने को परिवर्तित कर सकें। प्रचारक रबर के सदृश लचकीला होता है। वह अपने ढंग को नित्य बदलता रहता है।

जिस प्रकार डाक्टर को रोगी के रोग तथा प्रकृति का वास्तविक ज्ञान होना चाहिये, केवल पुस्तकें देखकर चिकित्सा करना हानिकारक है इसी प्रकार प्रचारक भी जनता की योग्यता, प्रवृत्ति तथा तत्सम्बन्धी बीसियों बातों को दृष्टि में रक्खे बिना प्रचार कार्य में सफली भूत नहीं हो सकता।

केवल वक्तृता शक्ति या लेखन शक्ति ही प्रचारक के लिए पर्याप्त नहीं हैं। ये अच्छे साधन अवश्य हैं परन्तु केवल साधन मात्र। वह भी अनिवार्य साधन नहीं है। बड़े अच्छे वक्ता भी प्रचारक नहीं और बिना वक्तृत्व शक्ति के भी आप प्रचारक हो सकते हैं।

प्रचारक को सबसे प्रथम तो उन सिद्धान्तों का अत्यन्त स्पष्ट ज्ञान होना चाहिये जिनका वह प्रचार करना चाहता है। इस विषय में शाब्दिक भूल भुलाइयाँ बहुत वही अड़चन डालती हैं। कभी कभी हमको अपनी समझ के सम्बन्ध में भी भ्रम हो जाता है। कभी कभी हम समझते हैं कि समझते हैं और वस्तुतः नहीं समझते। अतः प्रचारक को स्वाध्याय, सत्संग, शंका समाधान तथा विचार द्वारा सिद्धान्तों का स्पष्टी करण करते रहना चाहिए। बहुधा अच्छे व्याख्याता स्वाध्याय न करके जनता को भ्रम में डाल देते हैं। नीम हकीम खतरे जान और नीम मुल्ला खतरे ईमान। यह आवश्यक नहीं कि आप पूर्ण ज्ञानी ही हों। आवश्यकता यह है कि जिस बात का प्रचार करें उसका स्पष्ट ज्ञान हो। जिसका स्पष्ट ज्ञान न हो उसका प्रचार न करें। प्रत्येक पुरुष को प्रत्येक बात का प्रचारक नहीं होना चाहिये।

वैदिक धर्म के प्रचारकों को स्वाध्याय करते हुए एक बात से बचना चाहिए। बाह्य साहित्य पढ़ते समय उनको ध्यान रखना चाहिए कि अपने सिद्धान्तों को बाहिरी रङ्ग में न रङ्ग जाने दें। प्रायः देखा गया है कि हम भिन्न २ वादों का अध्ययन करते समय अपने को उन्हीं के रंग में रंग देते हैं। मैंने कई पुस्तकें देखी हैं जो साम्यवाद आदि पर लिखी गईं। इन में यद्यपि वेद-मन्त्रों का प्रमाण दिया है परन्तु बिना जाने दूसरों के रंग में रंग गये हैं और अपने सिद्धान्त का लाघव हो गया है। हमको अपने सिद्धान्तों द्वारा दूसरों को प्रभावित करना है न कि उनसे प्रभावित हो जाना।

प्रचारक के लिये सत्य पर निष्ठा और सदाचरण तो अनिवार्य ही हैं। आचरण की निर्बलता अन्य सब गुणों पर पानी फेर देती है। यदि आप अपने को इस विषय में निर्बल समझते हैं तो विद्वान् और वक्ता होने पर भी प्रचार के काम से दूर रहिये। जनता का और आप का दोनों का हित इसी में है।

प्रचारक को उन लोगों से प्रेम होना चाहिए जिनमें वह प्रचार करना चाहता है। कोई डाक्टर रोगी से घृणा करके उसको चंगा नहीं कर सकता,

कोई अध्यापक विद्यार्थी से घृणा करके उसको पढ़ा नहीं सकता और कोई उपदेशक लोगों से घृणा करके उनको सुधार नहीं सकता। इसलिए प्रचारकों को उन्हीं लोगों में अधिक प्रचार करना चाहिए जिनका हित उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य है। कोई डाक्टर अपने रोगी को चिढ़ाता नहीं, इसी प्रकार किसी उपदेशक को उन लोगों को चिढ़ाना नहीं चाहिए जिनमें वह प्रचार करना चाहता है। सुधार धीरे २ और सहानुभूति के साथ ही हो सकता है।

आर्य समाज का कार्य्य क्षेत्र अभी तक अधिकतर सनातनधर्मी हिन्दुओं में ही रहा है। यद्यपि शास्त्रार्थ आदि ईसाई मुसलमानों से भी होते हैं और आर्य समाज के पुरोगम में 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' है परन्तु हमने अभी यह सोचा नहीं कि मुसलमानों में कैसे काम करना चाहिए। इसके लिए कुछ भिन्न ही सोचना पड़ेगा। आजकल की प्रथा यह है कि आँख के डाक्टर अलग होते हैं, दाँत के अलग और गले के अलग। यह विशेषज्ञ कहलाते हैं। इसी प्रकार प्रचारक भी भिन्न २ होने चाहियें, एक मनुष्य एक ही परिस्थिति का विशेषज्ञ हो सकता है। ईसाई मिशनरियों ने प्रचार की समस्या को वैज्ञानिक रीति से सोचा है। वह भिन्न २ देशों और भिन्न २ धर्मों में प्रचार करने वालों को भिन्न २ प्रकार से शिक्षित बनाते हैं। हमारे यहां अन्धाधुन्धी है। जो बोल सकता है वही प्रचारक है। अतः कभी २ लाभ के स्थान में हानि हो जाती है।

प्रचारक को थोड़ा बहुत क़ानून का भी ज्ञान होना चाहिए। विशेष बातें तो अवश्य ही जाननी चाहियें जिससे प्रचार में कोई अनिष्ट बाधा न पड़ने पावे।

प्रचारक का कार्य बहुत कठिन है। इसके कर्तव्य बहुत हैं और अधिकार कुछ नहीं, इससे सब आशा रखते हैं और उसको किसी से आशा रखने की आज्ञा नहीं, यदि यह किसी के अवगुणों को बताता है तो अप्रसन्नता का भाजन बनता है। यदि इसमें कोई छोटा-सा भी अवगुण होता है तो लोग उसको खींचतान कर बड़ा बना देते हैं, परन्तु उपदेशक को यही एक आभ्यन्तर सान्त्वना है कि उसका कार्य्य पुण्यतम है। कीर्ति मिले या अपकीर्त्ति, यश का लाभ हो या अयश का, उसे अपना कर्त्तव्य पालना ही है। परन्तु धार्मिक समाज का कर्त्तव्य है कि प्रचारकों को हर प्रकार की सुविधायें पहुंचाई जावें। उनको भोजन छादन का कष्ट न हो, उनका सम्मान पर्याप्त मात्रा में हो, उनको सीमा से अधिक आत्मत्याग

की आवश्यकता न पड़े। यदि हम वास्तविक रीति से अतिथि यज्ञ करने लगें तो यह असुविधा दूर हो सकती है। उपदेशकों के स्वाध्याय के लिए बड़े बड़े समाजों में अच्छे पुस्तकालय होने चाहियें और उनके साथ अतिथि गृह भी हों जहाँ एक प्रामाणिक उपदेशक एक सप्ताह रह सके। सभाओं की ओर से उपदेशकों के परिवार की सहायता के लिए निधियां भी स्थापित होनी चाहिएं। वर्तमान परिस्थिति को देखकर कुछ सुझाव आपके समक्ष रखता हूँ।

(१) संन्यासी वर्ग प्रचार का मुख्यतम साधन हैं। आज कल साधुवर्ग का मत है कि सन्यासियों को चलते ही रहना चाहिये। मेरी सम्मति में यदि कुछ विशेष संन्यासियों को छोड़कर जिनका कार्य्य-क्षेत्र अन्तःप्रान्तीय या अन्तर्राष्ट्रीय हो सकता है, साधारण संन्यासियों को अपना कार्य्यक्षेत्र चार-पांच ग्रामों के बीच में बनाना चाहिये और वहां कम से कम एक वर्ष तक जम प्रचार करना चाहिये। चलता-फिरता प्रचार तो वैसा ही है जैसे किसान एक खेत में एक मुट्ठी बीज डाल कर आगे बढ़ जाय और पीछे से बीज को चिड़ियां चुग जायं। उत्तम कृषक के चार मुख्य काम हैं—(१) क्षेत्र को जोतना (२) तब बीज बोना (३) सिंचाई करना (४) अनिष्ट घास तथा चिड़ियों आदि से रक्षा करना। यह उपमा उपदेशक पर भी पूर्णरूपेण लागू होती है।

(२) सभी प्रचारकों को ग्रामों पर अधिक बल देना चाहिये। उनके धार्मिक विचारों के अतिरिक्त रहन-सहन और ग्राम-सुधार सम्बन्धी अन्य बातों पर आवश्यक बल देना चाहिये। हम को स्मरण रहे कि हमारा काम ग्राम-वासियों के जीवन को उच्च बनाना है।

(३) ग्रामों में यदि छोटी छोटी पाठशालायें खुल जायं जिनमें साधारण लिखने-पढ़ने और गणित (Three R's) के अतिरिक्त सामान्य धार्मिक शिक्षा दी जाय तो एक बहुत बड़ी कमी दूर हो सकती है।

(४) सार्वदेशिक सभा तथा प्रान्तीय सभाओं की ओर से भिन्न-भिन्न श्रेणियों में परिस्थिति के अनुसार कार्य करने के लिये छोटी-छोटी उपसमितियाँ होनी चाहियें जिनके सदस्य अपनी योग्यता और प्रवृत्ति के अनुसार अधिक से अधिक सफलता प्राप्त कर सकें। उदाहरण के लिये कुछ की ओर यहां संकेत किये देता हूँ:—

(क) रियासतों, जमीदारों और शासन वर्ग के लिये।

(ख) उच्च शिक्षणालयों, कालेज, यूनीवर्सिटी आदि के लिये।

(ग) विशेष सम्प्रदायों या धर्मों जैसे ईसाई, मुसलमान आदि के लिये।

(घ) दलित जातियों के लिये।

(ङ) जरायम-पेशा (Criminal Tribes) वालों के लिये इत्यादि।

(५) सार्वदेशिक सभा की ओर से उच्चकोटि के प्रचारक भारतवर्ष या अन्य देशों के ऐसे केन्द्रों में रहने चाहियें जहाँ रह कर वे बाह्य जगत् के प्रधानतम वर्ग के सम्पर्क में आ सकें।

ये कुछ विचार संक्षेप से दिये जाते हैं। अलमति विस्तरेण।

आर्य नगर २२-२-४४

वीर प्रतिज्ञा

हम देश के हैं वीर!

संसार को हम दिखला देंगे
हर एक को यह सिखला देंगे
ऐसे चलते हैं तीर!
कर्तव्यों पर मिट जायेंगे
रण में न तनिक घबरायेंगे
हम हैं पाषाण शरीर!
कदम बढ़ा पीछे न मुड़ेंगे
कोमल तन बलिदान करेंगे
हम विकट वीर रणधीर!
अरे! हम स्वदेश के वीर—
....

बाल मुकुन्द साहित्यालंकार।

गुरुकुल इन्द्र प्रस्थ का वार्षिकत्सव

२४-२५-२६ फ़रवरी को बड़े समारोह से गुरुकुल भूमि में मनाया जाएगा जिसमें सुप्रसिद्ध आर्य संन्यासियों और विद्वानों के व्याख्यान तथा अनेक उपयोगी सम्मेलन, सत्यार्थ प्रकाश प्रदर्शनी, धनुर्विद्या—व्यायाम प्रदर्शनादि होंगे। सब सप्रेम निमन्त्रित हैं। धर्मवीर वेदालङ्कार मुख्याधिष्ठाता

पंचम अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर आयोजित

आर्य कुमार सम्मेलन

ता० २१ फ़रवरी को दोपहर के १॥ बजे से मुख्य पंडाल में दस हजार जनता की उपस्थिति में आर्य कुमार सम्मेलन का विशेष अधिवेशन श्री पं० धर्मदेवजी विद्यावाचस्पति स० मन्त्री सार्वदेशिक सभा के सभापतित्व में हुआ। आरम्भ में श्री धर्मवीर जी प्रेमी ने स्वागताध्यक्ष पद से भाषण देते हुवे आर्य कुमारों से अपील की कि आर्य जगत् को सत्यार्थप्रकाश के प्रश्न पर जो चुनौती दी गई है उसे स्वीकार करें। आपने बतलाया कि यदि आर्य कुमार सत्यार्थप्रकाश का गम्भीर अध्ययन करके उसको अपनी स्मृति में लेलें तो आर्य जगत् उत्साह के साथ घोषणा कर सकेगा कि हमारे इतने जीवित सत्यार्थप्रकाश रहते हुए सत्यार्थप्रकाश को नष्ट नहीं किया जा सकता।

पं० धर्मदेव जी ने सभापति के आसन से अपना महत्त्वपूर्ण भाषण पढ़ते हुए आर्य कुमारों को ईश्वर, वैदिक धर्म तथा देश के सच्चे और क्रियाशील उपासक जीवन बनाने पर बल दिया। आपने जाति भेद, अस्पृश्यता बाल वृद्ध, तथा विषम विवाह आदि की कुप्रथाएं जो समाज को घुन की तरह खा रही हैं उनके विरुद्ध निर्भयतापूर्वक प्रबल आन्दोलन करने के लिये आर्य कुमारों तथा कुमारियों को प्रेरित किया। सम्मेलन में सत्यार्थप्रकाश, दहेज प्रथा, ब्रह्मचर्य्य तथा स्वाध्याय के सम्बन्ध में प्रस्ताव स्वीकृत किये गये। एक प्रस्ताव इस आशय का भी स्वीकृत किया गया कि निर्वाचन में कुमार परिषद की परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने वाले कुमारों को विशेषता दें।

देवीदयाल उपमन्त्री

अखिल भारतीय पंचम आर्य सम्मेलन देहली के स्वीकृत प्रस्ताव

१. शोक प्रस्ताव

यह अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन निम्न लिखित आर्य जाति के नेताओं तथा अन्य उत्साही कार्यकर्ताओं व देवियों के देहावसान पर दुःख प्रकाशित करते हुये उनकी आर्य जाति के लिये की गई सेवाओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता है तथा भगवान् से इन दिवंगत आत्माओं की सद्गति के लिये प्रार्थना करता है:

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के समस्त हुतात्मा (शहीद), श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज, श्री प्रो० शिवदयालु जी एम० ए० उपप्रधान पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री कुंवर हुक्म सिंह जी भूत पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा, श्री स्वामी शंकरानन्द जी, श्री भक्त फूल सिंह जी, श्री गुरुदित्तामल जी, श्री आदि पुड्डी सोमनाथ रावजी मद्रास, श्री पुट्टैया जी मैसूर, श्री प० देवेन्द्र नाथ जी शास्त्री (संयुक्त प्रांत) श्री सत्यमूर्ति जी प्रधान, दक्षिण भारत आर्य सम्मेलन मद्रास श्रीमती सुवीरा देवी जी धर्मपत्नी डा० केशव देव जी शास्त्री । श्री महादेव जी देसाई, श्री रणजित् सिंह सीताराम जी पंडित, श्री कैप्टेन रामचन्द्र जी संस्थापक दयानन्द मैडिकल मिशन मसूरी, श्री ठा० नत्था सिंह जी भजनोपदेशक, श्री चौ० तेज सिंह जी, श्री धर्म सिंह जी, श्री आचार्य राम देव जी, श्री डा० बाल कृष्ण जी एम० ए० पी० एच० डी०, श्री हौंदराज जी, प्रधान सिन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री बाघूमल जी मन्त्री, सिन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री पं० जगन्नाथ जी निरुक्त रत्न, अमृतसर, श्री कुंवर पालजी भजनीक आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रांत

(सभापति जी द्वारा)

२. स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी पर प्रतिबन्ध

यह अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भू० पू० उपप्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी पर पंजाब सरकार द्वारा लगाये गये प्रतिबन्धों को अत्यन्त अनुचित तथा अनावश्यक समझता है और पंजाब सरकार

से अनुरोध करता है कि उन पर से सब प्रकार के प्रतिबन्धों को हटा कर आर्य जनता के घोर असन्तोष को दूर करे। (सभापति जी द्वारा)

३. विद्यार्य सभा

आर्य समाज के बढ़ते हुये शिक्षा सम्बन्धी कार्य के मार्ग प्रदर्शन और संवर्धन के लिये आवश्यक हो गया है कि बिना किसी विलम्ब के आर्य विद्या सभा की स्थापना की जाये। यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से अनुरोध करता है कि वह शीघ्र से शीघ्र विद्यार्य सभा की योजना बना कर उसे कार्य परिणत करे। (सभापति जी की ओर से)

४. सत्यार्थप्रकाश विषयक

अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन का यह अधिवेशन बड़ी गम्भीरता से अनुभव करता है कि मुस्लिम लीग की ओर से जो कि अपने को राजनीतिक संस्था कहती है, हिन्दुओं को धार्मिक स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप करने का संगठित प्रयत्न किया जा रहा है और सत्यार्थप्रकाश का विरोध इस आन्दोलन का आरम्भ मात्र है।

सत्यार्थप्रकाश में लाखों मनुष्य वैसी ही श्रद्धा और भक्ति का भाव रखते हैं जैसे किसी अन्य धर्म ग्रन्थ के प्रति उसके अनुयायियों का होता है। यह ग्रन्थ ६० वर्ष से जनता के समक्ष है। इसका भारतवर्ष की भिन्न भिन्न भाषाओं में अनुवाद और प्रकाशन हो चुका है और डंके की चोट इसका देश-भर में प्रचार होता रहा है। बहुसंख्यक आर्य समाजों के मंच से यह व्याख्यानों का विषय रहा है और सत्संगों में इसका नित्य पाठ होता है; परन्तु देशवासियों के किसी भी भाग की ओर से कभी इस पर आपत्ति नहीं उठाई गई।

यह सम्मेलन घोषणा करता है कि सत्यार्थप्रकाश में दूसरे मतों की या सम्प्रदायों की समालोचना के रूप में कोई ऐसी बात नही कही गई जो अन्य मतावलम्बियों के धर्म ग्रन्थों में विद्यमान न हो।

कहा जाता है कि सत्यार्थप्रकाश का यह विरोध इस लिये है कि इससे मुसल्मानों की धार्मिक भावना को आघात पहुंचता है परन्तु यह बात ठीक नहीं है। इसके पीछे तो राजनीतिक चाल स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रही है।

आर्य समाज सत्यासत्य का निर्णय शास्त्रार्थ द्वारा करने के लिये सर्वदा उद्यत रहा है। परन्तु आर्य समाज किसी प्रकार भी यह सहन नहीं कर सकता कि किसी को भी बलात् कांट-छांट करने के प्रयोजन से सत्यार्थप्रकाश की जांच करने का अधिकार है। ऐसी जांच का स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि अत्यन्त भीषण आन्तरिक झगड़े उत्पन्न हो जायेंगे और अन्य मतावलम्बियों के धर्म ग्रन्थों की इस प्रकार की समीक्षा के लिये भी द्वार खुल जायेगा।

इस सम्मेलन को आशा है कि न केवल सभी हिन्दू, अपितु अन्य मतावलम्बी भी मुस्लिम लीग के इस आन्दोलन के गम्भीर तथा भयावह परिणाम पर पूर्ण रूपेण विचार करेंगे। सत्यार्थप्रकाश का वर्तमान विरोध केवल आरम्भमात्र है और हिन्दुओं के तथा अन्य मतावलम्बियों के धर्म ग्रन्थों में हस्तक्षेप करने की ओर पहिला पग है। सभी पुरुषों का चाहे वे किसी भी मत, धर्म, सम्प्रदाय या जाति के क्यों न हों कर्तव्य है कि इस आन्दोलन का दृढ़तापूर्वक एवं संगठित रूपेण तत्काल विरोध किया जाये।

यह सम्मेलन स्पष्ट घोषणा करता है कि सामान्यतः समस्त हिन्दू जगत् और विशेषतः आर्य समाज अपनी धार्मिक स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखने के लिये कोई कसर उठा न रखेगा और अपना सर्वस्व त्याग करने के लिये उद्यत रहेगा।

इस सम्मेलन की धारणा है कि मुस्लिम लीग की मांग का मुख्य उद्देश्य यह है कि सरकार और आर्य समाज तथा हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य में गहरा विरोध उत्पन्न हो जाये। इस सम्मेलन का विचार है कि मुस्लिम लीग अपने इस उद्देश्य की पूर्ति में अवश्य विफल होगी।

इस सम्मेलन को पूर्ण आशा है कि ब्रिटिश सरकार जिसकी आरम्भ से ही धार्मिक तटस्थता की निश्चित नीति रही है मुस्लिम लीग के जाल में फंस कर आर्य समाज के धार्मिक अधिकारों में पक्षपात पूर्ण हस्तक्षेप करना कदापि स्वीकार न करेगी।

प्रस्तावक—श्री प० गङ्गाप्रसाद जी एम० ए० प्रधान सार्वदेशिक सभा

अनुमोदक—श्री प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति मन्त्री सार्वदेशिक सभा

समर्थक-गोस्वामी गणेशदत्त जी प्रधान मन्त्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा लाहौर, सरदार विचित्र सिंह जी, बाबा मिलखा सिंह जी, कविराज हरनामदास जी

श्रीस्वामी सत्यानन्द जी, प० बुद्ध देव जी विद्यालङ्कार, कुंवर चांद किरण जी शारदा राजगुरु पं० धुरेन्द्र जी शास्त्री, श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी, पं० ठाकुर दत्त जी शर्मा, श्रीमती अक्षय कुमारी देवी जी इत्यादि।

५. नगरकीर्तन प्रतिबन्ध

यह सम्मेलन संयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार ऋषिबोध सप्ताह के अवसर पर प्रतिवर्ष निकलने वाली आर्य समाज फतेहपुर की प्रभात फेरी की शान्त टोली पर १६।२।४४ को वहां के कुछ मतान्ध मुसलमानों के आक्रमण पर रोष प्रकट करता है तथा उन के इस कार्य को घृणा की दृष्टि से देखता है और सरकार से अनुरोध करता है कि घटना की शीघ्र जाँच कर अपराधियों को उचित दंड देवे। साथ ही इस मामले में अधिकारियों द्वारा निर्दोष आर्यों (हिन्दुओं) की गिरफ्तारी एवं प्रभात फेरी पर लगाये गये प्रतिबन्धों का घोर विरोध करता है। (सभापति जी द्वारा)

६. सत्यार्थप्रकाश निधि

यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के इस निश्चय का समर्थन करता है कि ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश की हर प्रकार के आक्षेपों से रक्षा तथा प्रचार के लिये एक सत्यार्थप्रकाश निधि स्थापित की जावे जिसके लिये इस समय दो लाख रुपये एकत्रित किये जावें।

प्रस्तावक--महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज

अनुमोदक—कुंवर सुखलाल जी

समर्थक—पं० जियालाल जी

७. सत्यार्थप्रकाश दिवस

यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से अनुरोध करता है कि एक सत्यार्थप्रकाश दिवस नियत करे जिस पर सम्पूर्ण भारत के नगरों तथा ग्रामों में प्रतिवर्ष सत्यार्थप्रकाश का पाठ हुआ करे। (सभापति जी की ओर से)

८. पाकिस्तान

इस सम्मेलन की सम्मति में अखंड भारत के टुकड़े करना हर दृष्टि से हानिकारक है और उसका हिन्दुस्थान और पाकिस्तान में विभाजन करने की

योजना का यह सम्मेलन तीव्र विरोध करता है और अखंड शक्ति सम्पन्न केन्द्रीय सरकार का ही होना परमावश्यक समझता है।

प्रस्तावक—माननीय श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त स्पीकर सी. पी. ऐसम्बली

अनुमोदक—पं० चन्द्रगुप्त जी वेदालङ्कार

समर्थक—प्रो० ताराचन्द्र जी एम० ए. (सिन्ध), श्री आनन्दप्रिय जी, श्री नरेन्द्र जी (हैदराबाद)

६ त्रैवार्षिक कार्य-क्रम विषयक

यह सम्मेलन भावी तीन वर्षों के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उद्घोषित कार्यक्रम को निम्न लिखित रूप में समर्थन करता है;

१. स्वाध्याय, वैदिक पंचमहायज्ञ तथा वैदिक संस्कारादि और सत्संग द्वारा आर्य नर नारियों के व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवनों को उच्च और दृढ़ बनाया जावे।

२. आर्य वीर दल का दृढ़ और व्यापी संगठन बनाया जावे। तीन वर्षों में आर्य वीरों की संख्या कम से कम १ लाख की जावे। आर्य वीर और आर्य वीरांगनाओं के संगठन पर समान रूप से बल दिया जावे।

३. आर्य समाज के संगठन को अधिक व्यापी करने के लिये इस समय में कम से कम ३ हजार नई समाजों की स्थापना की जावे और ५० हजार नये आर्य सभासद् बनाये जावें।

४. ग्रामों में वेदिक धर्म प्रचार पर अधिक बल दिया जावे। प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभायें तथा स्थानीय आर्य समाजें निम्न लिखित तथा ऐसे ही अन्य उपायों से ग्राम प्रचार के कार्य को आगे बढ़ावें।

(क) ग्राम प्रचार मंडलियों द्वारा।

(ख) ओषधिवितरण तथा अन्य सेवा कार्यों द्वारा।

(ग) ग्रामों में प्रारम्भिक शिक्षणालय स्थापना द्वारा।

५. दलित और आदि वासी कहे जाने वाली जातियों में उच्च जीवन और समानता के वैदिक सिद्धान्तों का क्रियात्मक प्रचार करके उन्हें आर्य जाति का दृढ़ अंग बनाने का यत्न किया जावे। सब आर्य सामाजिक संगठनों को विशेष यत्न करके आसपास के हल्कों में बसी हुई उन पिछड़ी हुई जातियों को आर्य समाज के दायरे में लाने का भरसक यत्न करना चाहिये।

६. यह सम्मेलन आर्य जनता से अनुरोध करता है कि वह गोरक्षा के कार्य को संगठित रूप में बढ़ावे।

७. यह सम्मेलन आर्य जनता, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य संस्थाओं तथा आर्य विद्वानों से अनुरोध करता है कि वे अपने सब कार्यों को आर्य भाषा (हिन्दी) में ही करें।

८. यह सम्मेलन सार्वदेशिक सभा से अनुरोध करता है कि वह वैदिक धर्म के प्रचारार्थ भिन्न २ भाषाओं में व्यापक, विस्तृत और आकर्षक वैदिक साहित्य का निर्माण करावें।

९. ऐसे प्रान्तों में जहाँ आर्य प्रतिनिधि सभायें नहीं है अथवा शिथिल अवस्था में हैं प्रचार कार्य को बढ़ाया जाये और जिन भील थिया आदि जातियों में आर्य धर्म का सुगमता से प्रचार किया जा सकता है उनमें विशेष रूप से कार्य किया जावे।

आगामी तीन वर्षों का यह स्थायी कार्य-क्रम होगा। समय समय पर नई परिस्थितियों के अनुसार जिन कार्यों की आवश्यकता होगी उनके सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा उसी समय उचित आदेश देती रहेगी। कार्य क्रम की प्रगति की देखरेख के लिये सभा प्रान्तिक सभाओं से त्रैमासिक विवरण मंगाती रहेगी।

प्रस्तावक—श्री पं० महेन्द्रप्रतापजी शास्त्री मन्त्री संयुक्त प्रान्तीय आर्य-प्रतिनिधि सभा

अनुमोदक—श्री पं० भीमसेनजी विद्यालङ्कार मन्त्री पंजाब आर्य-प्रतिनिधि सभा

समर्थक—श्री पं० रामदत्तजी M. A. L. L. B. लखनऊ

१० हैदराबाद राज्य के सम्बन्ध में

यह सम्मेलन निजाम हैदराबाद की गवर्नमेंट का ध्यान इस तरफ आकर्षित करना अत्यन्त आवश्यक समझता है कि उन आश्वासनों को लक्ष्य में रखते हुये जो उस गवर्नमेंट ने आर्य सत्याग्रह के पश्चात् अपनी २२ जुलाई और २८ अगस्त १९३९ वाली विज्ञप्तियों द्वारा प्रकट किये थे और जिन में से कुछ अभी तक पूर्ण नहीं हुए हैं उनको पूर्ण किया जाये। इसके साथ ही रियासत भर में धार्मिक प्रचार के कार्य में जो नई कठिनाइयाँ उत्पन्न हो गई हैं उनको दूर कर दिया जाये।

इसी भाव को सामने रखते हुये यह सम्मेलन हैदराबाद गवर्नमेंट का ध्यान इस तरफ आकर्षित करता है कि वह गवर्नमेंट, आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद स्टेट की निम्न मांगों को शीघ्रातिशीघ्र कार्य रूप में परिणत करे।

१. कवायद तकारीब मज़हबी में इस प्रकार के आवश्यक परिवर्तन किये जायें जिससे धार्मिक प्रचार में आने वाली बाधायें दूर हो जायें और उसमें सबके लिये पूर्ण स्वतन्त्रता बनी रहे।

२. धर्म, मन्दिरों के निर्माण के विषय में हैदराबाद राज्य में जो नियम इस समय प्रचलित हैं उनमें ऐसे आवश्यक परिवर्तन कर दिये जायें जिससे रियासत में आर्य समाज मन्दिरों के निर्माण में सुविधा उत्पन्न हो।

३. आर्य समाज के जिन उपदेशकों को अभी तक हैदराबाद स्टेट में प्रवेश की मनाई है उनसे यह मनाई दूर करदी जाये।

४. बम्बई और पंजाब के जिन आर्य समाजी समाचार पत्रों का हैदराबाद रियासत में प्रवेश बन्द है उन पर से यह बन्दिश दूर कर दी जाये।

५. हैदराबाद गवर्नमेंट ने निजाम स्टेट आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र वैदिक आदर्श को सत्याग्रह समय में बन्द कर दिया था और बार बार प्रार्थना करने पर भी यह बन्दिश अभी तक उठाई नहीं गई उसे उठा दिया जाये और साथ ही स्टेट में हिन्दी, उर्दू तथा दूसरी स्थानीय भाषाओं में आर्य प्रतिनिधि सभा को समाचार पत्र प्रकाशित करने की आज्ञा प्रदान की जाये।

६. अब चूंकि हैदराबाद में हिन्दी भाषा भाषियों की और उसको समझने वालों की संख्या बहुत बढ़ गई है इसलिये उसे स्टेट भर में वही स्थान दिया जाये जो दूसरी स्थानीय भाषाओं को दिया गया है।

७. आर्य प्रतिनिधि सभा के उस्मानिया विश्वविद्यालय के आधीन डी. ए. वी. कालेज खोलने के प्रार्थना पत्र को जो अस्वीकृत किया गया है उसको स्वीकृत किया जाये।

प्रस्तावक—श्री पं० विनायकराव जी विद्यालङ्कार बैरिस्टर प्रधान आर्य-प्रतिनिधि सभा हैदराबाद स्टेट

अनुमोदक—श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम. ए. प्रधान आर्य-प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त

११. राष्ट्र निर्माण

यह सम्मेलन निश्चय करता है कि वर्तमान राजनीति और महायुद्ध के बाद राष्ट्र और विश्व के नव निर्माण के लिये बनाई जाने वाली योजनाओं को वैदिक आदर्शों के अनुकूल क्रियात्मक रूप में परिणत करने के लिये आर्य राजनैतिक कार्यकर्ताओं तथा विचारकों का एक संगठन बनाना आवश्यक है जो राजार्य सभा का रूप ग्रहण करे और इस संगठन के निर्माण के लिये निम्न लिखित समिति नियुक्त करता है।

यह सभा किसी दशा में भी आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा के निर्देशों के विरुद्ध कार्य न करेगी।

उपसमिति,

१. श्री पं० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति (संयोजक) २. श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार
३. श्री पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार ४. श्रीयुत पं० ज्ञानचन्द्र जी बी. ए.
५. श्री बा० उमाशंकर जी ६. श्री प्रो० धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री
७. श्री पं० विजयशंकर जी ८. श्री पं० विनायकराव जी विद्यालंकार
९. श्री पं० मिहिरचन्द्र जी धीमान् १०. श्री प्रो० रामसिंह जी एम. ए.
११. श्री चौ० देशराज जी १२. श्रीयुत शिवचन्द्र जी
१३. श्री कुंवर चांदकरण जी शारदा १४. श्री बा० ज्योतिस्वरूप जी
१५. श्री पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति

इस समिति को सदस्य बढ़ाने का अधिकार होगा।

प्रस्तावक—श्री प० मिहिर चन्द्र जी धीमान् मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल आसाम

अनुमोदक—प० धर्म देव जी विद्यावाचस्पति स० मन्त्री सार्वदेशिक आ० प० सभा

१२. जन्म मूलक जाति

यतः जन्म मूलक जाति पांति प्रथा हिन्दू जाति की एकता को नष्ट करके हिन्दू जाति के अधः पतन का मुख्य कारण रही है और कई अन्य प्रकार से यह अत्यन्त हानिकारक सिद्ध हो चुकी है साथ ही वह अनेक सामाजिक सुधारों विशेष कर शुद्धि कार्य और अस्पृश्यता का निवारण में बाधक रही है।

इसलिये :—

१. यह सम्मेलन समस्त आर्य तथा हिन्दू जाति को प्रेरणा करता है कि वे इसके मूलोच्छेद के लिये समस्त सम्भव उपायों को कार्य में लायें।

२. यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा समस्त प्रान्तीय सभाओं को प्रेरणा करता है कि वे क्रियात्मक रूप से जातिपांत के भाव को मिटाने के लिए उचित योजना बना कर विश्वविद्यालयों, कालेजों और जन साधारण में इसके विरुद्ध सुव्यवस्थित रूप में प्रचार करे और आर्य विवाह ऐक्ट को उपयोग में लाकर जात पांत का विचार किये बिना गुणकर्मानुसार विवाहों को प्रोत्साहित करें।

प्रस्तावक—श्री बा० पूर्णचन्द्र जी ऐडवोकेट आगरा

अनुमोदक—श्री दयास्वरूप जी बी० ए०

१३. फौजों में प्रचार

प्रायः फौजों में देखा जा रहा है कि सिखों के लिये सिख, मुसलमानों के लिये मौलवी ईसाइयों के लिये पादरी उनकी धार्मिक जरूरतों को पूरा करने के लिये रखे गये हैं। परन्तु आर्य समाजियों की अच्छी संख्या होने के बावजूद भी कोई आर्य पुरोहित किसी फौज में नहीं है। यह सम्मेलन सरकार से मांग करता है कि दूसरे धर्मों के पुरोहितों की तरह आर्य समाजियों के लिये आर्य पुरोहित नियुक्त किये जायें।

(सभापति जी द्वारा)

१४. देश के राजनैतिक बन्दियों की रिहाई

आर्य सम्मेलन का यह दृढ मत है कि वर्तमान वैधानिक गति अवरोध के रहते देश की जनता का सरकार को सच्चा सहयोग नहीं मिल सकता और जनता के हार्दिक सहयोग के बिना भोजन समस्या का सही हल नहीं हो सकता और न ही युद्ध प्रयत्नों में देश का सच्चा सहयोग प्राप्त हो सकता है। इसलिये यह सम्मेलन बृटिश सरकार से बल पूर्वक अनुरोध करता है कि वह वैधानिक गति अवरोध को दूर करने के लिये कांग्रेस नेताओं को बन्धन मुक्त करके देश में अनुकूल वातावरण पैदा करे।

(सभापति जी की ओर से)

१५. विविध

निश्चय हुआ कि अखिल भारतीय आर्य सम्मेलनार्थ भेजे गये जिन प्रस्तावों पर समयाभाव के कारण इस सम्मेलन में विचार नहीं हो सका उन्हें सार्वदेशिक सभा के पास विचार तथा यथोचित कार्यवाही के लिये भेजा जाये।

(सभापति जी द्वारा)

सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा में प्राण तक न्योछावर करदेंगे।

अखिल भारतीय आर्य युवक सम्मेलन के प्रधान

कुंवर रणञ्जय सिंह जी अमेठी नरेश की सिंह गर्जना।

२१ फरवरी को ३ बजे **अमेठी नरेश कुंवर रणञ्जय सिंह जी** के सभा पतित्व में अखिल भारतीय आर्य युवक सम्मेलन बड़े जोश एवं उत्साह पूर्वक आरम्भ हुआ! वैदिक धर्म को जय घोष में स्वागताध्यक्ष श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी ने आर्य युवकों को आदर्श युवक बनने का पवित्र आदेश दिया! जय घोष के गगन भेदी नारों में श्री अमेठी नरेश ने सभा पति का आसन ग्रहण किया! श्री प्रो० राम सिंह M-A-आदि अनेक माननीय महानुभावों ने पुष्प मालाओं से प्रधान महोदय का स्वागत किया! सर्व प्रथम श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार ने सत्यार्थ प्रकाश सम्बन्धी प्रस्ताव पर ओजपूर्व भाषण देते हुये मुस्लिम लीग एवं सरकार को कड़ी चेतावनी देते हुये कहा कि अगर ऐसा समय उपस्थित हुआ कि सरकार मुस्लिम लीग के दबाव में आकर कुछ भूल कर बैठे तो आर्य समाज से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति उसका तीव्र प्रतिकार करने को तय्यार होगा। राजस्थान के प्रसिद्ध नेता कर्मवीर पं० जियालाल जी ने ओजस्वी भाषण से प्रस्ताव का समर्थन किया आपने हैदराबाद सत्याग्रह को उदाहरण देकर बतलाया कि समय आने पर हम में से एक भी पीछे नहीं रहेगा ओजपूर्ण जयकारों में प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकार हुआ!

दूसरा प्रस्ताव श्री दत्तात्रेय जी वाबले M-A-LL-B-वकील अजमेर ने उपस्थित किया प्रस्ताव में रेडियो विभाग को सम्मति दी गयी कि प्रत्येक सप्ताह जिस प्रकार मुसलमानों के धर्म ग्रन्थ कुरान का पाठ किया जाता है उसी प्रकार समस्त हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थ वेद की कथा भी उच्च कोटि के पण्डितों द्वारा होनी चाहिये! समर्थन के पश्चात प्रस्ताव स्वीकृत हुआ!

तीसरा प्रस्ताव श्री पं० ओम प्रकाश जी त्यागी ने प्रस्तुत किया प्रस्ताव में समस्त आर्य युवकों से कहा गया कि प्रत्येक आर्य का परम कर्तव्य है कि आर्य वीर दल के देश व्यापी संगठन में सम्मिलित होकर आर्य समाज की शक्ति को बढ़ाने का साधन बने। प्रस्ताव का समर्थन श्री सुरेन्द्र मोहन जी दलपति पञ्जाब आर्य वीर दल ने किया! प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ! अन्त में श्री राजकुमार रणञ्जय सिंह जी ने ओजस्वी भाषण देते हुये आर्य युवकों को संगठित होने का आदेश दिया और अपना अखिल भारतीय संगठन बनाने की प्रबल प्रेरणा की। आपने समस्त विरोधी शक्तियों को चेतावनी देते हुये कहा कि समय आने पर प्रत्येक बच्चा सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा के लिये अपने प्राण तक न्योछावर कर देगा।

सम्मेलन के समय पण्डाल स्त्रीपुरुषों से खचाखच भरा हुआ था आर्य युवकों में अपूर्व जोश था। अन्त में शास्त्रार्थ कानन केसरी श्री पं० व्यास देव जी शास्त्री M-A ने विधि पूर्वक जय घोष के गगन भेदी नारे लगवाये और कार्यवाही सफलता पूर्वक समाप्त हुई।

रामगोपाल आर्य
मन्त्री आर्य युवक सङ्घ

अखिल भारतीय पंचम आर्य सम्मेलन के अवसर पर आयोजित

आर्य प्रचारक सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्ताव

ता० २२ फरवरी १९४४

सभापतिः—श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०

संयोजक मन्त्रीः—श्रीयुत शिवचन्द्र जी।

"यद्यपि आर्य समाज ने अपने प्रचार द्वारा गत ६० वर्षों में मानवता तथा देश के उत्थान में अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य किया है परन्तु फिर भी यह सम्मेलन अनुभव करता है कि महर्षि दयानन्द ने वैदिक धर्म के जितने ऊँचे तथा व्यापक आदर्श संसार के सामने रखे हैं उनके अनुपात से अब तक का प्रचार कार्य सन्तोषजनक नहीं है और अब तक के प्रचार कार्य का सिंहावलोकन करते हुए प्रचार कार्य पद्धति में किसी आमूल परिवर्तन (Overhauling) की आवश्यकता है। अतः यह सम्मेलन निश्चय करता है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अन्य प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभायें वैदिक धर्म के प्रचार को महर्षि दयानन्द के आदर्शों के अनुसार कार्य रूप में परिणत करने के लिये शीघ्र ही वर्तमान प्रचार पद्धति में परिवर्तन लावें। प्रस्तुत प्रचार क्षेत्र निम्न हों और उन क्षेत्रों में प्रचार करने वाले सदाचारी, योग्य तथा मिशनरी भावना से परिपूर्ण हों।

१. विश्वविद्यालय तथा फस्ट ग्रेड कालेज।
२. इन्टर मीडियेट कालेजेज़ तथा हाई स्कूल।
३. प्रारम्भिक पाठशालायें।
४. उच्चकोटि का शिक्षित समुदाय।
५. राजे-महाराजे तथा उच्च अधिकारी।
६. देहात।
७. पिछड़े हुए वर्ग।
८. जंगली वर्ग।
९. मज़दूर वर्ग।
१०. उपर्युक्त सभी क्षेत्र स्त्री जाति में भी प्रचार करने के लिये हों।

यह सम्मेलन आवश्यक समझता है कि उपर्युक्त क्षेत्रों के लिए प्रचारक तैयार करते हुए उन्हें आवश्यक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कराया जावे।

यह सम्मेलन प्रचारकों से अनुरोध करता है कि जिन सिद्धान्तों तथा शिक्षाओं को उन्होंने स्वयं अपने जीवन में कार्य रूप में परिणत कर लिया है उन्हीं बातों का प्रचार किया करें।

इस सम्मेलन की सम्मति में वैदिक धर्म का उपर्युक्त ढंग से ठीक प्रचार प्रचार सच्चे तथा योग्य संन्यासियों तथा वानप्रस्थियों द्वारा ही हो सकता है। अतः यह इस ओर आर्य संन्यासियों तथा वानप्रस्थियों के ध्यान को आकर्षित करता है। परन्तु जब तक उपर्युक्त योग्यता के संन्यासी तथा वानप्रस्थी पर्याप्त संख्या में नहीं मिलते उस समय तक योग्य गृहस्थियों को ही प्रचार कार्य करना होगा।

इस सम्मेलन की सम्मति में गृहस्थी प्रचारकों को उनकी योग्यता, कार्य तथा परिस्थितियों के अनुसार सब प्रकार की सुविधा मिलनी चाहिये जिससे वे अपने गृहस्थ के आर्थिक भार तथा संतान की उचित शिक्षा की चिन्ता से मुक्त होकर अपना सारा समय तथा शक्ति प्रचार कार्य में लगा सकें यह प्रस्ताव उचित कार्यवाही के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पास भेजा जावे।

प्रस्तावकः—श्री शिवचन्द्र, जी प्रचारक, सार्वदेशिक सभा, देहली।
समर्थकः—श्री पंडित धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, स० मंत्री सार्वदेशिक सभा
अनुमोदकः—श्री पं० मदनमोहन जी विद्या सागर, प्रचारक सार्वदेशिक सभा।

श्री पं० कन्हैया लाल जी मिश्र, श्री पं० भीमसेन जी विद्यालङ्कार, मन्त्री पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा। श्री ला० नन्द लालजी आर्य लाहौर ॥ इत्यादि

अभी प्रस्ताव पर बोलने वाले कई महानुभाव शेष थे और अन्य प्रस्ताव भी प्रस्तुत होने वाले थे परन्तु माता कस्तूरबा गांधी के देहावसान का दुःखद समाचार अकस्मात् पंडाल में मिला। अतः सम्मेलन की कार्यवाही को आगे न बढ़ाकर केवल उक्त प्रस्ताव को स्वीकार कर समाप्त कर दिया गया। इसके पश्चात् सभापति के प्रस्ताव पर समस्त उपस्थित जनता ने खड़े होकर माता कस्तूरबा गांधी के निधन पर शोक प्रस्ताव स्वीकार किया तथा दिवंगत पवित्र आत्मा की सद्‌गति के लिये प्रभु से प्रार्थना की।

यह भी निश्चय हुआ कि इस प्रस्ताव की प्रति महात्मा गांधी जी तथा श्री देवदास गांधी को भेजी जावे।

शिवचन्द्र
संयोजक मंत्री आर्य प्रचारक सम्मेलन

पंचम अखिल भारतीय आर्यसम्मेलन के अवसर पर आयोजित

आर्य-कुमार सम्मेलन के प्रस्ताव

१—यह सम्मेलन आर्य-कुमारों से अनुरोध करता है कि वे अपने तथा सम्बन्धियों के विवाह के अवसर पर व धूपक्ष से ठहराकर लेने की अवैदिक और हानिकारक प्रथा का बहिष्कार करें और समस्त आर्य-कुमार सभाओं का कर्त्तव्य है कि वे हर प्रकार से इस निन्दनीय दहेज की प्रथा के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन में पूर्ण सहयोग दें।

२—गत शताब्दी के सर्वोत्तम समाज-सुधारक महर्षि दयानन्द की अमर कृति 'सत्यार्थप्रकाश' आर्य मात्र के लिये वैदिक धर्म के सच्चे स्वरूप को प्रदर्शित करनेवाला पवित्र धर्म-ग्रन्थ है जिसका प्रतिदिन स्वाध्याय करना, उसकी शिक्षाओं को आचरण में लाना और उसकी रक्षा के लिए सब प्रकार का त्याग और बलिदान करने के लिये उद्यत रहना प्रत्येक आर्य-कुमार का कर्त्तव्य है। यह सम्मेलन इस पवित्र धर्मग्रन्थ के कुछ भागों की जब्ती विषयक मुसलिमलीग आदि के आन्दोलन को घृणा की दृष्टि से देखता है और आर्य-जनता को विश्वास दिलाता है कि समस्त आर्य-कुमार इस पवित्र धर्म ग्रन्थ की रक्षा के लिये बड़े-से-बड़े बलिदान करने में जरा भी संकोच न करेंगे, यदि भारत वा किसी प्रान्तीय सरकार ने आर्यों के लिये ज्योतिः स्तम्भ रूप इस ग्रन्थरत्न के किसी भाग की जब्ती का अविवेकपूर्ण कार्य करने की ग़लती की।

३—यह सम्मेलन आर्य-कुमारों का ध्यान अपने इस कर्त्तव्य की ओर आकर्षित करता है कि वे ब्रह्मचर्य्य के नियमों का यथासम्भव पालन करते हुए अपनी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों को विकसित करने का पूर्ण प्रयत्न करें तथा बीड़ी, सिगरेट सेवन इत्यादि व्यसनों से सर्वथा दूर रहकर पवित्र जीवन व्यतीत करें और अन्यों को वैसा करने की प्रेरणा करें।

४—यह सम्मेलन आर्य-कुमारों से अनुरोध करता है कि वे प्रतिदिन धार्मिक ग्रन्थों के स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञा लें और परिषद् की परीक्षाओं में सम्मिलित होने का प्रयत्न करें।

५—यह सम्मेलन कुमार सभाओं से अनुरोध करता है कि निर्वाचन के समय परिषद् की परीक्षाओं में उत्तीर्ण कुमारों को बिशेषता (Preference) दें।

ता० २१—२—४४

देवीदयाल उपमंत्री,
भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्, दिल्ली

आर्य धर्म विस्तार सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्ताव

सभापति—श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी २१-२-४४

(१) इस सम्मेलन की दृढ़ सम्मति है कि वैदिक धर्म सार्वभौम धर्म है और उसको ग्रहण करने का अधिकार ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को है जो अपने जीवन को पवित्र और उन्नत करना चाहता है चाहे उसका जन्म किसी भी जाति वा देश में हुआ हो। वैदिक धर्म के सिद्धान्तानुसार जन्म से कोई उच्च व नीच नहीं है और उन्नति के लिये सब को समान अवसर दिया जाना चाहिये। इसलिये शुद्धि और दलितोद्धार के आन्दोलन सर्वथा उचित, वेदादि सत्य शास्त्र सम्मत और समाज हित के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं किन्तु साथ ही इस सम्मेलन की निश्चित सम्मति है कि जब तक जन्म मूलक वर्णव्यवस्था वा जाति भेद और अस्पृश्यता को पूर्णतया दूर नहीं किया जाता तथा पूर्ण समानता और प्रेम का व्यवहार इन शुद्ध किये हुये तथा दलितवर्ग के भाई बहनों के साथ बिना किसी भेद भाव के नहीं किया जाता तब तक ये आन्दोलन वस्तुतः सफल नहीं हो सकते और न आर्य धर्म का विस्तार हो सकता है। इसलिये यह सम्मेलन सब आर्यों से सानुरोध निवेदन करता है कि वे जन्म मूलक जाति भेद और अस्पृश्यता का क्रियात्मक रूपेण पूर्णतया बहिष्कार करें। अन्तर्भोजन तथा अन्तर्विवाहों को अधिक से अधिक प्रोत्साहित करें। नामों के अन्त में जाति सूचक शब्दों के प्रयोग का सर्वथा परित्याग करें तथा अन्य कोई भी ऐसा काम न करें जिससे जाति भेद प्रथा को समर्थन प्राप्त होता हो।

प्रस्तावक—श्री पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति

अनुमोदक—श्री पं० मदनमोहन जी विद्यासागर वेदालंकार

(२) आर्य धर्म प्रचार के क्षेत्र को विस्तृत करने की दृष्टि से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अपने आधीन एक पृथक् प्रचार मण्डल स्थापित करने की योजना करे जिसका उद्देश्य यह हो कि वह भारत विभिन्न देशों में बसने वाले मुसलमान भाइयों में आर्य धर्म का प्रचार करे और इसी प्रकार भारत की प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाएँ अपनी २ अध्यक्षता में पृथक् प्रचार मण्डल स्थापित करें जो अपने २ प्रान्त के मुसलमान भाइयों में आर्य धर्म का विशेष प्रचार करें।

प्रस्तावक—श्री नन्दलालार्य्य जी लाहौर

अनुमोदक—डा० ढलाराम जी लाहौर

अ० भा० आर्य सम्मेलन के
कुछ चित्र
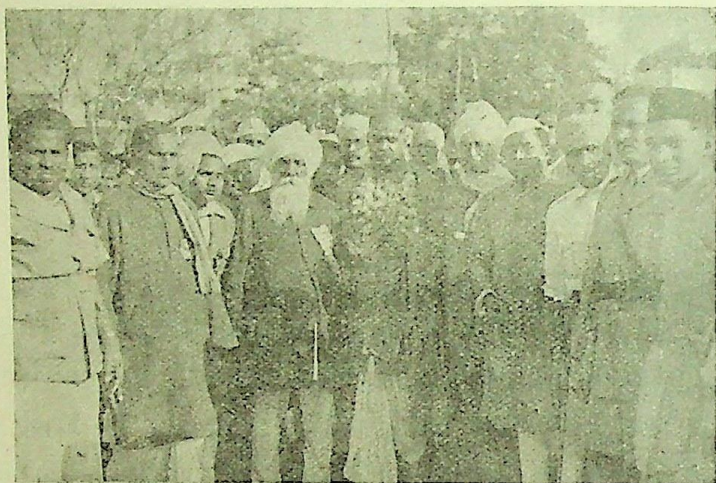
श्री डाक्टर श्यामा प्रसाद मुकर्जी का
आर्य नगर में स्वागत

घंटाघर चांदनी चौक में प्रधान के जलूस का दृश्य
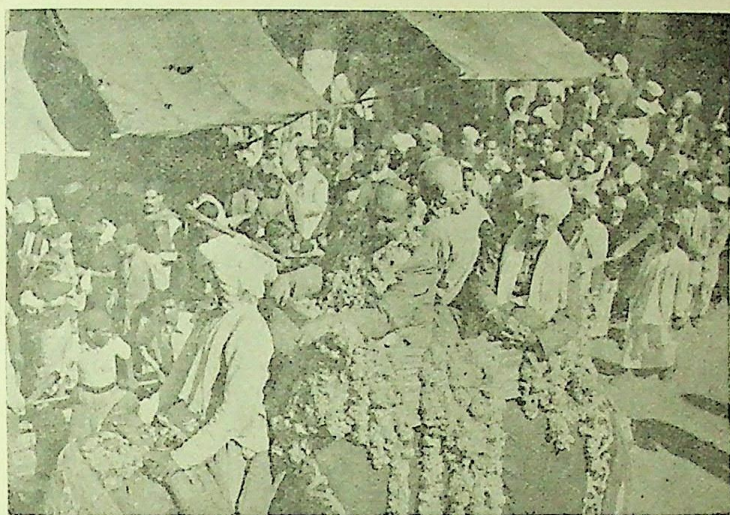
श्री डाक्टर श्यामा प्रसाद मुकर्जी प्रधान आर्य सम्मेलन, पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी तथा श्री ला० नारायण दत्त जी स्वागताध्यक्ष जलूस में हाथी पर
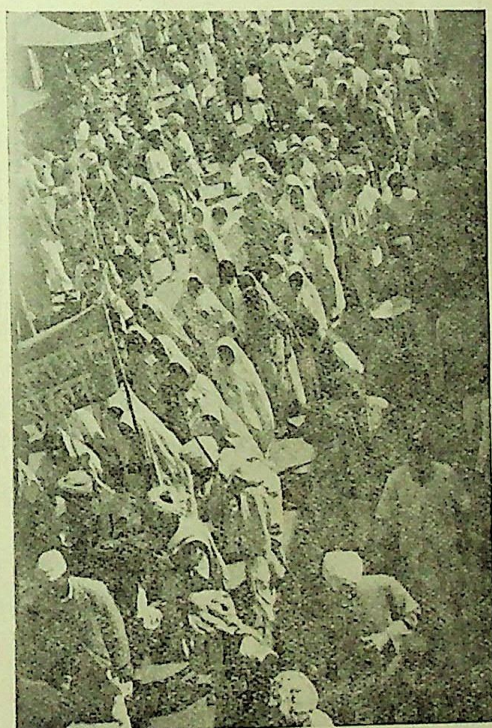
प्रधान के जलूस में आर्य महिलाओंका एक दृश्य
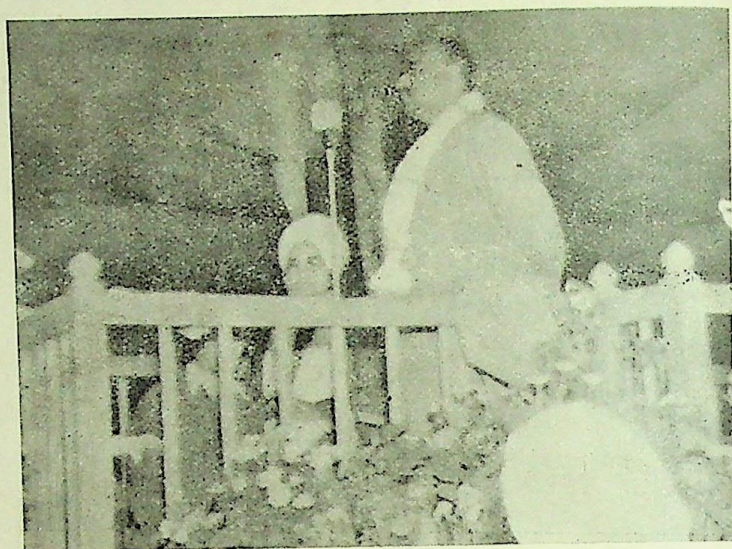
श्री डाक्टर श्यामा प्रसाद मुकर्जी प्रधान आर्य सम्मेलनमें अपना भाषण दे रहे हैं
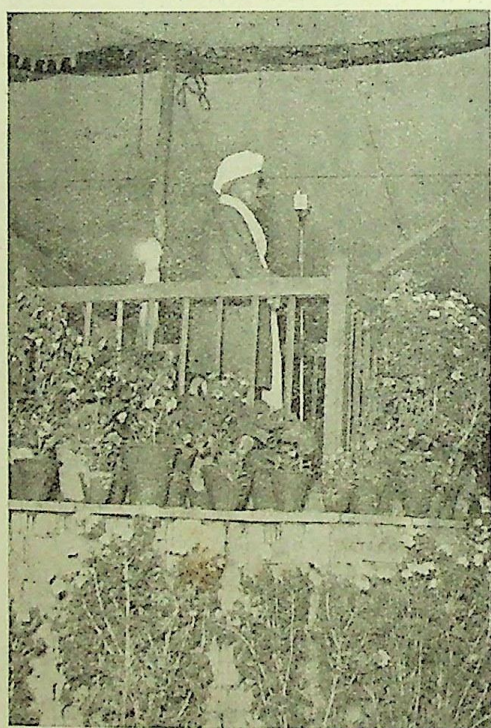
श्री लाला नारायण दत्त जी स्वागताध्यक्ष
अपना भाषण दे रहे हैं।

आर्य नगर में श्री डाक्टर श्यामा प्रसाद जी मुकर्जी ओ३म् पताका फहरा रहे हैं।
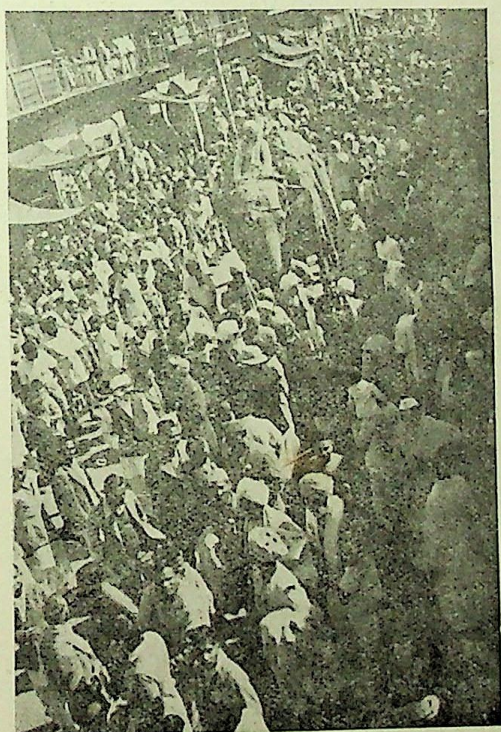
श्री डाक्टर श्यामा प्रसाद मुकर्जी का जलूस हाथी पर।

धार्मिक चित्रपट

ऋषि दयानन्द की जीवन घटनाओं को लेकर सुन्दर चित्र के साथ अंग्रेज़ी एवं हिन्दी में ऋषि की महिमा में गद्य-काव्य में वर्णन दिया गया है प्रत्येक घर एवं समाज में टांगने योग्य चित्र है। मूल्य ।)

आर्यों का बलिदान जिसमें २७ नेताओं की नामावली का सुन्दर चित्रपट है। मूल्य ।)

हैदराबाद के २८ शहीदों की नामावली का सुन्दर चित्रपट मूल्य ।)

प्रार्थना के आठ मंत्र अर्थ सहित, शिव संकल्पमस्तु के ६ मंत्र अर्थ सहित, आरती शान्ति पाठ, संध्या के मंत्रों का चित्रपट, जीवन मृत्यु के प्रश्न, आर्य समाज के १० नियम एवं उद्देश्यों का चित्रपट बहुत ही सुन्दर छपे हैं। प्रत्येक का मूल्य =)

१—ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका—विस्तृत व्याख्या, टिप्पणियां एवं अकारादि क्रम से प्रमाण सूचि सहित ६५० पृष्ठ की पुस्तक। मूल्य ३)

२—स्वामी श्रद्धानन्द जी का पूर्ण प्रामाणिक एवं विस्तृत जीवन चरित्र पृष्ठ संख्या ६५० सचित्र पुस्तक का मूल्य २।।)

३—आर्य समाज का इतिहास—लेखक श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति। मूल्य १।।)

४—भीम प्रश्नोत्तरी—पं० भीमसेन शर्मा के आर्य समाज एवं ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों पर किये गये ३६० प्रश्नों के उत्तर २८० पृष्ठों की पुस्तक मूल्य ।।)

५—आर्य पथिक ग्रन्थावली दो भाग—श्री पं० लेखराम कृत—कुलियात मुसाफिर उर्दू का हिन्दी अनुवाद दोनों भागों का मूल्य ८)

६—कुलियात संन्यासी— श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के लेख एवं उपदेशों का उर्दू में संग्रह ५८० पृष्ठों की पुस्तक मूल्य २)

७—योग दर्शन—पर वैदिक वृति भाष्य श्री स्वामी वेदानन्द जी द्वारा सम्पादित योग सम्बन्धी उपयोगी पुस्तक है। मूल्य १)

८—विधवा विवाह मीमांसा—श्री पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर कृत ३०० पृष्ठों की पुस्तक मूल्य १।।)

९—आरोग्य दर्पण—ले०—महात्मा गांधी स्वास्थ्य रक्षा की पुस्तक है मूल्य ।।।)

१०—संस्कृत हिन्दी कोष—मूल्य ।।)

११—गीता आर्य भाषा टीका सहित—मूल्य ।।=)

१२—वैदिक सिद्धान्तों पर दो बहिनों की बातें दूसरा संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण लेखक—कवि रत्न पं० सिद्धगोपालजी साहित्य वाचस्पति मूल्य १)

सार्वदेशिक आर्य डायरी बिना मूल्य

उपरोक्त पुस्तकों के प्रति १०) रुपये की पुस्तकें एवं चित्र मंगाने वालों को १-१ डायरी बिना मूल्य भेजी जायगी। शीघ्र मंगावें डायरियें बहुत ही कम बची हैं

पता—गोविन्दराम हासानन्द, आर्य साहित्य भवन, नई सड़क, देहली।

अ० भा० आर्य सम्मेलन में हुए सत्यार्थ प्रकाश विषयक मुख्य भाषणों के कतिपय अंश

२१-२-४४

सत्यार्थ प्रकाश जब्ती आन्दोलन बन्द हो

श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी एम० ए० प्रधान सार्वदेशिक सभाः—

यह हिन्दुओं की धार्मिक स्वतंत्रता के अपहरण के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' को लेकर प्रारम्भ किया गया एक संगठित प्रयत्न है। इस ग्रन्थ का गत ६० वर्षों से डंके की चोट प्रचार हो रहा है; पर कभी कहीं कलह नहीं हुई और इसके विरुद्ध कहीं आपत्ति तक नहीं उठायी गई। आज तक केवल हिन्दी में ही इस ग्रन्थ की लगभग २। लाख प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। भारत की सब भाषाओं के साथ-साथ अंग्रेजी, फ्रेंच तथा जर्मन भाषा में भी इसका अनुवाद प्रकाशित हो चुका है।

आपने कहा कि दूसरे धर्मों के प्रति उत्तेजक वाक्य तो सभी धर्म ग्रन्थों में हैं। कुरान में भी इनकी कमी नहीं है। भविष्य पुराण में भी इस्लाम और हजरत मुहम्मद की कड़ी आलोचना की गई है।

प्रो० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति ने कहा 'सत्यार्थ प्रकाश' वेदों का द्वार है और आर्यसमाज का जीवन है। यह आर्य जनता को स्वामी दयानन्द की सबसे बड़ी और स्थायी वसीयत है। यदि हम उसकी रक्षा नहीं करेंगे, तो हम नालायक सिद्ध होंगे। ठीक सोचने का सबको अधिकार है, अतः आर्यसमाज अपनी इस मांग द्वारा विचारस्वातंत्र्य की मांग करता है। यदि आज 'सत्यार्थप्रकाश' जब्त कर लिया जाता है, तब क्या प्रमाण है कल वेदों को जब्त नहीं कर लिया जाएगा।

मुस्लिम लीग ने 'सत्यार्थप्रकाश' की जब्ती की मांग क्यों उठायी है, इस पर प्रकाश डालते हुए आपने कहा कि हैदराबाद (दक्षिण), सिन्ध और पंजाब में क्रमशः यह आवाज उठायी गयी है। इसका कारण यह तीनों प्रदेश मुस्लिम लीग के पाकिस्तानी स्वप्न के अन्तर्गत हैं। और यहां उनकी पाकिस्तानी योजना में सबसे बड़ा रोड़ा आर्यसमाज है। अतः 'सत्यार्थ प्रकाश'की आड़ लेकर आर्य समाज को कुचलने की कुचेष्टा की गयी है।

"यदि आर्यसमाज को अग्नि-परीक्षा में से गुजरना है तब वह हंसते-हंसते गुजर जाएगा। हिन्दूजाति भी उसका साथ देगी, परन्तु इसके लिए पहले आर्य-समाज को स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होना होगा। यदि हमने छोटे प्रश्नों पर पीछे हटने की आदत बना ली, तो हम धर्म, जाति और देश को भी छोड़ बैठेंगे।

प्रसिद्ध सनातन धर्मी नेता श्री गोस्वामी गणेशदत्त जी ने प्रस्ताव के अनुमोदन में घोषित किया कि 'सत्यार्थप्रकाश' की चुनौती तीस करोड़ हिन्दुओं को और उनके शंख-घड़ियालों को चुनौती स्वरूप है। इस अमर ग्रन्थ की एक भी पंक्ति की जब्ती का अर्थ सारी हिन्दू सम्पत्ति का विनाश है। यदि आर्यसमाज और उसके इस धार्मिक ग्रन्थ पर तनिक भी आंच आयी, तो २४ करोड़ सनातन धर्मी अपने बड़े भाई के लिए पतंगे की तरह आग में जल मरेंगे।

राजगुरु श्री धुरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि मुस्लिम लीग के इस आन्दोलन से हमारा कल्याण ही होगा। इसके परिणामस्वरूप 'सत्यार्थ प्रकाश' का उज्वल आलोक दूर-दूर तक जा पहुंचेगा।

पं० रामचन्द्र जी देहलवी ने प्रस्ताव के समर्थन में कुरान की अनेक आयतें पढ़कर सुनायीं और कहा कि खण्डन-मण्डन की दृष्टि से कुरान भी मुक्त नहीं है। स्वयं मुसलमानों के कादियानी फिर्के के नेता मिर्जा गुलाम अहमद साहब ने लिखा है कि कुरान पर भी आपत्तियां उठायी जा सकती हैं।

बाबा मिलखासिंह जी ने कहा कि मैं पहला व्यक्ति व्यक्ति हूंगा जो 'सत्यार्थ-प्रकाश' के लिए बलि दूंगा। मैं सिख होते हुए भी दयानन्द का सेवक हूं और यदि कोई संकट उपस्थित हुआ, तो 'सत्यार्थप्रकाश' की पंक्तियां मेरे खून से लिखी जाएंगीं।

राजस्थान के आर्य नेता श्री कुंवर चांदकरण जी शारदा ने कहा कि मुस्लिम लीगी पत्रों में हिन्दुओं को तलवार और औरंगजेबीपन की धमकी दी जाती है। इसके उत्तर में हमारा कहना है कि यदि आज औरंगजेब पैदा होगा, तो शिवाजी भी पैदा हो जाएगा।

श्रीमती अक्षयकुमारी जी ने कहा कि आवश्यकता पड़ने पर भारत की प्रत्येक आर्य हिन्दू नारी न केवल अपना, अपने बच्चों का भी बलिदान देनेको उद्यत होगी।

प्रस्ताव के समर्थन में सर्व श्री स्वामी सत्यानन्द जी, बावा विचित्र सिंह, पं० धर्मेन्द्रनाथजी तर्क शिरोमणि कविराज हरनाम दास जी, पं० ठाकुर दत्त जी शर्मा आदि ने भी ओजस्वी भाषण दिये। अन्त में प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकार हुआ।

डा० मुकर्जी का स्फूर्तिदायक ओजस्वी भाषण

२२-२-४४

आर्यसमाज के विधायक कार्यक्रम का महत्व भारतीयस्वराज्य की आधार शिला की स्थापना

वंगकेसरी डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी का आर्य सम्मेलन में अन्तिम भाषण अत्यन्त मार्मिक और बहुत ही ओजस्वी हुआ। स्वागत एवं सम्मान के लिये आन्तरिक धन्यवाद देते हुए आपने कहा कि आपने ऐसे बिषयों पर यहां प्रस्ताव पास किये हैं, जो देश, हिन्दू समाज और आर्यसमाज की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में स्वीकार किया गया प्रस्ताव एक चेतावनी है, सरकार को, मुस्लिम लीग को और अन्य सब को भी, इस बात की कि मुस्लिम लीग का यह मूर्खतापूर्ण, शरारत भरा वेहूदा आन्दोलन देशकी शांति के लिये अत्यन्त खतरनाक है। फिर भी यदि कोई हमला सत्यार्थप्रकाश पर किया ही गया, तो समस्त हिन्दुओं और सारे देश द्वारा उसका प्रतिरोध किया जायगा। यदि इस प्रकार स्वतन्त्रता के अपहरण करने के सिद्धान्त को मान लिया गया, तो इसका दुष्परिणाम दूसरों की अपेक्षा उनको कहीं अधिक भोगना पड़ेगा, जो शीशे के मकान में बैठकर दूसरों पर पत्थर फेंकने की हिमाकत करने में लगे हुए हैं। सत्यार्थप्रकाश का यह प्रस्ताव देश की एकता का प्रस्ताव है। इस देश के ही नहीं, बल्कि देश-विदेश में फैले हुए हिन्दुओं में हमें एकता की भावना भरनी होगी। लार्ड बावेल कहते हैं कि भारत भौगोलिक दृष्टि से एक है। लेकिन, हमारा दावा यह है कि वह सभी दृष्टियों से एक है और एक ही रहेगा। राजनीतिक एकता में साम्प्रदायिक मतभेद को बहुत बड़ी बाधा बताया जाता है। लार्ड बावेल ने दूसरे देशों का नाम लेकर हमें बताया है कि उनमें सारे मतभेद मिट गये। लेकिन, वे यह भूल जाते है कि उनमें किसी दूसरे की हकूमत नहीं थी। हिन्दुस्तान का तो क्या यदि इंग्लैण्ड में भी किसी दूसरे की हकूमत हो जाय, तो वहां भी ऐसे झगड़े और बखेड़े किये जा सकते हैं। यदि हमारी हकूमत वहां दी जाय, तो हमें भी वहां ऐसा करने में कुछ भी कठिनाई न होगी। किसी विदेशी ताकत के रहते यह मतभेद दूर हो नहीं सकता और उसके दूर होते ही यह मतभेद स्वयं

नष्ट हो जायगा। लेकिन, यह विदेशी ताकत दूर कैसे हो? इसके लिये हमें देश में चारों ओर इतना प्रबल लोकमत जागृत करना चाहिये कि पराधीन देश में ऐसा दीनता-हीनता का जीवन बिताना जनता के लिये असह्य हो जाय। यह लोकमत विधायक कार्यक्रम द्वारा ही पैदा किया जा सकता है। आर्यसमाज भले ही राजनीतिक कार्य हाथ में न ले। लेकिन, वह उन परिस्थितियों को पैदा करता है, जो देश की स्वाधीनता के मार्ग को प्रशस्त बनाती हैं। स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना अलग जाति के रूप में न करके वेद के सन्देश और पुरानी सभ्यता के अभिमान को इस रूप में पैदा करने के लिये की थी, हर भारतीय अपने को आर्य कहने में गौरव अनुभव करे तथा यह माने कि भारत भारतीयों का है। यहां किसी भी विदेशी हकूमत को हम नहीं चाहते। शास्त्रों की पुरातन व्यवस्था को आधुनिक परिस्थितियों के ढांचे में ढाल कर उसे क्रियात्मक रूप देना होगा। आर्यसमाज उसीकी नींव डाल रहा है और इसी नींव पर भारतीय स्वराज्य की आधार शिला की स्थापना की जायगी। बंगाल के संकट में आर्यसमाज द्वारा की सहायता की सराहना करते और उसके लिये आभार मानते हुए आपने अन्त में कहा कि हमें अगले वर्ष इससे भी अधिक भयानक संकट की सम्भावना साफ दीख पड़ती है। समाचार पत्रों के मुँह बन्द कर दिये गये हैं। बाहर की दुनिया को बंगाल के बारे में अँधेरे में रखा जा रहा है। वहां की हकूमत पाकिस्तान का नमूना है। वहां के प्रश्न को सारे देश का प्रश्न बनाये बिना हल नहीं किया जा सकता। बंगाली भिखारी बनकर सहायता की भीख नहीं मांग रहा; बल्कि अपने को सभ्य कहने वाली सरकार से अपने जीवन निर्वाह की समस्या के हल करने की मांग करता है। लेकिन, जो सरकार उसे हल नहीं कर सकती, उसे नैतिक और कानूनी दृष्टि से भी बने रहने का कोई अधिकार नहीं है। अन्त में सम्मेलन को शानदार सफलता के लिये सब को बधाई देते हुए आपने कहा कि अपने प्रस्तावों को इस निश्चय, साहस, तत्परता, दृढ़ता से पूरा करो कि भावी संतान के लिये भी स्फूर्तिका एक सन्देश छोड़ जाओ।

अ० भा० आर्य सम्मेलन के लिए प्राप्त कुछ संदेश

'सत्यार्थप्रकाश' मनुष्यमात्र के कल्याण की भावना से प्रेरित समस्त हिन्दू इसकी रक्षा करेंगे

आर्य-सम्मेलन द्वारा आर्य (हिन्दू) जगत् को सेठ जुगलकिशोर जी बिरला का सन्देश

[२१-२२-२३ फरवरी को देहली में हुए 'आर्य-सम्मेलन' द्वारा अ० भा० आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ के संस्थापक श्री सेठ जुगलकिशोर जी बिरला ने निम्नलिखित सन्देश दिया—

"सत्यार्थप्रकाश"-जैसा ग्रन्थ सच्चे आर्य-सनातन धर्म का सन्देशा देने के साथ अन्ध श्रद्धा और पाखण्ड को दूर करता है। इसके पढ़ने से तर्कबुद्धि का विकास होता है। मनुष्यमात्र के कल्याण की भावना से यह ग्रन्थ लिखा गया है। किसी के प्रति इसके भीतर द्वेष नहीं है। ईसाई मुसलमान, भी यदि १३वें १४वें समुल्लास को द्वेषरहित होकर पढ़ें तो वे भी धर्म के तत्त्व को समझने में समर्थ होंगे। 'सत्यार्थप्रकाश की रक्षा के लिये समस्त हिन्दू अपने आर्यसमाजी भाइयों का साथ देंगे, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।

"संसार में यदि किसी पुस्तक के कारण बड़े-बड़े क्रूर कर्म तथा मार-काट हुई है, तो उसका उत्तरदायित्व 'कुरान शरीफ़' पर है। इतिहास इसका प्रमाण है! अतः यदि किसी पुस्तक के कुछ भाग जब्त होने योग्य हैं तो वे 'कुरान शरीफ़ के भीतर के कुछ अंश हैं, जो कि लोगों को वैसी संकीर्ण तथा द्वेषपूर्ण शिक्षा दे रहे हैं। मैं आशा करता हूं कि मुस्लिम लीग के इशारे पर चलनेवाले सिंध, पंजाब और बङ्गाल के मन्त्रिमण्डल, जिन्होंने हिन्दुओं पर अनेक प्रकार के अत्याचार करते रहने की ही नीति बना रखी है—हैदराबाद भूपाल आदि के मुसलमानी शासकों पर भी यही बात लागू होती है-आगे के लिए विवेक-बुद्धि और न्याय से काम लेंगे और अपने उत्तरदायित्व को समझेंगे। अन्यथा इसका परिणाम इनके लिए घातक होगा। हिन्दू इस प्रकार के अत्याचारों को अब बहुत दिन तक नहीं सहन कर सकेंगे

"इस सम्मेलन में मैं आर्यसमाजी भाइयों से यह भी निवेदन करूँगा कि

आर्य धर्म की रक्षा तथा प्रचारके अपने कार्य को और भी विशेष उत्साह और वेगके साथ चालू रखें।

धर्मप्रचार के साथ देहातों में तथा पहाड़ी और जंगली ग्रामों में ईसाई मिशनरियों के ढंग पर आर्थिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य उन्नति के लिये भी अनेक प्रकार के कार्य चालू करने पर तुरन्त ध्यान दें।

प्रवासी भारतीयों के सुप्रसिद्ध नेता श्री स्वामी भवानीदयाल जी संन्यासी के सन्देश के मुख्य अंश

"पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा अनेक आर्यों के बलिदान से भी इन मतान्ध मुसलमानों को सन्तोष नहीं हुआ और अब इन्होंने सत्यार्थप्रकाश की आड़ में आर्यसमाज को खुली चुनौती दे डाली है। मैं चाहता हूं कि आर्य काँग्रेस मुस्लिम-लीग की इस दूषित नीति और कलुषित मनोवृत्ति पर गंम्भीरता पूर्वक विचार करे और उसकी चुनौती स्वीकार कर ले। यह सत्य है कि हमारे इस पारस्परिक संघर्ष से एक तीसरी शक्ति की स्वार्थ-सिद्धि होगी पर हमारे पास मुस्लिम लीग की चुनौती स्वीकार करने के सिवा और उपाय ही क्या है? इस संघर्ष में आपके प्रति संसार के सभी लेखन-स्वतंत्रता-प्रेमियों की सहानुभूति होगी और कोई भी शक्ति सत्यार्थप्रकाश का अङ्ग भङ्ग नहीं कर सकेगी चाहे वह शक्ति मानवी हो या दानवी।"

भवानी दयाल संन्यासी

वीर सावरकर जी का सन्देश

"I wish every success to the A. I. Aryan Conference. I have already expressed myself strongly against the Moslem agitation against Satyarth Prakash and had wired to the Governor of Sind and the Viceroy to nip in the bud the Moslem demand for the Ban. No religiousbook is free from some stringent criticism against some tenets of other religious book. Tolerance is the solution. Comparative study of them all is a solution still better. Satyarth-Prakash is revered by all Hindus alike as a holy book. If the Moslems insist in wantonly wounding the feeling of the Hindus and our Arya-Samajist brothers in particular it can only result in

a counter claim by the Hindus to get the Holy Koran also proscibed. I should like that neither of them should indulge in such fanatical intolerance in matters religious. Especia-ally those who themselves live in a glasshouse should beware of throwing stones at others"

This is my message which please convey to the Conference,

Yours Sincerely,

Bombay
17-2-44 } V. D. Savarkar

इसी प्रकार आर्य महा सम्मेलन की सफलता की कामना और इसके उद्देश्य से पूर्ण सहानुभूति के सन्देश माननीय डा० जयकर, श्री ज्वालाप्रसाद श्री वास्तव (वायसराय की कार्यकारिणी के सदस्य) राजाधिराज शाहपुरा, झाला-वार दरबार, जस्टिस जयलाल जी, जस्टिस बख्शी टेकचन्द्र जी, दीवान बद्री दास जी, श्री माधव श्री हरिअणे उमाशङ्कर जी ऐड्वोकेट् (फतहपुर जेल) डा० मुंजे सर जोगेन्द्रसिंह जी श्री ब्रजनन्दनसिंह जी प्रधान बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा आदि से प्राप्त हुए जिनके लिये सार्वदेशिक सभा तथा स्वागत समिति आर्य सम्मेलन की ओर से उन्हें हार्दिक धन्यवाद।

जैन समाज का सन्देश

सम्मेलन की दूसरे दिन की समाप्ति पर ला० देशराज चौधरी ने जैन संघ के मंत्री की ओर से प्रेषित, निम्न संदेश पढ़कर सुनाया—

"जैन समाज अपना खून देकर भी 'सत्यार्थप्रकाश' की रक्षा करेगा।"

प्राप्ति स्वीकार

निम्नलिखित अत्यन्त उपयोगी और उत्तम पुस्तकें

हमें 'सार्वदेशिक' में समालोचनार्थ प्राप्त हुई हैं जिनके लिए धन्यवाद समालोचना इस बार स्थानाभाव से अगले अङ्क में दीजाएगी।

जीवन संग्राम

लेखक—श्री पं० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति

मिलने का पता:—'अर्जुन कार्यालय' श्रद्धानन्द बाजार, देहली। मूल्य १)

सत्यार्थ प्रकाश गान

लेखक—पं० सत्य भूषण जी विद्यालङ्कार और पं० उदयवीर जी वेदालङ्कार

मिलने का पता:—सार्वदेशिक पुस्तक भण्डार, बलिदान भवन, देहली मूल्य ।=)

—सम्पादक

पंचम अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन का शानदार अधिवेशन

एक विहंगम दृष्टि

प्रथमदिन २० । २ । ४४ को

भारत की राजधानी में डा० मुखर्जी का शानदार स्वागत

५०००० की भीड़ में सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ-जनता में अपूर्व उत्साह

सत्यार्थप्रकाश के प्रति श्रद्धांजलि

पंचम अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन का खुला अधिवेशन २० फरवरी सायं साढ़े सात बजे आर्यनगर में बंगकेसरी डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी के सभापतित्व में प्रारम्भ हुआ।

प्रारम्भ में गान्धर्व विद्यालय के विद्यार्थियों ने मंगल-गान द्वारा डा० मुखर्जी तथा अभ्यागतों का स्वागत किया। उसके पश्चात् पं० सिद्धगोपाल जी ने स्वागत कविता पढ़ी।

स्वागत समिति के प्रधान मन्त्री ला० देशराज जी चौधरी ने सम्मेलन की सफलता-कामना के लिए आये प्रमुख नेताओं के सन्देशों को पढ़ कर सुनाया, जिनमें से कुछ उल्लेख योग्य निम्न लिखित हैं:—वीर सावरकर, डा० मुंजे, श्री जयकर, बख्शी टेकचन्द, राजा ज्वालाप्रसाद, वायसराय कौंसिल के सदस्य सर जोगेन्द्रसिंह और सर ज्वालाप्रसाद श्रीवास्तव, रा० ब० मेहरचन्द खन्ना, श्री भवानीदयाल जी संन्यासी, जस्टिस जयलाल।

सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री लाला नारायणदत्त जी ठेकेदार का स्वागत-भाषण श्री चन्द्रगुप्त वेदालंकार ने पढ़ा।

जिस समय डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी अपना अभिभाषण देने के लिये खड़े हुए, उस समय सारा पण्डाल तालियों और 'महर्षि दयानन्द की जय' 'सत्यार्थप्रकाश अमर रहे, 'जो बोले सो अभय, वैदिक धर्म की जय' और 'डा० मुखर्जी चिरंजीवी हों' के गगनभेदी नारों से गूंज उठा। उपस्थित लोगों की उत्सुकतापूर्ण आंखें मंच के ठीक मध्य में खड़े डा० मुखर्जी की ओर खिंच गई और उसके कान 'सत्यार्थप्रकाश' के सम्बन्ध में डा० मुखर्जी के सम्मान पूर्ण एवं

क्रान्तिकारी वचनों को सुनने के लिए उत्सुक हो उठे। जिस समय डा० मुखर्जी ने अपना अभिभाषण पढ़ा, पण्डाल में एकान्त निस्तब्धता छा गई। लोगों ने अत्यन्त धैर्य और उत्सुकता के साथ आदि से अन्त तक उनका भाषण सुना। डा० मुकर्जी के भाषण का हिन्दी अनुवाद श्री शिवचन्द्र जी ने पढ़कर सुनाया।

कल रात तक वर्षा ओलों और तूफ़ान तथा दलदल के कारण जो आर्यनगर खड़े होने लायक भी नहीं था, आज सम्मेलन के प्रथम दिन विशाल हलचल का केन्द्र हो गया था।

पण्डाल के मंच पर आर्य समाज के गण्यमान्य नेता उपस्थित थे, जिनमें श्रीयुत महात्मा नारायण स्वामीजी, मध्य प्रांतीय असेम्बली के स्पीकर श्री घनश्याम सिंह गुप्त, सार्वदेशिक सभा के प्रधान एवं टेहरी के भूतपूर्व चीफ जज व न्याय सचिव पं० गंगाप्रसाद जी एम० ए०, श्री चांदकरण शारदा आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

सम्मेलन के अवसर पर सम्मिलित होने वाले प्रतिनिधियों और दर्शकों की कुल संख्या पण्डाल में ५०,००० से कम नहीं थी। इनमें से हजारों प्रतिनिधि बम्बई, हैदराबाद (दक्षिण), मध्यप्रान्त, पंजाब, बिहार, युक्तप्रांत, बंगाल, मद्रास, उत्कल, सिंध आदि से उपस्थित हुए थे। दर्शकों में आर्य महिलाओं की संख्या अभूतपूर्व थी।

विराट् जलूस

सम्मेलन के सभापति के जलूस के लिए दिन के १ बजे सीताराम बाजार आर्य समाज के सामने सहस्रों आर्य नर नारी एकत्र हो गए। जलूस ठीक पौने दो बजे 'महर्षि दयानन्द की जय' 'सत्यार्थप्रकाश अमर रहे' तथा 'डा० मुखर्जी की जय' के नारों के साथ प्रारम्भ हुआ। जलूस के शुरू में घुड़सवार पुलिस थी और उसके पीछे-पीछे सिपाहियों का एक जत्था था। इसके बाद घुड़सवार आर्य स्वयं सेवक, साधु-संन्यासी, विभिन्न गुरुकुलों के ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणियों तथा देश के विविध भागों से आए तथा दिल्ली की विभिन्न संस्थाओं के नर-नारी बड़ी-बड़ी लगभग ८० टोलियों में अपनी-अपनी ध्वजाओं के साथ जलूस में सम्मिलित थे। जलूस के बीच-बीच में थोड़े-थोड़े अन्तर से लोगों ने 'सत्यार्थप्रकाश अमर रहे' के मोटो उठाये हुए थे और जनता अपार उत्साह से 'ऋषि दयानन्द की जय'

के नारों और वैदिक गीतों से आकाश को गुंजा रही थी। सब से अन्त में डा० श्यामप्रसाद मुखर्जी फूलों से सुसज्जित चांदी की अम्बारी में हाथी पर विराजमान थे उनके साथही ला० नारायणदत्तजी और श्री म० नारायण स्वामीजी थे। जिस समय जलूस नई सड़क पर पहुँचा, उसका एक छोर नई सड़क के बीच में तथा दूसरा छोर बाजार सीताराम में ही था। सड़क के दोनों ओर सहस्रों आदमी तथा घरों की छतों पर सैकड़ों नारियां डा० मुखर्जी के दर्शन के लिए बड़ी उत्सुकता से आंखें बिछाये हुई थीं।

दिल्ली के १५ साल के सार्वजनिक इतिहास में यह एक अभूतपूर्व जलूस था। इसमें आर्य समाज की संस्थाओं के अतिरिक्त हिन्दू समाज की सभी शाखाओं के लोग सम्मिलित थे और वे आर्यों के साथ एक स्वर में 'सत्यार्थप्रकाश अमर रहे' के नारे लगा रहे थे। जलूस में सिख तथा जाट-जाटनियों से लेकर के उच्चतम शिक्षा-प्राप्त महिलाएं सम्मिलित थीं। जलूस में सब मिलाकर लगभग एक लाख आदमी थे। घण्टाघर पर अमेरिकन सम्वाद दाताओं ने डा० मुखर्जी के फोटो भी लिये।

ठीक ५ बजे जलूस आर्य नगर में आकर समाप्त हुआ। इसके बाद डा० मुखर्जी ने तालियों की गड़गड़ाहट और बैण्ड-बाजे के साथ 'ओ३म्' ध्वजा को फहराया और उपस्थित जनता से अपने प्रति किये सम्मान के लिए कृतज्ञता-प्रकाशन करते हुए निम्न वचन कहे, "यह पताका निरा कपड़े का टुकड़ा नहीं है, अपितु देश और जाति का प्रतीक स्वरूप है। जब तक हिन्दू छोटे दल और जातियों में विभक्त रहेंगे, तब तक हमें कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। हमारा जलूस निकालने और यहां इतनी भारी संख्या में एकत्र होने के लक्ष्य की पूर्ति तभी सम्भव है, जब हम सब आर्य हिन्दू इस एक पताका के नीचे सब भेद-भावों को भूलकर एक हो जाएँ। जब तक हमें स्वाधीनता प्राप्त नहीं होती, हमारे लक्ष्य की पूर्ति नहीं होगी। इस सम्मेलन में हमें अपनी तमाम समस्याओं पर विचार करके यह साबित करना है कि हम सब एक हैं और तभी हम अपनी स्वाधीनता और संस्कृति की रक्षा कर सकेंगे।"

आर्य सम्मेलन का द्वितीय दिवस

(२१-३-४४)

प्रातः ६ से १० तक यज्ञ ईश्वर प्रार्थना तथा भजनादि हुए. १० से १ बजे तक विषय निर्धारिणी समिति का अधिवेशन डा० श्याम प्रसाद मुकर्जी की प्रधानता में हुआ जिस में 'सत्यार्थ प्रकाश' त्रैवार्षिक कार्य क्रम, अखण्ड भारत इत्यादि विषयों पर बिचार विनिमय के पश्चात् प्रस्ताव निश्चित किये गये। मध्यान्ह १ से २½ तक बड़े पण्डाल में पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति स० मन्त्री

सार्वदेशिक सभा के सभापतित्व में आर्य कुमार सम्मेलन बड़े उत्साह के साथ किया गया जिस में श्री धर्मवीर जी प्रेमी एम० ए० स्वागताध्यक्ष थे। स्वाध्याय, 'सत्यार्थप्रकाश' रक्षा, निर्व्यसनता दहेज विरोध इत्यादि विषयों पर प्रभावशाली भाषण हुए और प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए। २½ से ४ बजे तक अमेठी के राजकुमार श्री रणञ्जय सिंह जी की अध्यक्षता में आर्य युवक सम्मेलन हुआ जिसके स्वागताध्यक्ष तार्किक शिरोमणि श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी थे। ४ से ५½ बजे तक श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी की अध्यक्षता में आर्य धर्म विस्तार सम्मेलन हुआ जिसमें आर्य धर्म विस्तार विषयक अनेक उपयोगी प्रस्ताव स्वीकृत किये गये (इन तीनों सम्मेलनों के प्रस्ताव तथा संक्षिप्त विवरण अन्यत्र दिये गये हैं)

इस बीच में १ से ५½ बजे तक विषय निर्धारिणी समिति का अधिवेशन छोटे पण्डाल में होता रहा जिस में सम्मेलनार्थ प्रस्तुत विषयों पर विचार हुआ। रात ७½ बजे से आर्य सम्मेलन का खुला अधिवेशन डा० श्याम प्रसाद मुकर्जी के सभापतित्व में प्रारम्भ हुआ। पण्डाल नर नारियों से खचाखच भरा हुआ था। उपस्थिति का अनुमान ६०–७० हज़ार किया जाता है। स्वागत समिति के प्रधान मन्त्री चौ० देशराज जी ने वीर दामोदर सावरकर और दानवीर श्री सेठ जुगल किशोर बिडला आदि के सन्देश पढ़ कर सुनाये. तदन्तर श्री प्रधान जी की ओर से श्री स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वा० अच्युतानन्द जी, आचार्य रामदेव जी, प्रिन्सिपल बाल कृष्ण जी आदि आर्य नेताओं और श्री सत्यमूर्ति श्री महादेव देसाई श्री सीताराम रणजित् पण्डित आदि देशभक्तों के देहावसान पर दुःख और उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि सूचक, सुप्रसिद्ध आर्य सन्यासी स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी पर पंजाब सरकार द्वारा लगाये प्रतिबन्धों की निन्दा और सार्वदेशिक सभा की ओर से आर्य विद्या सभा की शीघ्र स्थापना विषयक प्रस्ताव उपस्थित किये गये। चतुर्थ इस दिन और आर्य सम्मेलन का मुख्य प्रस्ताव 'सत्यार्थप्रकाश' विषयक था जिसे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री प० गङ्गाप्रसाद जी एम० ए० रिटायर्ड चीफ़ जस्टिस ने उपस्थित किया और श्री प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति मन्त्री सार्वदेशिक आ० प्र० सभा, गोस्वामी गणेशदत्त जी प्रधान मन्त्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (लाहौर) बाबा विचित्र सिंह जी, राजगुरु पं० धुरेन्द्र जी शास्त्री, शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी, बाबा मिलखा सिंह जी श्री कुंवर चांद किरण जी श्री पं० ठाकुर दत्त जी शर्मा, कविराज हरनामदास जी, श्री स्वामी सत्यानन्द जी, प्रो० धर्मेन्द्र नाथजी शास्त्री एम० ए० श्रीमती अक्षय कुमारी देवी जी आदि ने बड़े ओजस्वी और स्फूर्तिदायक भाषणों द्वारा उसका समर्थन किया। प्रस्ताव सर्व सम्मति से 'सत्यार्थ प्रकाश अमर है' इत्यादि के नारों के बीच स्वीकृत हुआ। आर्य जनता का अपार अदम्य उत्साह दर्शनीय था।

तृतीय दिन (२२-३-४४)

प्रातः ९ से १०½ बजे तक यज्ञ ईश्वर प्रार्थना भजनादि के अनन्तर बिहार के सुप्रसिद्ध आर्य नेता, हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के पञ्चम सर्वाधिकारी स्वामी अभेदानन्द जी के सभापतित्व में बड़े पण्डाल में ऋषिबोधोत्सव बड़े समारोह से मनाया गया। सभापति जी के अतिरिक्त सर्व श्री स्वा० ब्रह्मानन्द जी, स्वा० ईश्वरानन्द जी, स्वामी सत्यानन्द जी, पं० मदन मोहन जी विद्या सागर वेदालङ्कार पं० धर्म देव जी विद्यावाचस्पति, श्रीमती सरला देवी जी शास्त्रिणी, श्रीमती लक्ष्मी देवी जी आचार्या इत्यादि के ऋषि दयानन्द के सन्देश विषयक उत्तम भाषण और श्री पं० सिद्ध गोपाल जी कवि रत्न, प० सत्यभूषण जी वेदालङ्कार, श्री गङ्गासहाय जी आदि की कविताएं हुईं। ११ से १ बजे तक विषय निर्धारिणी समिति का अधिवेशन छोटे पण्डाल में हुआ जिसमें सम्मेलनार्थ प्रस्तुत विषयों पर विचार होता रहा। १२ से २ बजे तक बड़े पण्डाल में डा० श्याम प्रसाद मुकर्जी के सभापतित्व में हिन्दू छात्र सङ्घ की ओर से हिन्दू छात्र सम्मेलन हुआ।

३ बजे से आर्य सम्मेलन का खुला अधिवेशन डा० मुकर्जी के सभापतित्व में हुआ जिस में सत्यार्थ प्रकाश निधि के लिये २ लाख रु० एकत्रित करना, समस्त भारत में सत्यार्थ प्रकाश दिवस मनाना, त्रैवार्षिक कार्य क्रम, अखण्ड भारत, जाति भेद निवारण इत्यादि विषयक अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुए। सत्यार्थ प्रकाश निधि विषयक प्रस्ताव श्री महात्मा नारायण स्वामी जी ने प्रस्तुत किया जिसका समर्थन कुंवर सुखलाल जी और पं० जियालाल जी ने किया। तात्कालिक अपील न होने पर भी जनता में इस विषयक जोश इतना उमड़ रहा था कि चारों ओर से रु० की घोषणा होने लगी। ४०००) वहीं नकद एकत्रित हो गया और लगभग १७५००० की प्रतिज्ञाएं आर्य-प्रतिनिधि सभाओं आर्य समाजों तथा आर्य सज्जनों व देवियों से प्राप्त हुईं जिन में से निम्नलिखित विशेष उल्लेखनीय हैं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब	५००००)
आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त	५००००)
आर्य प्रतिनिधि सभा राज स्थान	१५०००)
आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल व आसाम	१५०००)
आर्य कुमार सभा बड़ौदा	१००००)
आर्य समाज अजमेर	५०००)
श्री पं० कन्हैयालाल जी मिश्र द्वारा संग्रहणीय	५०००)
श्रीकृष्ण शर्मा जी द्वारा संग्रहणीय	५०००)

अखण्ड भारत विषयक प्रस्ताव बड़ी योग्यता से माननीय श्री घनश्यामसिंह जी स्पीकर सी. पी. ऐसम्बली ने उपस्थित किया जिसका बड़े ओजस्वी भाषणों द्वारा अनुमोदन पं० चन्द्रगुप्त जी वेदालंकार आदि वक्ताओं ने किया। डा० श्यामाप्रसाद जी का अन्तिम भाषण अत्यन्त ओजस्वी और स्फूर्तिदायक था जिसके मुख्यांश अन्यत्र दिये गये हैं। स्वागताध्यक्ष श्री ला० नारायणदत्त जी और प्रधान मन्त्री चौ० देशराज जीने बा० मिल्खासिंह जी आदि सब विभागों के अध्यक्षों मन्त्रियों और आर्य वीर दल के कार्यकर्ताओं आदि को धन्यवाद दिया तथा शान्तिपाठ के साथ आर्य सम्मेलन का अधिवेशन समाप्त हुआ। रात ८ बजे से श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम. ए. प्रधान संयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में आर्य प्रचारक सम्मेलन हुआ। सभापति जी के अत्युत्तम विचार पूर्ण भाषण के पश्चात् (जो अन्यत्र प्रकाशित किया गया है) श्री शिवचन्द्रजी ने प्रचार पद्धति विषयक प्रस्ताव प्रस्तुत किया और पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति पं० भीमसेन जी विद्यालंकार, पं० मदनमोहन जी वेदालंकार, पं० कन्हैयालाल जी आदि ने प्रचार विषयक अपने अनुभव तथा विचार प्रचारक महानुभावों और जनता के सन्मुख रक्खे।

इस प्रकार भगवान् की परम कृपा से आर्य सम्मेलन का यह पञ्चम अधिवेशन बड़ी शान और सफलता के साथ समाप्त हुआ जिसके लिए स्वागतसमिति के सब अधिकारी, सदस्य, कार्य कर्ता और आर्य वीर दलों के स्वयं सेवक जिन्होंने अपने सुयोग्य स० प्रधान सेनापति श्री ओंप्रकाश जी के नेतृत्व में बड़ा उत्तम प्रबन्ध रखने में सहायता दी सब धन्यवाद और बधाई के पात्र हैं।

स्वागताध्यक्ष ला० नारायणदत्त जी का वक्तव्य—

मैं सब हिन्दुओं और विशेषतः आर्यों को अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन की ऋतु की प्रतिकूलता होते हुएभी पूर्ण सफलता पर हार्दिक बधाई देता हूँ। भारत के सब भागोंसे जो प्रतिनिधि आये और उन्होंने सम्मेलन के प्रस्तावों में क्रियात्मक भाग लिया यह सब प्रतिक्रिया पूर्ण प्रवृत्तियों के विरोध करने विषयक आर्यों के देशभक्ति पूर्ण दृढ़ निश्चय और उत्साह को सूचित करता है। आर्य समाज ने सदा की भाँति अपनी सामूहिक शक्ति, संगठन और अनुशासन का शानदार प्रदर्शन किया है जो भारत में अनुपम है। मैं सब कार्यकर्ताओं और आर्य वीर दलों को जिन्होंने अपने कठिन परिश्रम द्वारा आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने में सहायता दी। हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

———

सम्पादकीय
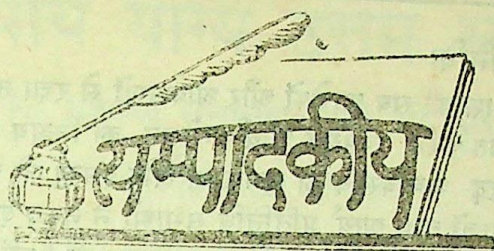
अ० भा० आर्य सम्मेलन की सफलता—

मङ्गलमय भगवान् की अपार कृपा से अखिल-भारतीय आर्य महासम्मेलन का पञ्चम अधिवेशन जो देहली में २०-२१-२२ फरवरी को किया गया उपस्थिति, उत्साह संगठन, विराट् जलूस और अनुशासन की दृष्टि से आशातीत सफलता के साथ समाप्त हुआ। सम्मेलन से ठीक २, ३ दिन पूर्व बड़े ज़ोर की वर्षा हुई यहां तक कि ओले भी पड़े जिससे पण्डाल कार्य पर्याप्त अस्त व्यस्त होगया किन्तु इस बाह्यरूपेण निराशा जनक परिस्थिति में भी आर्य कार्य कर्त्ताओं ने धैर्य का परित्याग न किया और भगवान् से आर्य सम्मेलन की सफलता के लिये हार्दिक प्रार्थना की। भक्तवत्सल भगवान् ने उस प्रार्थना को सुना और केवल सम्मेलन के ३ दिनों के लिये इन्द्रदेव को अपना कार्य बन्द रखने का आदेश दिया ताकि उसके सच्चे पुत्रों (आर्यः—ईश्वर पुत्रः—) का शुभ मनोरथ पूर्णतया सफल हो इस लिये इस सम्मेलन की सफलता के लिये सबसे अधिक धन्यवाद के पात्र सर्वशक्ति सम्पन्न मङ्गलमय भगवान् हैं जिनको हम वेदों के पवित्र शब्दों में त्वामभिप्रणोनुमो जेतारमपराजितम् ॥" इत्यादि द्वारा श्रद्धापूर्वक प्रणाम करते हैं। स्वागत समिति के समस्त सदस्यों, अधिकारियों और कार्य कर्त्ताओं के अतिरिक्त आर्य-वीर दलों के संचालक तथा स्वयं सेवक विशेष धन्यवाद के पात्र हैं जिनके सेवा भाव और अनुशासन ने आर्य सम्मेलन को सफल बनाने में विशेष कार्य किया। सनातन धर्म आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान मन्त्री गोस्वामी गणेशदत्त जी का स्फूर्ति दायक ओजस्वी भाषण जो चिरकाल तक श्रोताओं के कानों में गूंजता रहेगा और जैन समाज का सन्देश तथा बाबा विचित्र सिंह जी का भाषण इत्यादि इस बात के अत्यन्त स्पष्ट और अखंडनीय प्रमाण थे कि सब विचार शील व्यक्ति सत्यार्थप्रकाश की रक्षा के लिये कटिबद्ध हैं। हमें निश्चय है कि समस्त आर्यों के सत्यार्थ प्रकाश की प्राणपन से रक्षा विषयक दृढ़ निश्चय को दृष्टि में रखते हुए मुस्लिम लीगी सत्यार्थप्रकाश विरोधी अपने बेहूदा आन्दोलन को तत्काल बन्द कर देंगे तथा कोई भी सरकार सत्यार्थप्रकाश की ज़ब्ती जैसी असङ्गत मांग को स्पष्ट तया ठुकरा देगी। प्रसिद्ध मुस्लिम नेता ख्वाजा हसननिज़ामी ने इस मांग का अपने पत्र मुनादी' के २४-२-४४ के अङ्क में विरोध करके बुद्धिमत्ता का ही परिचय दिया है ॥

सत्यार्थ प्रकाश निधिः—

सत्यार्थप्रकाश की सब आक्षेपों और आक्रमणों से रक्षा तथा प्रचार के लिये २ लाख रु० एकत्रित करने विषयक आर्य सम्मेलन का निश्चय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था जो आर्यों के दृढ़ अध्यवसाय का सूचक था और इसका जो उत्तर आर्य सज्जनों देवियों आर्य समाजों तथा आर्य प्रतिनिधि सभाओं ने नकद दान तथा प्रतिज्ञाओं के रूप में दिया वह प्रशंसनीय तथा पूर्ण आशा जनक था। हमें दृढ़ निश्चय है कि आर्य जनता इस २ लाख की राशि की पूर्ति में बिलम्ब न करेगी और इस बात का प्रमाण देगी कि वह महर्षि दयानन्द की इस अमरकृति की रक्षार्थ वस्तुतः कितना अधिक संनद्ध है। इस विषय में प्रत्येक आर्य धर्म प्रेमी नर नारी को अपनी उदार सहायता तुरन्त भिजवानी चाहिये।

आर्य समाज स्थापना दिवस तथा त्रैवार्षिक कार्य क्रम—

इस वर्ष आर्य समाज स्थापना दिवस २५ मार्च को पड़ता है जिसे सर्वत्र बड़े उत्साह और प्रेम के साथ मनाना चाहिये। आर्य सम्मेलन में सर्व सम्मति से स्वीकृत त्रैवार्षिक कार्य क्रम विषयक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव की ओर आर्य जनता का ध्यान हम विशेष रूप से आकर्षित करना चाहते हैं जिसे दृष्टि में रख कर समस्त आर्य समाजों को अपना भविष्य कार्य क्रम निर्धारित करना चाहिये तथा अपनी शिरोमणि सभा (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) की वेद प्रचार निधि के लिये उसके आदेशानुसार अधिक से अधिक सहायता भिजवानी चाहिये जिस से प्रचार कार्य का अधिक विस्तार किया जा सके।

स्वर्गीय राष्ट्र माता के प्रति श्रद्धाञ्जलि—

पूज्यपाद महात्मा गान्धी जी की अनुरूप सहधर्मिणी, त्याग तप देशभक्ति और पातिव्रत धर्म की सजीवमूर्ति राष्ट्र माता श्रीमती कस्तूरी बाई जी के गत २२ फ़र्वरी की रात को नजरबन्दी की अवस्था में देहावसान का समाचार सुनकर किसको दुःख न हुआ होगा? हम दिवंगत पवित्र आत्मा के प्रति उनकी उज्वल देशभक्ति, सादगी और तपस्या आदि गुणों के लिये सादर श्रद्धाञ्जलि अर्पण करते हैं। वे आदर्श भारतीय देवी और माता थीं। भगवान् उनके पवित्र आदर्श पर चलने का समस्त महिलाओं को सामर्थ्य प्रदान करें। राष्ट्र माता का जेल में देहावसान सरकार के लिये घोर कलङ्क है।

आर्य सम्मेलनाङ्क—

हमें खेद है कि काग़ज की दुर्लभता तथा कठिनाई आदि के कारण हम सम्मेलन विषयक वृत्तान्त को जितने विस्तृत और पूर्ण रूप में देना चाहते थे इस अङ्क में नहीं दे सके। अवशिष्ट वृत्तान्त, दान सूची, आयव्यय लेखा, सम्मेलन के संस्मरण आदि अगले अङ्क में प्रकाशित कर दिये जाएँगे। ध० दे०

श्री पं० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा "चन्द्र प्रिण्टिङ्ग प्रेस", श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली में मुद्रित।

Regd. No. L. 2121:

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की उत्तमोत्तम पुस्तकें

INDIA POSTAGE 2A

(४) श्री मुख्याधिष्ठाता जी,
गुरुकुल कांगड़ी,
जि० सहारनपुर